हमारे संस्कार गीत

सग्रह

श्रीमती राजरानी वर्मा

सपादक

श्रीकृष्ण दास

मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रकाशक :
मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

मूल्य
सात रुपये, पचास नये पैसे

मुद्रक .
वीरेन्द्रनाथ घोष,
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

लोकगीतों के प्रथम उद्धारकर्ता

एव

उन्नायक

स्वर्गीय रामनरेश त्रिपाठी

की पुण्य स्मृति मे

चुटकी भर सेन्हुरा के कारन बाबा,
होय गयी कन्या पराई !

× × ×

सासु तो है मेरी सरसुति की धारा,
ससुरु सूरज की जोत !

× × ×

सरग तरैया केन गिनहुइँ माता,
दुधवा उरिन कैसे होउँ !

भूमिका

'हमारे संस्कार गीत' श्रीमती राजरानी वर्मा द्वारा सग्रहीत विभिन्न सस्कारो से सम्बन्धित लोकगीतो का अनूठा एव अभिनव सग्रह है। श्रीमती वर्मा ने गीतों का चुनाव करते समय उनके सौन्दर्य, रस-परिपाक एव सगीतात्मकता का विशेष ध्यान रखा है। ये गीत विभिन्न अवसरो पर समवेत रूप मे गाये जाते हैं। इनके कारण उन सस्कारो की पवित्रता और महत्ता को चार चॉद लग जाते हैं। ये गीत नारी हृदय की उपज हैं, इसमे कोई सन्देह नही। इसलिये इनमे रस है, भाव-प्रवणता है, करुणा है, विचारोत्तेजकता है, आह्लादित एव विभोर कर देने की अद्भुत क्षमता है। सारे के सारे गीत एक विचित्र प्रकार की रसमयता से ओतप्रोत हैं। अतः पाठक को इन गीतो को पढने और इनका रस लेने मे एक नैसर्गिक सुख और आनन्द प्राप्त होता है।

हमारे समाज मे, अगणित आधुनिक प्रवृत्तियो के आ जाने के बावजूद, पुराने सस्कारों के प्रति मोह एव ममता अब भी है। इन सस्कारों के मूल्य अथवा महत्व से इन्कार नही किया जा सकता। वैसे तो हमे लगभग अड़तालीस सस्कारो का पता चलता है और इनकी चर्चा अनेक रूपो मे मिलती है, परन्तु इनमे मुख्य सोलह सस्कार ही हमारे समाज मे प्रतिष्ठित हैं। ये सस्कार है--(१) गर्भाधान, (२) पुसवन, (३) सीमन्तोन्नयन, (४) जात कर्म, (५) नामकरण, (६) निष्क्रमण, (७) अन्नप्राशन, (८) चूडाकरण, (९) कर्ण छेदन, (१०) विद्यारम्भ, (११) उपनयन, (१२) वेदारम्भ, (१३) केशान्त, (१४) समावर्तन, (१५) विवाह, और (१६) अन्त्येष्टि।

हारीत स्मृति के अनुसार दस सस्कार होते हैं। यथा-(१) विवाह, (२) गर्भाधान, (३) पुसवन, (४) सीमन्तोन्नयन, (५) जात कर्म, (६) नामकरण, (७) अन्नप्राशन, (८) चूडाकरण, (९) उपनयन और (१०) समावर्तन। याज्ञवल्क्य के अनुसार आठ सस्कार होते हैं। यथा-(१) गर्भाधान, (२) पुसवन, (३) फल स्थापन, (४) जात कर्म, (५) नामकरण, (६) प्राशन, (७) चूडाकरण और (८) स्नापन।

यदि इन समस्त सस्कारों का वर्गीकरण किया जाय तो इन्हे पाँच वर्गों मे इस प्रकार विभक्त किया जा सकता है—(१) प्राग्जन्म सस्कार, (२) बाल्यावस्था के सस्कार, (३) शैक्षणिक सस्कार, (४) विवाह सस्कार, और (५) अन्त्येष्ठि सस्कार।

इन मुख्य सस्कारों के साथ-साथ अगणित उप-सस्कार भी प्रचलित हो गये और वे किसी न किसी रूप मे हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में पाये जाते हैं। इनकी क्षेत्रीय विशेषता होती है, रग होता है। इस प्रकार जहाँ एक ओर सार्वदेशिक रूप से इन सस्कारो मे समानता पायी जाती है, वहीं स्थानीय विशेषताओ के जुड़ जाने तथा अनेक भेदो-उपभेदों के सम्मिलित हो जाने के कारण इनमे बहुरगीपन आ जाता है। परन्तु इन सब मे समान रूप से जो बात सर्वत्र पायी जाती है, वह है उनकी उदात्तता, मगलमयता, सुरुचि एव श्रीसम्पन्नता।

इन सस्कारो मे सबसे अधिक हर्ष एव प्रसन्नता के कारण होत हैं विवाह और पुत्र-जन्म से सम्बन्धित सस्कार। सबसे अधिक कारुणिक होता है बेटी की बिदाई का अवसर। इन अवसरों पर जो गीत गाये जाते हैं, उनमे जैसी रस-सृष्टि होती है, वह मात्र अनुभव-साध्य है, वह वर्णनातीत है।

बेटा विवाह के लिये चलने को उद्यत है। उस समय माँ कहती है—

तू त चलेउ पूता गौरी बिआहन,
दुधवा कै मोल कइ लेहु रे।

बेटा उत्तर देता है—

सरग तरइया माइ कब लौ गिनबइ,
दुधवा कै मोल कइसे होइ रे!

पुत्र-जन्म के हर्षोल्लास के वातावरण मे जो गीत गाये जाते हैं, वे कितने सरस, कितने सार्थक होते हैं—

पूछई सासु बडइतिनि होरिल बड़ सुन्दर हो,
बहुअरि, न जानी माई के सॅवारे त न जानी कोख गुना हो।

बहू जवाब देती—

न तौ माई के सॅवारे से न तौ कोखि गुना हो,
सासु, पिया मोर तपव्रत कीन्हे त ओनके धरम गुना हो!

कन्या का विवाह हमारे समाज में पवित्रतम, महत्तम एव सर्वाधिक करुण सस्कार माना जाता है–

नीर चुवत बाबा, नीर चुवत है,
नीर चुवत आधी रात हो।
अइसने बबइया के नीद परतु कइसे,
जेहि घर बेटी कुआँरि हो।

बाबा को नींद कहाँ पडती है ? वह बेटी का ब्याह रचाने के लिये अपना सब कुछ दॉव पर लगा देता है। बेटी का ब्याह होता है। वह माँ बाप की गोद छोडकर, अपना घर-बार छोडकर, अपनी सखी सहेलियों को छोडकर, सर्वथा अपरिचित देश में, अपरिचित लोगों के बीच रहने के लिये चली जाती है। ऐसी कन्या के हृदय मे उस समय क्या-क्या होता होगा, उसके दिल पर क्या-क्या गुजरती होगी ?

बेटी ससुराल जा रही है। माँ दरवाजे तक पहुँचा कर वही से खडी बेटी को बिसूर रही है। बाप गाँव के बाहर तक बेटी को पहुँचाने जाता है। रास्ते में बेटी बाप को सहेजती है–

बाबा निमिया क पेड़ जिनि काटेउ
निमिया चिरैया बसेर,
बलैया लेऊँ बीरन।
बाबा, बिटियन जिनि केउ दुख देय
बिटिया चिरैया की नाईं,
बलैया लेऊँ बीरन।
सब रे चिरैया उड़ि जइहै
रहि जइहै निमिया अकेलि,
बलैया लेऊँ बीरन।
सब रे बिटियवा जइहै सासुर
रहि जइहै माई अकेलि,
बलैया लेऊँ बीरन।

इस प्रकार के मर्म पर चोट करने वाले, हृदय मे टीस पैदा करने वाले, पलकों को भिगोने वाले गीतों का बहुत बडा कोश हमारे लोक साहित्य मे भरा पडा है। कही कहीं तो ये गीत इतने उत्कृष्ट और प्रभावशाली हो गये हैं कि हमारे रससिद्ध कवीश्वर भी उनसे ईर्ष्या कर सकते हैं। जीवन का कोई अग नही है, भावना का कोई स्तर नहीं है, कल्पना का कोई सोपान नही है जिसे इन गीतो ने न छुआ हो। इस सकलन मे सग्रहीत गीत इसी प्रोज्ज्वल परम्परा की कडी हैं। अब तक ये गीत बूटी दादी के गले मे बसे रहे हैं। अब ये मुद्रित होकर स्नेही पाठको के सामने आ रहे हैं। ये गीत सारगर्भित हैं, इनमे गार्हस्थ्य-जीवन को पवित्र करने और सुन्दर बनाने की अदभुत क्षमता है।

प्रस्तुत सग्रह मे जो गीत सॅजोये गये हैं वे कितने आकर्षक, मोहक, प्रेरक और सार्थक हैं! एक-एक गीत हीरे मोती की तरह चमकदार, मूल्यवान् हैं। श्रीमती राजरानी वर्मा ने ऐसा सग्रह प्रस्तुत करके हिन्दी साहित्य के कोश को समृद्ध बनाया है और मुद्रित लोक साहित्य की शोभा बढायी है। ये गीत हमको हॅसाते हैं, रुलाते हैं, आन्दोलित और करुणा-विगलित करते हैं, सोचने-विचारने, याद करने-बिसूरने के लिये विवश कर देते हैं। जो सहृदय है, जो संवेगशील है वह इन गीतो से प्रभावित होगा, इनके रस मे डूब जायेगा, विभोर हो जायेगा।

—श्रीकृष्ण दास

अपनी बात

'हमारे संस्कार गीत' नाम से विभिन्न सस्कारो पर गाये जाने वाले गीतो का यह सग्रह अब प्रकाशित हो रहा है। इससे पहिले लोक गीतो के अनेक सग्रह एव सकलन प्रकाशित हो चुके है। परन्तु जहाँ तक मेरी जानकारी है, अपने प्रकार का यह सर्वथा नवीन प्रयास है। मुझे लोक गीतो से रुचि है, उन्हे सग्रहीत करने की मेरी बान पुरानी है और उन्हे गाने का भी अभ्यास है। स्वर्गीया श्रीमती कमला नेहरू की कृपा से मुझे राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेने का अवसर मिला। इसके साथ ही गॉव-गॉव घूमने का भी सुयोग हुआ। तभी मुझे इन गीतों का चस्का लगा। और, अब तो ये गीत मेरे मन-प्राण के अविभाज्य अग बन चुके है। मेरे पास इन गीतो का अच्छा खासा एक खजाना सा इकट्ठा हो गया है। उसी मे से चुन कर ये गीत इस सग्रह मे सॅजोये गये हैं।

यह सही है कि मेरे पास लोक गीतो की एक निधि है। परन्तु यह भी सही है कि मैं यह सग्रह तैयार न कर सकती यदि मेरे स्वजन श्री श्रीकृष्ण दास पीछे पड कर यह काम मुझसे न करवा लेते। मेरी बेटियॉ मीरा और रूपरानी, बहू गिरिजेश नन्दिनी और सरोज और मेरे स्वजन डाक्टर लक्ष्मण दास, श्री परमानन्द, श्री शिवशकर मिश्र आदि बहुत याद आ रहे है। इन्होने नाना रूपो मे मेरी सहायता की है। उनको मुझसे ही नही, इन गीतो से भी मोह है। और, मेरी ही तरह उनको भी यह लालसा थी कि इस सग्रह का प्रकाशन सुचारु रूप से हो। मुझे आशा है कि मेरी ही तरह उनको भी इस सग्रह के प्रकाशन से सतोष होगा। श्रीमती मालती तिवारी ने पाठशोध मे मेरी सहयता की है और श्री सूर्यनारायण ने गीतो का परिचयात्मक अनुवाद किया है। मै इन दोनो लोकगीतानुरागी स्वजनो को आशीर्वाद देती हूँ कि लोक-साहित्य एवं लोक-गीतो के प्रति इनका अनुराग उत्तरोत्तर बढता जाय।

इस सग्रह के पहिले 'हमारी लोक कथाये' नाम से लोक कथाओ का मेरा एक सग्रह प्रकाशित हो चुका है और उसे लोकप्रियता भी प्राप्त हुई है। अब यह सग्रह पाठको की सेवा मे उपस्थित हो रहा है। मुझे आशा है कि मेरे इस सामान्य से प्रयास को भी प्रोत्साहन मिलेगा और लोक-गीतों के प्रति आस्था एवं स्नेह रखने वाले सुधीजन इसे अवश्य एक बार पढने की कृपा

करेंगे। मेरा आग्रह है कि हमारी बहू-बेटियाँ अवश्य ही इस संग्रह के गीतों को पढे और इनके रस एव सौंदर्य का आनन्द लें। इनसे उन्हे प्रेरणा मिलेगी, अपने जीवन को सजाने-सँवारने का एक साधन मिलेगा। आधुनिक सभ्यता की तेज लू से इस समय हमारे पुराने सस्कारगत जीवन-मान झुलसते जा रहे हैं। जैसे हमारे सास्कृतिक जीवन को ग्रहण सा लग गया है। परन्तु मुझे विश्वास है कि यह ग्रहण कटेगा और हमारे सास्कृतिक जीवन का पूर्ण चन्द्र अपनी समस्त कलाओं के साथ निखरेगा। हमारी पीढी का जीवन तो विदेशी सत्ता एव उसके अशुभ प्रभावो से जूझने मे ही कट गया। मगर हमारी वर्तमान और आगामी पीढियो को निरभ्र आकाश के तले, मुक्त वातावरण मे, स्वस्थ वायुमडल मे जीने, फलने-फूलने का अवसर मिलेगा। ये गीत उनके जीवन को अधिक मधुमय, अधिक मोहक, अधिक सार्थक बनायेगे—ऐसा मेरा विश्वास है।

जब 'हमारी लोक कथायें' नाम से लोक कथाओ का मेरा प्रथम सग्रह प्रकाशित हुआ था तो श्री रामनरेश त्रिपाठी ने अयाचित ही मुझे अपना आशीर्वाद दिया था और अपनी प्रसन्नता प्रकट की थी। वह इस सग्रह को भी शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित देखना चाहते थ। परन्तु ऐसा नही हो सका। अब वह नहीं हैं। परन्तु इस सग्रह को उनका आशीर्वाद तो मिल ही चुका था।

मुझे लगता है कि इस सग्रह को देखकर अन्य लोकसाहित्य प्रेमी विद्वान भी इस ओर प्रेरित होंगे और निकट-भविष्य मे ही इस प्रकार के अनेक सग्रह प्रकाश मे आयेंगे और पाठकों का मनोरजन करेंगे।

इसी विश्वास के साथ मै यह सग्रह आपकी सेवा मे प्रस्तुत कर रही हूँ।

प्रयाग
होलिकोत्सव
२०-३-१९६२

—राजरानी वर्मा

विषयानुक्रम

	विषय	पृष्ठ संख्या
१	महारानी	१७
२	गोद भराई	३५
३	जच्चाखाने का गीत	५५
४	शिशु-जन्म	७३
५	मधु चटावन	७६
६	सरिया	८०
७	पीपर	८६
८	छठिया की रात	६४
६	मनरजना	६५
१०	गज मोहना	६७
११	चुनरी	१०५
१२	पालना	१०७
१३	झुनझुना	१०६
१४	बधइया	१०६
१५	अन्नप्राशन	१११
१६	सोहर	११२
१७	लोरी	१२६
१८	मुण्डन	१२६
१६	झालर	१३५
२०	बरुआ	१४३
२१	जनेऊ	१४७
२२	ब्याह के समय के स्तुति-गीत	१४६
२३	चौक का गीत	१५०
२४	नेवता	१ ४
२५	माटी खनाई	१५६
२६	कलसा	१५७
२७	सिलपोहना	१५६
२८	नहान	१६

विषय	पृष्ठ संख्या
२६ नेछू नहान	१६१
३०. बेटे का ब्याह	१६२
३१ तिलक	१७०
३२ बडी घोडी	१७१
३३ बन्ना	१८१
३४ मौरी	१८६
३५ दूध का मोल	१६१
३६ बेटी का ब्याह	१६४
३७ मोनी	२०५
३८ जोग	२०६
३६ टोना	२११
४० सुहाग	२१३
४१ अगवानी	२१८
४२ आरती	२२३
४३ बन्नी	२२३
४४ पाणिग्रहण	२२८
४५ सिन्दूरदान	२३२
४६ भाँवर	२३३
४७ कोहबर	२३५
४८ जेवनार	२३६
४६ बेटी की बिदाई	२४१
५० महारानी का गीत (बिदाई के बाद)	२४६
५१ गीतों की प्रथम पक्ति	२४६

हमारे संस्कार गीत

महारानी

तुम मेरी मन मोहनि अबला,
तुम मेरो मन मोहे हो माय !

तुमरी सरन मैया डगरा चलतु है,
घर आँगन न सोहाय हो माय।
मचिया बैठी मै माता छोड़ेउँ,
लठिया ठेगत छोडेउँ बाप हो माय।

कँवरे लागि मँइ धनियाँ छोडेउँ,
गोद झडुलवा पूत हो माय।
राम रसोइया मँइ भाउज छोडउँ,
तिलक सजोवत बीरन हो माय।

लोग कुटुम परवरिया छोडेउँ,
रँहसत तोरे जग आयेउँ हो माय।
तुम मेरी मन मोहनि अबला,
तुम मेरो मन मोहेव हो माय।

खोलो केवडिया, दरस देउ अबला,
जात्री ठाढ दुआर हो माय।
जो मोरी अबला के अक्षत चढावै,
सो रे मोतिन फल पावइ हो माय।

जो मोरी अबला के सेंदुरा चढावै,
जनम जनम अहिबात हो माय।
जो मोरी अबला के नरियर चढावै,
सो रे पूत फल पावइ हो माय।

तुम मेरो मन मोहनि अबला,
तुम मेरो मन मोहेउ हो माय ।

दरसन से प्रसन्न यह अबला,
देउ विदा घर जाऊँ हो माय ।
तुमका नेवाजउँ, तुमरे जने का नेवाजउँ,
तुम हम पर दहिन-दयाल हो माय ।

तुम मेरो मन मोहनि अबला,
तुम मेरो मन मोहेउ हो माय ।

माँ, तुमने मेरे मन को मोहित कर लिया है । तुम्हारी शरण मे, मै तुम्हारी राह पर आ रहा हूँ । मुझे अब अपना घर आँगन अच्छा नही लगता ।

मैने मचिया पर बैठी हुई अपनी माँ छोड़ी, लाठी टेकता हुआ पिता, दरवाजे के बगल मे खड़ी हुई पत्नी, गोद मे खेलता हुआ दुलारा पुत्र, रसोई बनाती हुई भाभी और तिलक सजाता हुआ भाई छोड़ा । स्वजन सम्बन्धी और कुटुम्बियों का परित्याग किया । सारे ससार का मोह त्याग कर प्रसन्नचित्त मै तुम्हारी शरण मे आया हूँ ।

माँ, किवाड़ खोलो । मुझे अपना दर्शन दो । तुम्हारे मन्दिर तक यात्रा करके आया तुम्हारा पुजारी द्वार पर खड़ा है । जो मेरी माता को अक्षत चढ़ाता है, वह मोतियो का वरदान प्राप्त करता है । जो स्त्री सिंदूर चढ़ाती है, उसका सुहाग अचल हो जाता है । जो नारियल चढ़ाती है, उसे पुत्र फल प्राप्त होता है ।

माँ, प्रसन्नता पूर्वक अपना दर्शन देकर मुझे विदा करो । मै तुम्हारी पूजा-अर्चना करता हूँ । तुम्हारे भक्तो की आराधना करता हूँ । तुम मेरी रक्षा करो, मुझ पर दया करो ।

(२)

जग तारनि माँ, कुल तारनि माँ,
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को ।

मैया के दुआरे एक हरिअर पीपर,
हहर-हहर हहराये हो माय ।
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को ॥

मैया के दुआरे एक गगा बहत है,
लहर-लहर लहराये हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को ।।

माया के दुआरे एक बजना बजत है,
झनन-झनन झहनाय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को ।।

माया के दुआरे एक होम होत है,
महर-महर मँहराय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरो दरसन को ।।

माया के दुआरे एक कोढिया पुकारै,
देउ काया, घर जाय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरो दरसन को ।।

माया के दुआरे एक अँधरा पुकारै,
देहु नयन, घर जाय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरो दरसन को ।।

माया के दुआरे एक बँझिनी पुकारै,
देउ बालक, घर जाय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरो दरसन को ।।

अधे को आँखी मैया, कोढी को काया,
बँझिनी बालक खेलावै हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को ।।

परिवार और समस्त ससार को पार उतारने वाली माँ, मेरा मन तुम्हारे दर्शन के लिये लालायित है।

माँ के दरवाजे पर एक हरा पीपल है। उसकी पत्तियाँ हवा से हहरा रही हैं।

माँ के दरवाजे के नीचे से गगा जी बहती है और उनका निर्मल जल द्वार तक लहरा रहा है।

माँ के दरवाजे पर झनन-झनन झकार करता हुआ एक बाजा बज रहा है।

माँ के दरवाजे पर होम हो रहा है। सारा वातावरण उसकी महक से सुगन्धित हो रहा है।

माँ के दरवाजे पर एक कोढ़ी फरियाद कर रहा है। माँ, उसे नया शरीर दो, ताकि वह प्रसन्न होकर घर लौटे।

माँ के दरवाजे पर एक अन्धा पुकार रहा है। माँ, उसे नेत्र-दान दो, ताकि वह प्रसन्न मन अपने घर लौटे।

माँ के द्वार पर एक बन्ध्या स्त्री पुकार रही है। माँ, उसे पुत्र-प्राप्ति का वरदान दो।

माँ की कृपा से अन्धो को नेत्र, कोढ़ियो को नयी काया और बन्ध्या स्त्रियों को पुत्र प्राप्त होते है।

(३)

महरानी वरदानी कि जै-जै, विन्ध्याचल रानी।

अरी माया, पहाड के ऊपर जहाँ मदिर बना खासा,
उहाँ जग तारन का बासा।
मोरी महरानी बरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी।

अरी माया, चन्दन कौ चौकी,
चौकी में जडे हीरा, चाभती पानो का बीडा।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी।

अरी माया, तरे बहे गगा का निर्मल पानी,
नहाय मोरी आदि-जोति रानी।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी।

अरी माया इसर की कुइयाँ,
कुइयाँ में सरग पानी, भरे मोरी आदि-जोति रानी।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी।

अरी माया के माखन कैसा, माखन में मिला पानी,
जाकी महिमा तीन लोक जानी ।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी ।

अरी माया राम घर आये,
कर नौमी का असनान, धरि अष्ठभुजी का ध्यान ।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल की रानी ।

वरदायिनी विन्ध्याचल महारानी की जय हो ।

पर्वत की चोटी पर सुन्दर मन्दिर मे महारानी का वास है । हीरो से जड़ी हुई चन्दन की चौकी पर आप आसीन है । मुँह मे पान शोभा दे रहा है ।

नीचे गगा का निर्मल जल बह रहा है । आदि ज्योति महारानी उसी मे स्नान करती है ।

ईश्वर के कुँये मे स्वर्ग का पानी है । उसे आदि-ज्योति रानी भरती है ।

वह पानी वैसा ही स्वादिष्ट है, जैसे मक्खन हो, उसकी महिमा तीनों लोक मे फैली हुई है ।

रामचन्द्र भी नौमी का स्नान करके ही अयोध्या लौटे थे । उन्होने भी अष्टभुजा भवानी का ध्यान धारण किया था ।

(भगवान् रामचन्द्र ने रावण-वध मे आदि-शक्ति काली का ही सहारा लिया था । यदि माँ का प्रसाद और सक्रिय सहयोग उन्हे प्राप्त न होता तो उनको विजय प्राप्त करने मे कठिनाई होती । दुर्गा-पूजा की परम्परा मे षष्टी, सप्तमी, अष्टमी और नवमी का अधिक महत्व है । जिसमे नवमी के दिन देवी-पूजन की अतिशय महत्ता मानी जाती है । इस गीत मे इसी परम्परा का हवाला दिया है और बताया गया है कि रामचन्द्र भी नवमी पूजन के कारण विजयी हुये और विजयादशमी के उपरान्त अयोध्या लौटे ।)

(४)

बाँका तुम्हारा नाम हो, बाँकी मोरी अबला !

काहे का मइया भवन बना है,
काहे धजा फहराय हो ।
बाँकी मोरी अबला !

ककड-पथर मइया भवन बने हैं,
लाल धजा फहराय हो।
बाकी मोरी अबला !

काह ओढनियाँ काह घघरिया,
काह सेदूर भरे माँग हो ?
बाँकी मोरी अबला !

लाल घँघरिया मइया, लाल ओढिनया,
लाल सेन्दूर भरे माँग हो।
बाकी मोरी अबला !

खोलो केवडिया, दरस देउ अबला,
जात्री खडे है दुआर ।
बाकी मोरी अबला !

काह देखि मइया मगन भई हैं,
काह देखि मुसुकानी ?
बाँकी मोरी अबला !

अन धन देखि मइया मगन भई हैं,
पूत देखि मुसुकानी ।
बाँकी मोरी अबला !

माँ, तुम्हारा सुन्दर नाम है। तुम्हारे मन्दिर के सामने पुत्र की कामना लिये पुजारिन रमणी खड़ी है।

"किस चीज से माँ का मन्दिर बना है? उस पर कैसी ध्वजा फहरा रही है?"

"ककड़-पत्थर से माँ का मन्दिर बना है। उस पर लाल रग की ध्वजा फहरा रही है।"

"किस रग का माँ ने लहगा पहन रखा है और किस रग की ओढ़नी ओढ़ रखी है? किस प्रकार माँ का माँग भरा है?"

"माँ ने लाल रंग का लँहगा और लाल रंग की ओढ़नी धारण की है। माँग मे भी लाल सिन्दूर सुशोभित है।"

पुजारिन विनती करती है, "माँ, किवाड़ खोलकर दर्शन दो। यात्रीगण तुम्हारे द्वार पर खड़े है।"

"क्या देखकर माँ प्रसन्न हुई? और क्या देखकर मुस्कुरा पड़ी?"

"अन्न-धन देखकर माँ प्रसन्न हुई और पुजारिन की गोद मे पुत्र देखकर मुस्कुरा पड़ीं!"

(माँ के वरदान से पुत्र-प्राप्ति की कामना पूरी हो जाने के बाद पुजारिन पुत्र लेकर दर्शन के लिए जाती है।)

(५)

मैं कौने बहाने जाऊँ, मइया तोरे दरसन को।

हाँथे डलइया फूल की,
हाँ, मलिया बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

हाथे बतासा चीनी का,
हाँ, हलुवइया बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

हाथे गोला नारियल का,
पसरिया बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

हाथे दहेडी दही की,
ग्वालिनियाँ बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

गोदी होरिलवा आपका,
दरसनवा बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

हाथे में नैवज लपसी,
पुजवइया बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

मैं कौने बहाने जाऊँ, मइया तोरे दरसन को!

माँ, किस रूप मे, किस ढङ्ग से, किस वेश मे मै तुम्हारे दर्शन के लिये जाऊँ?

माँ, हाथ मे फूल की डाली लेकर माली के वेश मे, बताशा लेकर हलवाई के वेश मे, ध्वजा और नारियल लेकर पसारी के वेश मे, दही की दहेड़ी लेकर ग्वालिन के वेश मे, गोद मे पुत्र और साथ मे पूरी चना और लपसी लेकर पुजारी के वेश मे मैं तुम्हारे दर्शन के लिये जाऊँ?

(देवी के मन्दिर मे दर्शन करने के लिये भक्त जनता किन-किन रूपो मे जाती है, इसी का एक चित्र इस गीत मे दिया गया है।)

(६)

नीमिया की डाली मइया पडा है हिंडोलवा,
कि लम्बे-लम्बे पेग झूले मोरी हो माय।

झूलत-झूलत मइया होइ गईं पियासी,
कि ढूढे लाँगी मलिनी दुआर हो ना!

बाहर बाडी कि भीतर हो मलिनिया,
कि बूँद एक पनिया पिआव हो ना।

कइसे के पनिया पियावउँ मोरी जननी,
कि मोरे गोदी बलका तुम्हार हो ना।

बलका सोवावो मालिन चदन खटोलना,
कि बूंद एक पनिया पिआव हो ना।

एक हाथ लेउ मालिन सोने के घइलवा,
कि एक हाथ रेशमे का डोर हो ना।

टूटी फूटि जइहै मइया चन्दन खटोलना,
कि भुइयाँ लोटहिं बलक तोहार हो ना।

एक हाथ लीहिन मालिन गोदी क बलकवा,
कि दूसर हाथे गगा जल पनिया हो ना।

पानी क पियासल पानी पियो मोरी जननी,
कि भरि मुख देउ असीस हो ना।

जैसे जैसे मालिन मोहि जुडवायु हो,
कि वैसे वैसे धिया पतोहिया जुडॉय हो ना।

धिया बाडी ससुरे पतोहिया अपनी नैहर,
कि मइया केहि लेखे देइल असीस हो ना।

धिया बाढे ससुरे, पतोहिया अपनी नैहर,
कि मालिन जुगे जुगे बाढे तोर सोहाग हो ना।

जइसे तू मोरी मालिन हमइ जुडवाइउ,
वइसे तोरी कोखिया जुडाय हो ना।

नीम की डाली पर झूला पड़ा है। माँ लम्बी-लम्बी पेंगे भरती हुई झूल रही थीं। जब झूलते-झूलते उन्हे प्यास लग गई तो मालिन के दरवाजे पर जाकर उससे पानी माँगा।

मालिन ने उत्तर दिया—"माँ, कैसे आपको पानी पिलाऊँ? गोद मे मै आपका दिया हुआ पुत्र लिये हूँ।"

माँ ने कहा—"मालिन, पुत्र को चन्दन के खटोले पर सुला दो। रेशम की डोरी से सोने के घड़े मे पानी भर कर मुझे पिलाओ। माँ के वरदान से प्राप्त पुत्र को मालिन का मातृत्व अपने से अलग करने को तैयार न हो सका। अत. मालिन ने कहा—"माँ, चन्दन का खटोला टूट फूट जायगा और आप का पुत्र पृथ्वी पर लोटने लगेगा।" यह कह कर के मालिन ने एक हाथ मे पुत्र को ले लिया और दूसरे हाथ मे सोने के घडे मे गंगा जल ले कर देवी से बोली—"मा, पानी पिओ और प्रसन्न हो कर आशीर्वाद दो।"

पानी पीकर देवी ने आशीर्वाद दिया—"मालिन, जिस प्रकार तुमने मुझे शीतल किया है उसी प्रकार तुम्हारी पतोह और बेटी सुखी हो।" मालिन ने कहा माँ—"बेटी तो अपने ससुराल मे है और पतोहू तो अभी अपने मैके मे ही होगी। आप का यह आशीर्वाद यहा किसके लिये है। जल तो हमने पिलाया है।"

देवी ने और स्पष्ट कर कहा,—"तुम्हारी बेटी अपने ससुराल मे फले फूले और पतोह अपने मैके मे बढे और खिले। मालिन तुम्हारा सोहाग युग युग बना रहे। जैसे तुमने मुझे शीतल किया है उसी प्रकार तुम्हारी कोख भी शीतल हो। (तुम्हारी कुल परम्परा चलती रहे और सोहाग युग युग बना रहे इसी मे तुम्हारे पति की अमरता है।)

(७)

आजु मोरी आनन्दी आनन्द करो।

आदि भवानी दुर्गा रानी,
तीन लोक जग जानी।
मेरी भोली अम्बे, तीन लोक जग जानी,
आजु मोरी आनन्दी आनन्द करो।

सिंह चढी माया गरजत आवें,
लाल लगूर अगुवानी।
मेरी भोली अम्बे, लाल लँगूर अगुवानी,
आजु मोरी आनन्दी आनन्द करो।

ठाढे दशरथ जी अरज करत हैं,
उनहूं की मनसा पूरन करो।
मोरी भोली अम्बे उनहूं की मनसा पूरन करो,
आजु मोरी आनन्दी आनन्द करो।

तीनों लोको मे प्रतिष्ठित, दुर्गा भवानी, आज तुम आनन्द करो!

सिंह के वाहन पर गर्जन करती हुई माँ आ रही है। उनके आगे-आगे लाल ध्वजा फहरा रही है।

माँ, राजा दशरथ तुम्हारे सामने खड़े होकर प्रार्थना कर रहे है। उनकी भी मनोकामना पूर्ण करो।

राजा दशरथ प्रत्येक उस व्यक्ति के प्रतीक है जो पुत्र की कामना लेकर माता के मन्दिर तक जाता है। माता विन्ध्येश्वरी उसकी मनोकामना पूरी कर देती है।

(गीत गाते समय परिवार के सभी लोगो का नाम दशरथ के स्थान पर बारी-बारी से लिया जाता है।)

(८)

लटकि रहे फुन्दना भवन में।

राजा दशरथ जी होम करत है,
देवी के अगना भवन में।
रानी कौशल्या देई पूजन बैठी,
गोद लिए ललना भवन में।

राजा रामचन्द्र होम करत है,
देवी के अगना भवन में।
रानी सीतल देई पूजन बैठी,
गोद लिये ललना भवन में।

लटकि रहे फुन्दना भवन में।

देवी के मन्दिर मे झालर लटक रहे है, फूलों के गुच्छे लटक रहे हैं।

मन्दिर के आँगन मे राजा दशरथ होम कर रहे है। गोद में पुत्र लेकर कौशल्या माता पूजा कर रही है।

राजा रामचन्द्र देवी के आँगन मे हवन कर रहे हैं। रानी सीता गोद में पुत्र लेकर उनकी पूजा कर रही है।

(पुत्र-प्राप्ति के लिए देवी की पूजा की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। प्रस्तुत गीत मे दशरथ और कौशल्या तथा उनके बाद राम और सीता द्वारा देवी-पूजन की चर्चा करके इसी परम्परा की ओर सकेत किया गया है।)

(६)

माता जी को ध्यान मोरे मन ।
मइया जी को ध्यान मोरे मन ॥

सुरहिन गइया का गोबरा मगाओ,
नित उठि अम्बे जी को भवन लिपाओ ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

सुरहिन गइया का घियना मँगावो,
नित उठि अम्बे जी का होम कराओ ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

कच्ची-पक्की कलियाँ तोरि मँगाओ,
नित उठि अम्बे जी का हार गुथाओ ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

मेवा मिठाई पकवान मँगाओ,
नित उठि अम्बे जी का भोग लगाओ ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

चुनि-चुनि कलियाँ सेज बिछाओ,
नित उठि अम्बे जी को सैन कराओ ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

मेरा मन माँ के ध्यान मे लीन है ।

सुरही गाय का गोबर मगाओ और नित्य प्रात'काल उठकर माँ का मन्दिर लीपो । कच्ची-पक्की कलियाँ तोड़ लाओ और नित्य उठकर माँ के लिये हार गूथों । मेवा, मिठाई और पकवान लाकर माँ को भोग लगाओ । कलियाँ चुन-चुनकर सेज तैयार करो और माँ को उस पर आदर पूर्वक शयन कराओ ।

(प्रस्तुत गीत मे देवी की सविधि पूजा का वर्णन किया गयाहै ।)

लौगइ लौग बसी मोरी अबला,
तेरा बगइचा लौग में ।

के रे चढावै मइया बेला मोगरा,
के रे चढावै गुलाब ?

के रे चढावै मइया धुजा नारियल,
के रे चढावै मइया हार ?

माली चढावै मइया बेला मोगरा,
मालिन चढावै गुलाब ।

माली चढावै मइया धुजा नारियल,
मालिन चढावै मइया हार ।

के रे माँगै मइया अनधन सोनवा,
के रे माँगै सोहाग ?

माली माँगै मइया अनधन सोनवा,
मालिन माँगै सोहाग ।

माँ, प्रत्येक लौग मे सुगन्ध की भाँति तुम्हारा बास है । लौंग के फूलों से भरी तुम्हारी बगिया है ।

माँ, कौन तुम्हे बेला, मोगरा चढाता है ? कौन तुम्हे गुलाब का फूल चढ़ाती है ?

माली तुम्हे बेला मोगरा चढाता है ? मालिन तुम्हे गुलाब का फूल चढाती है ।

माँ, कौन तुम्हें ध्वजा और नारियल चढ़ाता है ? कौन तुम्हे हार चढाती हे ?

माली तुम्हे ध्वजा और नारियल चढ़ाता है, मालिन तुम्हे हार चढाती है ।

माँ, कौन अनधन सोना की माँग करता है ? कौन सोहाग की माँग करती है ?

माली अनधन सोना की माँग करता है । मालिन अपने सोहाग की माँग करती है ।

(११)

जगदम्बे भवानी सरन भवन ।

तुम देवी जालपा दुःख हरो बाल का,
अष्ठभुजी कल्यानी सरन भवन ।

गढ परबत पर बैठी मेरी अबला,
छाने दूध और पानी, सरन भवन ।

सोने के सिंहासन बैठी मोरी अबला,
चाभत माखन-मिसिरी, सरन भवन ।

मनमोहनी बलिजाऊँ तुम्हारी,
तीन लोक की हो रानी, सरन भवन ।

भवानी जगदम्बे, तुम्हारा मन्दिर ससार का शरणास्थल है।

हे जालपा देवी, तुम सेवक का दुःख दूर करो। हे अष्टभुजा कल्याणी, तुम्हारा मन्दिर ससार का शरणस्थल है।

पर्वत की चोटी पर तुम्हारा निवास है। तुम इतनी न्यायशील हो कि दूध का दूध और पानी का पानी कर देती हो।

तुम स्वर्ण सिंहासन पर आसीन हो और माखन-मिश्री का भोग लगा रही हो।

तुम मन को मोहने वाली हो। तीनों लोक की रानी हो। मै तुम्हारी बलैया लेती हू।

(१२)

आयी हू सरन तिहारी रे।
मैया जै जै बोलो ॥

बेले क फूल मैया कैसे चढाऊँ,
भँवरे ने दिया है जुठार रे ।

गगा क नीर मैया कैसे चढाऊँ,
मछली ने दिया है जुठार रे।

गैया क दूध मैया कैसे चढाऊँ,
बछड़े ने दिया है जुठार रे।

नेवज और लपसी मैया कैसे चढाऊँ,
[illegible] ने दिया है जुठार रे।

सेदुर औ चुनरी मैया कैसे चढाऊँ,
तिरिया ने दिया है जुठार रे।

माँ, मै तुम्हारी शरण मे आई हूँ। तुम्हारी जै-जै कार मना रही हू।

माँ, बेले का फूल तुम्हे कैसे अर्पित करूँ? बहुत सकोच हो रहा है, क्योकि भौरो ने एक बार इन फूलो का बास लेकर इन्हे जूठा कर किया है। गगा जल चढ़ाते हुए भी लाज लग रही है, क्योकि मछलियो ने इस जल को उच्छिष्ट कर दिया है। गाय का दूध है, किन्तु उसे भी तो बछड़े ने जूठा कर दिया है। नेवज और लपसी मे नन्हे बच्चे ने मुँह लगा दिया है। रही सिन्दूर और चुनरी स्त्री के हाथ मे पड़ जाने के कारण वह भी जूठी हो गई है। माँ, तुम्ही बताओ किस सामग्री से तुम्हारी पूजा करूँ? कुछ भी तो अछूता नहीं, कुछ भी तो नितान्त पुनीत और पवित्र नही!

(प्रस्तुत गीत मे पुजारिन के हृदय की निश्छलता और सकोच-शीलता देखते ही बनती है। वस्तुत. इस प्रकार का निरभिमान ही देवी का सर्वाधिक मूल्यवान निर्माल्य है।)

(१३)

जय जयन्ति देवी महरानी,
कल्यानी जय-जय स्यामा।
माथे उनके चन्दा विराजै,
सीस मुकुट अभिरामा।
कँहवा देवी को जन्म भयो है,
कँहवा हैं अस्थाना?
कँहवा देवी आपु बिराजै,
पूजत सकल जहाना?

हिमचल मैंया जनम भयो है,
काली को अस्थाना।

कोट कँगूरे आपु बिराजै,
पूजै सकल जहाना।

महारानी जयन्ती देवी की जय हो! कल्याणी श्यामा देवी की जय हो।

कहाँ देवी का जन्म हुआ है और कहाँ उनका स्थान है? कहाँ देवी स्वय विराजमान है और सारा ससार उनकी पूजा कर रहा है?

हिमालय पर्वत पर माता का जन्म हुआ है। काली की मूर्ति मे आपका स्थान है। पर्वत के शिखर पर आप विराजमान है और सारा ससार आपकी पूजा कर रहा है।

(१४)

अवतार लिया माया ने, भोला के चरण में!

सीता को जीत लायी,
रावण को मार के।
पर्वत पै जाके बैठी हो,
कसा को मार के।

बलिहारी तेरे छबि की,
गले मुन्ड माल हैं।
क्या ज्योति तेरे शीश पर,
मूरत विशाल है।

बैठी हो अपने मदिर में,
करती हो अदालत।
आया जो तेरे धाम में,
देती हो पदारथ।

अवतार लिया माया ने, भोला के चरणमें!

माता पार्वती ने शकर के चरणो मे जन्म लिया। रावण का वध कर उन्होने ही सीता को बन्धन-मुक्त किया।

कस का विध्वस कर तुम पर्वत पर विराजमान हो। कलकत्ते मे काली के रूप मे भक्त-गण तुम्हारी ही पूजा करते है।

मै तुम्हारे चरणो मे बलिहारी जाती हूँ।

मै तुम्हारे रूप का क्या वर्णन करूँ! तुम्हारे कण्ठ मे मुण्डमाल सुशोभित है। शीश पर प्रखर ज्योति प्रज्वलित हो रही है। आकार अत्यन्त विशाल है।

अपने मन्दिर मे बैठकर तुम दरबार कर रही हो। जो तुम्हारे धाम मे आता है, उसकी सम्पूर्ण कामनाये पूरी कर देती हो।

(१५)

मै चौरी डोलावऊँ दिन-रात, मैया तोर बलका भवन में!
मैया के अंग पर लाल घँघरिया, चुदरी ओढावउँ गोटेदार।
मैया की चौरी पै नरियर का गोला, लालै ध्वजा फहराये।
ककड-पत्थर मैया तोरा भवनवाँ, हीरा जडे चहुँ ओर।
मैया की लट मोतिन से गूथी, लालै सिन्दूर भरी माँग।
मैया के अग से जोति बरत है, दीवा जले सारी रात।
सबरे चढावै फूलो का गजरा,बलका चढावै दूधन की धार।

माँ, मै तुम्हारी दासी हूँ। तुम्हारे मन्दिर मे बैठकर मै दिन रात तुम्हें चँवर डुला रही हूँ और तुम्हारे बालक को मैने तुम्हारे चरणो मे लिटा दिया है।

तुम्हारे शरीर पर लाल लँहगा सुशोभित है। माँ, मै तुम्हे लाल चूँदर से आवेष्ठित कर रही हूँ।

माँ की चौरी पर नारियल का गोला है। सामने लाल वजा फहरा रही है।

ककड़ पत्थर से माँ का मन्दिर बना है। चारो ओर उसमे हीरे जडे है। उनकी लट मोतियो से गुथी है। माँग मे लाल सिन्दूर भरा है।

माँ के प्रत्येक अग से ज्योति प्रज्वलित हो रही है। उनके मन्दिर मे सारी रात दीपक जलता रहता है।

माँ, और सब तुम्हे फूलो की माला चढाते है, यह बालक दूध की धार से तुम्हारा अभिषेक कर रहा है।

मइया मोरी केसी बनी भोली-भाली !

काहे से मइया मन्दिर छ्वाऊँ,
काहे सजाऊँ तेरी डाली ?

पानन से मइया मन्दिर छवाऊँ,
फूल सजाऊँ तेरी डाली ।

मइया के दुआरे एक फूली-फुलवारी ।
फूल खिले डाली-डाली ।

मइयाके दुआरे एक गगा बहत है ।
आवै लहर बारा बारी ॥

मेरी भोली-भाली माँ कैसी सुन्दर लग रही है !

माँ किससे तुम्हारा मन्दिर छ्वाऊँ ? किससे तुम्हारी डाली सजाऊँ ?

पान के पत्तो से तुम्हारा मन्दिर छ्वाऊँगी। फूलो से तुम्हारी डाल सजाऊँगी !

माँ के द्वार पर एक हरी भरी फुलवारी है। उसके वृक्षो की प्रत्येक डाल मे फूल खिले है।

माँ के द्वार पर गगा बह रही है। उनके जल मे बारी-बारी से लहरे उठ रही है।

गोद भराई

मेरे अलबेले नाहा,
अब धर सिरहाने बाँहा ।
मेरे बस बढावन नाहा,
गले बन्धन डालन हारा ॥

जब पहला मास लागे,
तब फूलझरी मन लागे ।
जब दूसर मास लागे,
तब पान पीक मन लागे ॥

जब लागे है मास अढाई,
पिया अन्न न भावे पानी ।
जब तीसर मास जो लागे,
तब माटी मटिल मन लागे ॥

जब चौथा मास जो लागे,
तब आम अमिल मन लागे ।
जब पचवाँ मास जो लागे,
तब दूध दही मन लागे ॥

जब छठवाँ मास जो लागे,
तब लड्डू में मन लागे ।
जब सतवाँ मास जो लागे,
तब मेवा-मिठाई मन लागे ॥

अठयें के सुरति बिसारो,
पिया सेज न आवन हारो ।

जब नौवा मास जो लागे,
तब साध-सधुल मन लागे ॥

जब दसवाँ मास जो लागे,
तब भई होरिलवा की आसा।
मेरे रामरतन के बाबा,
तेरे द्वारे पे नोबत बाजा ॥

मेरे रामरतन के ताऊ चाचा,
तेरे द्वारे पे पातुल नाचा।
मेरे राम रतन की दादी,
तेरी आँगन ढोल धमाकी ॥

गर्भवती पत्नी अपने पति से कह रही है—"हे मेरे वंश की वृद्धि करने वाले और मेरे कण्ठ मे हाथ डालने वाले प्रियतम, मेरे सिरहाने अपनी बाँहे रख कर बैठो और मेरी सभी बातो को ध्यान से सुनो।

पहला महीना लगने पर फूलझरी* की इच्छा होती है। दूसरा महीना आरभ होने पर पान के लिये मन लालायित होता है। ढाई महीना बीत जाने पर अन्न-जल की इच्छा नही होती (भूख नही लगती)। तीसरा महीना लगने पर मिट्टी खाने की तबीयत होती है। चौथा महीना लगने पर आम और इमली की इच्छा होती है। पाँचवे महीने मे दूध-दही के लिये मन मचलता है। छठे महीने मे लड्डू और सातवे मे मेवा-मिठाई की कामना होती है। प्रियतम, आठवे महीने का स्मरण न करो। तुम मेरी शैय्या पर अब न आ सकोगे। नवाँ महीना लगने पर मन मे भाँति भाँति की अभिलाषायें उमडने लगती है। दसवाँ महीना लगने पर पुत्र जन्म की आशा पूरी हो जाती है। मेरे रामरतन (नवजात पुत्र) के बाबा, अब तुम्हारे दरवाजे पर आनन्द के बाजे बजेगे। मेरे रामरतन के ताऊ और चाचा, अब तुम्हारे दरवाजे पर भाड नृत्य करेंगे। मेरे रामरतन की दादी अब तुम्हारे आँगन मे ढोलक बजेगी।

(इस गीत मे इसी प्रकार परिवार के सभी व्यक्तियो और सम्बन्धियो का नाम लेकर गाया जाता है।)

---

* एक प्रकार का आभूषण जिसे औरते अपने कलाई मे पहनती है।

बाँसे करिल होइके निकरी है गोरी,
अग पतर मुख ढुरहुरू गोरी ।
अस गोरी हम कतहू न देखा,
निकरी देखा बाप रामा खोरी ॥

पैठत देखा ससुर रामा पँवरी,
हीरे-हीरे झीरे झीरे नदिया बहतु है ।
जहवाँ दुलहे रामा सेज बिछावै,
ढूरत ढुरत गोरी सेजे आयी ॥

सेजे चढन्ते पिया पूछन लागे,
कौन नक्षत्र गोरी सिर से नहानी ?
कौन नक्षत्र गोरी सेजे आइयु ?

सूरुज नक्षत्र स्वामी सिर से नहाविउँ ।
रोहनी नक्षत्र स्वामी सेजहिं आयी ।

काहउ गोरी तुम्है काहे की साध ?
पहिल साध मोरी सासु पुरइहैं ।
हम रे ससुर से बात चलइहे ॥

और साध मोरी ससुरू पुरइहैं,
बाम्हन बोलाय के सगुन पूछइहै ।
और साध मोरी बाप पुरइहैं,
बैठ बजाज घरे कपडा चिरइहै ॥

और साध मोरा चाचा पुरइहै,
दरजी बोलाय जोडवा सिअइहैं ।
और साध मोरी माया पुरइहै,
कोहरा के चाका ऐसी पूडिया पोअईहै ॥

और साध मोरी चाची पुरइहैं,
भैसी के सीब ऐसा गूना पठइहैं।
और साध मोरी भाभी पूरइहै,
गोतिनी बोलाय के लूगरा गोठइहैं ?

और साध मोरी बहिना पुरइहैं,
जौ गुजरिन का हार पठइहैं।
और साध मोरा भइया पुरइहैं,
लादि फाँदि लैके नेवते अइहैं ॥

और साध मोरा स्वामी पुरइहैं,
आधे चौके हमइ बैठइहैं।
और साध मोरी ननद पुरइहैं,
अपने बीरन सँग गाँठ जोडइहै ॥

और साध मोरा देवरा पुरइहै,
काने लगाइ के किंगिरी बजइहैं।
किंगिरी बजावत मुदरी जो पइहैं,
अपने भतिजवा के कठुला गढइहैं।

सासु कहइँ बहु थोडा-थोड़ा दिहेव,
माया कहत बेटी भर-भर दिहेव।
थोडा-थोडा देबेंउँ तौ गोत लजइहैं,
भर-भर देबो तो सासु रिसइहैं।

जेके बाबुल बैल भरि देइहैं ?

हे न्याह हे न्याह फूली है सास-ससुर की आसा।
फूली है माया बाबुल की आसा,
फूली है मेरे मन की आशा ॥

ओरिअन-ओरियन बोलत कागा ।
कब मोरे अइहैं बाबुल की साधा ॥
साधुलिया मोरी सास पुरइहैं ॥

बाँस के करइल-सी एक गोरी बाहर निकली है। उसका पतला अग है और गोला-चिकना मुँह। ऐसी सुन्दरी मैने कही नही देखी थी। केवल अमुक पिता की गली मे ही ऐसी गोरी दिखाई पड़ी। केवल अमुक ससुर के चौबारे मे प्रविष्ट होती हुई ही ऐसी गोरी दिखाई पड़ी।

धीमे-धीमे नदी बह रही है। वही दूल्हे ने सेज बिछाई। मन्द गति से गोरी सेज पर आई। पति ने पूछा—"प्रिये, किस नक्षत्र मे तुमने सिर धोकर स्नान किया? किस नक्षत्र मे तुम मेरी शैय्या पर आई?

पत्नी ने उत्तर दिया—"प्रियतम, सूर्य नक्षत्र मे मैने सिर धोकर स्नान किया और रोहिणी नक्षत्र मे मै तुम्हारी शैय्या पर आई।

पति ने आगे पूछा—"प्रिये, बताओ, तुम्हारी क्या-क्या अभिलाषाये है?"

"प्रितयम, मेरी पहली साध मेरी सास जी पूरी करेंगी। फिर मेरे ससुर जी से बात चलायेंगीं और दूसरी इच्छा ससुर जी पूरी करेंगे। वे ब्राह्मण बुलाकर शकुन विचार करायेंगे। अगली साध मेरे पिता जी पूरी करेंगे। वे बजाज की दुकान मे बैठकर कपड़े खरीदेंगे। उसके बाद की साध मेरे चाचा जी पूरी करेंगे। वे दरजी बुलाकर कपड़े सिलायेंगे। अगली इच्छा मेरी माता जी पूर्ण करेंगी। वे कुम्हार की चाक जैस बड़ी-बड़ी पूड़ियाँ बनवायेंगी। अगली अभिलाषा मेरी चाची पूरी करेंगी। वे भैसी की सीग जैसी गूनियाँ भेजेंगी। मेरी भाभी गोतनें बुलाकर लूगा गोठायेंगी। बहन जी जौ-गूलर का हार भेजेंगी। भाई बहुत से सर-सामानो के साथ न्यौता करने आयेगा। स्वामी मुझे अपने साथ लेकर चौक मे बैठेंगे। ननद जी अपने भाई के साथ मेरी गाँठ जोड़ेंगी। देवर कान से लगाकर किंगिरी बजायेंगे। भेंट मे उन्हे जो अँगूठी मिलेगी, उससे अपने भतीजे को कठुला हाथ का कगन बनवायेंगे।

सास कहती है—"बहू थोड़ा थोड़ा देना!" माँ कहती हैं—"बेटी हाथ भर-भर कर देना।"

"थोड़ा-थोड़ा दूँगी तो स्वजाति के लोग मुझे लज्जित करेंगे। भर-भर कर दूँगी तो सास जी रूष्ट होगी। किन्तु मै इतनी चिन्ता क्यो करूँ? मेरे बापू बैलो पर लदवा कर बहुत सारी वस्तुये भेजेंगे।

"प्रियतम, सास-ससुर की इच्छाये पूरी हुई है। माँ-बाप की आशाये पूरी हुई है। मेरे मन की अभिलाषा पूर्ण हुई है।

मुँडेरो पर काग बोल रहा है। मेरे पिता द्वारा भेजी गई 'साध' कब आयेगी? कब सास जी मेरी साध पूरी करेंगी?

फुलझरिया मन लागे ।
दूसरा मास जब लागे ।
थूँक पिच्चिक मन लागे ।

तीसरा मास जब लागे,
माटी मँगइबो कि नाही ?
साध पुराइबो कि नाही ?

जौ धनि तोको साँची मैं जानो,
छोटा बीरन बुलाइये ।
गढ मुलताने से माटी मँगाऊँ,
नवल धनि तेरी मैं साध पूराऊँ ।

चौथा मास जब लागे,
खट रस में मन लागे ।
आम मँगइबो कि नाही ?
इमिलीया मगइबो कि नाहीं ?

जो धनि तोको साँची मैं जानों,
छोटा बीरन बोलाइये ।
गोले पेड से अमवा मँगाऊँ,
इमिलो बाग से मै अमिली मँगाऊँ ।
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ ।

पचवा मास जब लागै,
दूध मँगइबो कि नाही ?
दहिया मँगइबो कि नाही ?

जो धनि द्रोको साची मैं जानो,
छोटा बीरन बोलाइये ।

गोली भैस का दूध मॅगाऊँ,
गुजर देस से दहिया मॅगाऊँ।
नवल धनि तेरी मै साध पुराऊँ।

छठवाँ मास जब लागे,
लड्डू मॅगइबो कि नाही ?
साध पुरइबो कि नाही ?

जो धनि तोको साँची मैं जानू
छोटा बीरन बुलाइये ?
बाबुल देस से लड्डू मॅगाऊँ,
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

सतवाँ मास जब लागै।
मेवा मिठइया मन लागै,
मेवा मॅगइबो कि नाही ?
मिठइया मँगइबो कि नाही,

जो धनि तोको साँची मैं जानू,
छोटा बीरन बुलाइये।
काबुल देस से मेवा मॅगाऊँ,
कासी से मैं मिठइया मँगाऊँ।
नवल धनि तेरी मै साध पुराऊँ।

अठवाँ मास जब लागै,
लील लिलागर मन लागैं।
लील मगइबो कि नाही ?

जो धनि तोको साँची मै जानू,
छोटा बीरन बुलाइये।
गहरे रग की लील मँगाऊँ,
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

नौवाँ मास जब लागे,
साध मँगइबो कि नाही।
गोद भरइबो कि नाही?

जो धनि तोको साँची मै जानू,
छोटा बीरन बुलाइये।
तेरे नइहर से मै साध मँगाऊँ,
अपनी माया से मैं गोद भराऊँ।
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

दसवाँ मास जब लागे,
महल झरइबो कि नाही?
पलग बिनइबो कि नाही?
पर्दा छोडइबो कि नाहीं?
दाई बुलइबो कि नाही?

जो धनि तोको साँची मैं जानू,
छोटा बीरन बुलाइये।
शीशेदार मैं महल झराऊँ,
रेशम डोर से पर्दा छुडाऊँ,
नेवाडे बाध की पलग बिनाऊँ,
गोदन बाग से दाई बुलाऊँ,
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

तिल से तेल, तेल से पीना, पिया आगे कहिहौ कहानी।

एक गर्भवती स्त्री किसी अन्य गर्भवती स्त्री और उसके पति के वार्तालाप को अपने पति के सामने दोहराती है और ब्याज से बता देती है कि वह स्वय गर्भवती है। वह वार्तालाप इस प्रकार है —

मन मे फुलझरी की अभिलाषा उत्पन्न हो रही है।

दूसरा महीना लगते ही पान की पीक जैसी तबियत होती है। मिचली आती है।

"प्रियतम, तीसरा महीना जब आरम्भ होगा, तब तुम मेरे लिये मिट्टी मँगाओगे या नहीं ? मेरी साध पूरी करोगे या नहीं ?"

"प्रिये, यदि तुम सच बोल रही हो तो छोटे भाई को बुलाना मै उससे तुम्हारे लिये मुल्तान से मिट्टी मँगा दूगा। नवेली प्रियतमे, तुम्हारी साध मै पूरी कर दूँगा!"

"प्रियतम, चौथा महीना लगेगा। तुम मेरे लिये आम और इमली मँगा-ओगे अथवा नहीं ?"

"प्रिये, यदि तुम सच बोल रही हो तो तुम छोटे भाई को बुला देना मैं उससे तुम्हारे लिये गोले पेड़ से आम मँगा दूँगा। बाग से इमली मँगा दूँगा।

"पाँचवाँ महीना आरम्भ होगा। क्या तुम मेरे लिये दूध-दही नही मँगा-ओगे ?"

"प्राण, यदि तुम सच बोल रही हो तो छोटे भाई को बुला देना। मै तुम्हारे लिये गोली भैंस का दूध मँगा दूँगा। गूजर देश से दही मँगा दूँगा।"

"छठा महीना शुरू होगा। तुम लड्डू मँगाओगे अथवा नहीं ?"

शुभे, यदि तुम सच बोल रही हो तो छोटे भाई से मै तुम्हे काबुल के देश से लड्डू मँगा दूँगा!"

"सातवाँ महीना आयेगा, तो मेवा मिठाई की अभिलाषा होगी। मँगा-ओगे न ?"

"हाँ, मैं तुम्हें काबुल से मेवा मँगा दूँगा! काशी से मिठाई मँगवा दूँगा।"

"आठवे महीने में लील-लिलागार (नील से रगी साड़ी) की इच्छा होगी।"

"गोरी, मै तुम्हे अवश्य ही गहरे रग की लील मँगा दूंगा!"

"जब नवाँ महीना लगेगा, तब और साध मँगाओगे या नही ?"

"प्रिये, यदि तुम सच बोल रही हो तो छोटे भाई से मै तुम्हारे नैहर से साध मँगा दूगा। अपनी माँ से गोद भरा दूगा।"

"जब दसवाँ महीना आरम्भ होगा तो महल साफ कराओगे, पलँग बिनवा-ओगे, पर्दा लगवाओगे, दाई बुलाओगे, अथवा नही ?"

"अवश्य प्रिये, छोटे भाई को बुलाकर मै शीशेदार महल साफ करा दूँगा, रेशम की डोरों का पर्दा तनवाऊँगा। निवाड़-बाध की पलँग बिनवा दूगा। गोदन बाग से दाई बुला दूंगा।"

तिल से तेल निकलता है और तेल से पीना। मै यह कहानी अपने प्रियतम को सुनाऊँगी।

ललना गनेश जी की, सरन मनाइये।
ललना बिघन बिनासन, सरन मनाइये॥

पहिला मास जब लागे,
हर्षित मन भये रे।
ललना बिप्र बोलाये हँसि पूछे,
कब की नहानी रे॥

दुसरा मास जब लागे,
तो मन हर्षित भये रे।
ललना अन्न बिरौना न सोहाई,
जियब हम कैसे रे॥

तिसरा मास जब लागे,
पिडुलिया मोरी कापई।
ललना अग पियर मुख दूबर,
चोली-बन्द भरि आये रे॥

चौथा मास जब लागे,
सासु से अरज करौ रे।
सासू सीझल न जाये रसोइया,
ननद का बोलाओ रे॥

पाँचवा मास जब लागे,
देवरा से अरज करैं रे।
देवरा सुतबौ मैं सेजिया तुम्हार,
तो बेनिया डोलउबऊँ रे॥

छठवाँ मास जब लागे,
सइया से अरज करै रे।
साहेब सुतबौ मैं सेजिया अकेल,
तो इतनी अरज मानो रे॥

सतवाँ मास जब लागे,
सास हँसि पूछै।
बहुआ दहिना पाँव आगे परत,
होरिलवा का लच्छन रे॥

अठवाँ मास जब लागे,
आठो अग भरि आये रे।
मोरी पहिरी चीर खुल जाई,
मैं फेरि-फेरि बाँधौ रे॥

नऊवा मास जब लागे,
ससुर हँसि पूछै रे।
बहुआ कब तोरे होइहै नन्दलाला,
मैं पटना लुटऊबौ रे॥

दसवाँ मास जब लागे,
दसो अग भरि आये रे।
ललना प्रगटे है त्रिभुवन नाथ,
अयोध्या के नायक रे॥

जो यहि मगल गावै,
और गाय सुनावै रे।
ललना कटइ जनम कर पाप,
सुनइया फल पावै रे॥

गणेश जी की शरण मनाओ। विघ्नों का विनाश करने वाले तथा धन-धान्य प्रदान करने वाले गणेश जी की शरण मनाओ।

पहला महीना प्रारम्भ होते ही मन पुलकित हो उठा। पण्डित बुलाकर पूछा जाने लगा—"स्नान की लग्न कब पड़ेगी?"

दूसरा महीना आरम्भ होते ही अन्न जल से अरुचि होने लगी। भला मै किस प्रकार जीवित रह सकूँगी?

तीसरा महीना लगते ही मेरी पिडली काँपने लगी। शरीर पर पीलापन आ गया। चेहरा दुबला हो गया। चोली की बन्द तग होने लगी।

जब चौथा महीना शुरू हुआ, मै सास से बिनती करने लगी—"सास जी, मुझसे रसोई का काम नही होता। ननद को बुला लो।"

पाँचवाँ महीना लगने पर देवर से प्रार्थना करने लगी—"देवर, मै तुम्हारी सेज पर शयन करूँगी, तुम मुझे पखा डुलाओ।"

छठा महीना लगने पर स्वामी से विनय करने लगी—"प्रियतम, तुम मेरा इतना अनुरोध स्वीकार करो, अब मै सेज पर अकेली ही शयन करूँगी।"

सातवाँ महीना लगने पर सास जी हँस-हँस कर पूछने लगी—"बहू, चलते समय तुम्हारा दाहिना पैर ही आगे पड़ रहा है। यह पुत्र-जन्म का शुभ लक्षण है।"

आठवाँ महीना लगने पर मेरे आठो अग भर आए। पहनी हुई साड़ी खुल जाया करती है। मुझे बार-बार बाँधना पड़ता है।

नवाँ महीना लगने पर ससुर हँस-हँसकर पूछने लगे—"बहू, कब तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा और मै वस्त्र लुटाऊँगी?

दसवाँ महीना लगने पर दसो अग भर आए। तीनो लोको के स्वामी, अयोध्याधीश श्री राम ने अवतार लिया।

जो यह मगल गीत गाते और गाकर सुनाते है उनके जन्म का पाप धुल जाता है और सुनने वालो को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि चारो फल प्राप्त होते है।

(२२)

पहला मास रुकुमिन,
कुवर सच पायो।
रुकुमिन, फुलझरिया मन लागे,
तो आगम जनायो॥

दूसरा मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकमिन, पान पिचक मन लागे,
तो आगम जनायो॥

तीसरा मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकुमिन, माटी मटिल मन लागे,
तो आगम जनायो ॥

चौथा मास रुकुमिन,
कुँवर सचु पायो।
रुकुमिन, आम-अमिलिया मन लागे,
तो आगम जनायो ॥

पचवा मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकुमिन, दूध दही मन लागे,
तो आगम जनायो ॥

छठवा मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकुमिन, लड्डू रे मन भावे,
तो आगम जनायो।

सतवाँ मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकुमिन, मेवा मिठाई मन भावे,
तो आगम जनायो ॥

अठवा मास का नाम,
तो कबहुँ न लीजिये।
रुकुमिन, नील-नीलाम्बर मन लागे,
तो आगम जनायो।

नवा मास रुकुमिन पर,
जो न पूरी होई है।

रुकुमिन, साध-सधुलिया मन लागै,
तो आगम जनायो ॥

दसवा मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो ।
रुकुमिन, भई है होरिलवा की आस,
तो आगम जनायो ॥

रुकुमिन, ऐसन भौजइया,
चौक चढि बैठे ।
अब सुभद्रा ऐसी ननदिया,
तो चुदरी ओढावे ॥

नाही तुहु ना करो भइया,
ऐ भइया ना करो ।
भइया, भाभी का राम नेवाजै,
चौक चढी बैठो ॥

पहिला महीना लगने पर रुक्मिणी देवी को गर्भ होने का विश्वास हो गया । उनका मन फुलझरी के लिए ललायित होने लगा ।

उनको इस बात के लक्षण मिलने लगे कि सन्तति का जन्म होगा । दूसरे महीने मे उन्हे खूब पान कूँचते रहने की साध होने लगी । तीसरे महीने में मिट्टी खाने की इच्छा होती । चौथे महीने मे आम-इमली, पाँचवें में दूध-दही, छठे मे लड्डू, सातवें मे मेवा-मिठाई और आठवे मे नील-नीलाम्बर की इच्छा होती । नवे महीने मे उनके मन मे भाँति-भाँति की अभिलाषायें उठने लगीं । दसवे महीने मे पुत्र-जन्म की आशा पूर्ण हो गई । रुक्मिणी जैसी भाभी चौक मे बैठी हैं । सुभद्रा जैसी ननद उन्हे ओढ़ा रही है । रुक्मिणी के साथ गाँठ जोड़ कर चौक मे बैठते समय कृष्ण कुछ लज्जा का अनुभव करने लगे । सुभद्रा अनुरोध करने लगीं—"भाई, नहीं-नही मत करो भगवान् भाभी का कल्याण करे । तुम प्रसन्नता पूर्वक उनके साथ चौक मे बैठो ।"

काहे की पलग, काहे का लगे पावा ?
काहे की पलग में, टोकि बिनावा ?
सोने के पलग, रूपा लगे पावा।
गज-मोती पलग टोकि बिनावा ॥
दुउ-जन पहुँडे है रतन उछाला।
रैन-सुहागिन भा भिनसारा।
लिहा है गर्भ श्रीराम अवतारा ॥
लिल्ली सी घोडीया पतल असवारा,
चले है कौन लाला बहिन लेनेहारा।
ठाढी हैं बहन्दुल पाँवरी दुआरा,
कहाँ तुम चलेऊ भौज के कन्ता ॥
तुम्हरिन भाउज साधुल माँगै,
अच्छुन्न सैन चुन्दर उन माँगे।
जब नन्दोई जेवन बैठे,
तब ननदी हँसि बात चलावैं।
तुम्हरिन सरहज सावो मागै,
अच्छुन्न सैंत चून्दर उन माँगे।
तब नन्दोइया जुलहवा के जाई,
हाथ जोड़ मुख बिनती कराई।
जुलहा भइया तुम बाबा हमारा,
खासा एक बिन देहू चौपारा।
रँगरेज भैया तुम चाचा हमारा।
चूनर रंग देओ बिघाता ॥
आस पास रंगेयो मोर की पाँखी,
बीचे में चौक चडोल की पाती।

तब नन्दोइया कन्दुश्रा के जाई,
हाथ जोड मुख विनती कराई ॥

कन्दुश्रा हो भैया बाप हमारे,
लेड्डुवा बाँध देश्रो विधाता।

जोतेन गाडी किहेन पयाना,
छोडेन ननद रानी देस श्रयाना ॥

गावत बाजत नगर में पैठी,
शख बजावत श्रॅगने में पैठी।

श्रागे भौउज चौक बईठी,
जब ननदी उनकी चुन्दरी श्रोढाई ॥

चुन्दरी श्रोढाई के लड्डू डारै,
लड्डू डार के देत श्रसीसा।

भाउज पूत जनै दस बीसा,
जीश्रो मेरे बीरन लाख बरीसा।

कहाँ नन्दोई तोरी श्रकिल भुलानी,
बिन श्रच्छू मोहे चुन्दरी श्रोढाई।

न चुन्दरी में श्रच्छू न मोती,
लाज करै नन्दोइया के गोती।

लिहेन्ह ताली खोलेन केवाडी,
सोना लिहेन्ह जो बारा मासी ॥

जब नन्दोइया सोनरवा के जाई,
हाथ जोड मुख बिनती कराई।

सुनरा भैया तुम जीजा हमारे,
श्रच्छुश्र रे बन देव बिधाता ॥

पटवा भैया तुम जीजा हमारे,
फूंदनिया बना देव बिधाता।

जौहरी भइया तुम फूफा हमारे,
मोती लड देश्रो बिधाता ॥

बहुत कई अच्छू बहुत के मोती,
चाहा करे नन्दोइया के गोती ।

जस-जस चुनरी उधरी करारी,
जब रे ससुर राजा धन बिलसाही ॥

जस-जस चुन्दरी लेत हिलोरा,
तब रे सास रानी बटई तमोला ।

'किस चीज की पलँग बनी है । किस चीज के उसमे पाये लगे हैं ?"

सोने की पलँग है । चाँदी के उसमे पाये लगे है । गज-मुक्ताओ से उसे टाँका गया है । दो प्राणी लेटकर उस पर रत्न उछाल रहे है ।

रात्रि व्यतीत हुई । प्रभात की पुण्य बेला मे श्रीराम ने अवतार लिया । लिल्ली घोड़ी पर पतली देहवाला अमुक भाई अपनी बहन लाने के लिये चल पड़ा है ।

बहन चौबारे के द्वार पर खड़ी है । भाई को आते देख कर पूछा—"भाई, तुम कहाँ जा रहे हो ?"

भाई ने उत्तर दिया—"बहन, तुम्हारी भाभी साधुल माँग रही है । अच्छी सी चूनर माँग रही है ।"

जिस समय ननदोई भोजन करने बैठा, ननद ने हँसते हुये चर्चा की—"तुम्हारी सरहज साधुल माँग रही है, अच्छी-सी चूनर माँग रही है ।"

ननदोइ जुलाहे के पास जाकर बिनती करने लगा—"भाई जुलाहे तुम मेरे पिता तुल्य हो । एक बढ़िया-सा चौपारा तैयार कर दो ।"

रगरेज से कहा—"रगरेज भाई, तुम मेरे चाचा के समान हो, जल्दी एक सुन्दर चूनर रग दो ! किनारे-किनारे मयूरो की पक्ति चित्रित करना और बीच मे चौक बना देना ।"

कन्दुआ के घर जाकर ननदोई ने लड्डू बाँधने का आदेश दिया । ननद ने पति के साथ बैल गाड़ी मे बैठ कर प्रस्थान किया । गाती बजाती हुई वह नगर मे प्रविष्ट हुई । शख बजाती हुई आँगन मे पहुँची । सामने भाभी [illegible] में बैठी थी । ननद ने उसे चूनर ओढ़ा दी । सामने लड्डुओं की [illegible]

कर आशीर्वाद देने लगी—"भाभी, तुम दसो-बीसो पुत्रो को जन्म दो। मेरा भाई लाखो वर्ष तक जीवित रहे।"

भाभी बोली—"ननदोई, तुम्हारी अच्छी मति मारी गई है। तुम बिना अच्छू के ही मुझे चूनर ओढ़ा रहे हो। न तो चूनर मे अच्छू है और न मोती।"

ननदोई के भाई-बन्धु उसे लज्जित करने लगे। उसने चाबी लेकर किवाड़ खोला और बारह माशा सोना निकाला। सोनार के पास जाकर उससे बिनती की—"भाई सुनार, तुम मेरे जीजा लगते हो। मेहरबानी करके एक अच्छू बना दो। पटहार के पास जाकर उसने फुदनी बनवाई। जौहरी से मोती की लड़ी बनवाई। बहुत से अच्छू और बहुत से मोती लेकर ननदोई वापस लौटा। चुनरी देखते ही ससुर खुशी से नाच उठा। वह बहू की बलाये लेने लगा। ज्यों-ज्यों चूनर लहराती है, सास प्रसन्न मन सबको पान बाँटने लगती है।

(२४)

खट्टा न भावे मिट्ठा न भावे,
बैरो बैर पुकारे।
मेरा मन ललचै बैरो को॥

जाइ कहो मोरे ससुरू के आगे,
कलकत्ते से बैर मगावै।
मेरा मन ललचै बैरो को॥

जाइ कहूयो मोरे सासु के अगवाँ,
अगना में बैर लगावै।
अरे खटमिठिया बैर लगावै,
मेरा मन ललचै बैरो को॥

जाइ कहो मोरे नन्दी के अगवाँ,
नन्दोइया जी के अगवाँ।
कोई छकडन लाद मगावै,
झरबेरी बैर पठावै।
मेरा मन ललचै बैरो को॥

जाइ कहो बहु बाबुल के अगवाँ,
ताऊ चाचा के अगवाँ।

धोती बेची पठावै,
मेरा मन ललचै बैरो को ॥

जाइ कहो बहु बुआ के अगवा,
लहँगा बेचि पठावै।

आपन ओढनी बेचि पठावै,
मेरा मन ललचै बैरो को ॥

जाइ कहो मोरे मइया के अगवा,
आपन धरती बेचि पठावै।

आपन गिरही बेचि मगावै,
मेरा मन ललचै बैरो को ॥

गर्भावस्था मे स्त्रियो का मन भाँति भाँति की चटपटी चीजें खाने के लिये ललचाता है। एक गर्भवती स्त्री बेर के लिये मचल पड़ी है —

"खट्टा-मिट्ठा कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मुझे बेर चाहिये। मेरा मन बेर के लिये ललच रहा है। जाकर मेरे ससुर जी से कहो कि आँगन मे खट्टी-मिट्ठी बेर लगवा दे। ननद और ननदोई से कहो कि झरबेरी बेर छकड़ों पर लदवा कर भेज दे। बाबुल, ताऊ और चाचा से कहो कि धोती बेच कर मेरे लिये बेर भेजे। बुआ से जाकर कहो कि लहँगा ओढ़नी बेच कर मेरे लिये बेर भेजें। मेरी माँ से जाकर कहो कि वे धरती बेच कर, अपनी गृहस्थी बेच कर मेरे लिये बेर भेजें।

(२५)

ननद पूछइ ठाढि आँगन में,
सलोनी तुझे क्या-क्या भाता है ?
हरे डार का मेवा भावै,
खट्टरस और सलोना।

आर-पार की माछर भावे,
और बिसेधा नहिं भावे।

सास ससुर का राज भावे,
ननद-झगडा नहि भावे।

ऊँची अटारी सेजा भावे,
अवर सवत नहि भावे।

सलोनी तुझे क्या-क्या भाता है ?

ननद आँगन मे खड़ी होकर भाभी से पूछ रही है—"मेरी सलोनी भाभी, तुम्हे क्या-क्या चीजे अच्छी लगती है ?"

भाभी उत्तर देती है—"मुझे हरी डाल का मेवा, खटरूस और सलोना अच्छा लगता है। आर-पार की मछली अच्छी लगती है लेकिन बिसैंधा नहीं अच्छा लगता। अपने ससुर और सास का शासन प्रिय लगता है, लेकिन ननद का झगड़ा नहीं सुहाता। ऊँचे कोठे पर सेज बिछा कर सोना सुखद प्रतीत होता है किन्तु अपने ऊपर सौत का आना कभी भी नही सहन हो सकता।

जच्चाखाने का गीत

डगरा बहारत एक मोती जो पाया,
लै मटकी मोती मूदिये हाँ . .. ।

काहे की मटकी राजा, काहे का ढँकना,
काहे का कसना कसाईये हाँ ।
सोने की मटकी राजा रूपे का ढँकना,
रेशम कसना कसाईये हाँ ॥

जो तुम भोले राजा,बन को सिधरिहो,
मैं धन कौने बेल साइयो हाँ . ।
जो हम भोली रानी बनका सिधरबै,
धन खरचे गा मेरा वीरना हा ॥

एक लाख खर्चें राजा दुई रे बतावैं,
यह मन हमें न पसिजिये हाँ ।
जो तुम भोली रानी धीया जनोगी,
धन खरचेगा मेरा वीरना हा . .॥

जो तुम भोली रानी पूत जनोगी,
लिख परवाना भेजियो हाँ . ।
चिठिया जो बाँचे राजा मन में रहँसे,
घोडे पर जीन कसवाइये हाँ ...॥
ऊहाँ का उठिये राजा बन में आया,
बन के मोर चुराइये हाँ . ।
ऊहाँ का उठिये राजा नगरों में आया,
लोग महाजन पुकारिये हाँ .... ॥

ऊहा का उठिये राजा ड्योढी पर आया,
ड्योढीदार पुकारिये हा ।

ऊहाँ का उठिये राजा आगन में आया
माया बहिन पहराइये हाँ ।

ऊहा का उठिये राजा सेजा पर आया,
धन पिया तुरत मँगाइये हाँ ।

ऐ मोरी भोली रानी पूत जनन्ती,
मटकी भर मोती धन क्या किया हो ?

ऐ मोरे भोले राजा पान पतलिया,
मुर मुरवा राजा—चुन चुनवा राजा ।
गरवा लगाय लेखा मागियो हाँ ॥

अँजुली भर मोती ड्योढीदार को दीन्हा,
लाले को दाई बुलाइये हाँ ।

अँजुली भर मोती दाई को दीन्हा,
लालन को नारा छिलाइये हाँ ॥

थाल भर मोती उपरोहित को दीन्हा,
लाल को रास गिनाइये हाँ ।

थाल भर मोती तोरी अम्मा को दीन्हा,
लाल को चेरूआ चढाइये हाँ ॥

थाल भर मोती तेरी भाभी को दीन्हा,
लालन को पीपरी पिसाइये हाँ ।

थाल भर मोती तेरी बहन को दीन्हा,
लाल को छठिया धराइये हाँ ॥

दो चार मोती गवनहारी को दीन्हा,
लाल का रहस गवाइये हा.. ।

उठ धनि उठ धनि झगडे को चलिये,
झाझ मऊ के चौतरे हाँ ॥

झाझ मऊ का एक भोला सा राजा,
घोडे बैठाय राजा धन का बिलसव ।
यह दुई न्याऊ न कीजिये हाँ ॥

उठ धनि उठ धनि पहिनौ पटोरवा,
हम हारे तुम जीतिये हाँ ।

ऊहाँ का उठिये राजा आँगन में आया,
माया बहन उनकी पूछन लागे ।
देवरानी जेठानी पूछन लागे,
कौन हारा कौन जीतिये हाँ ?

अपने पिया की मैं करहूं बडाई,
हम हारे पिया जीतिये हाँ ।
जीता तो है अपने बाप का नन्दन,
हारी भडुये तेरी धीयरी हाँ ॥

मैं बलि मैं बलि कोख छुलाछन,
हारा लाल जिताइये हाँ ।

रास्ते मे झाड़ू लगाते हुये एक मोती मिल गया। उस मोती को मटकी में रख कर बन्द कर दिया।

किस धातु की मटकी है? किसका ढक्कन? किस रस्सी से उसे बाँधा गया है?

सोने की मटकी है। उस पर चाँदी का ढक्कन रखा है, फिर रेशम की डोरी से कस कर उसे बाँधा गया है।

"भोले राजा, अगर तुम वन (परदेस) चले जाओगे, तो मैं कैसे अपना गुज़र-बसर करूँगी?"

"भोली रानी, जब मै वन चला जाऊँगा तो यहाँ मेरा भाई धन खर्च करेगा।"

"प्रियतम, तुम्हारा भाई बहुत धूर्त है। एक लाख खर्च करने पर दो लाख बताता है। मेरा मन उस पर विश्वास नहीं करता।"

"भोली रानी, अगर तुम्हारे लड़की पैदा होगी तो मेरा भाई धन खर्च करेगा। किन्तु यदि तुम्हे पुत्र-लाभ हो तो मुझे पत्र लिखना।"

पत्र पढ़ कर प्रियतम बहुत प्रसन्न हुआ। घोड़े पर जीन कसा कर चल पड़ा। वहाँ से चल कर जगल मे आया। जगल के मोरो को पकड़ लिया। वहाँ से चल कर प्रियतम नगर मे आया। सेठ महाजनो को इकट्ठा किया। वहा से चल कर द्वार की देहरी पर आया। देहरी पर घर के लोगों को पुकारने लगा। फिर आगन मे आया। मा-बहन को गहने-कपड़े दिया। फिर सेज पर पहुँचा। पति-पत्नी मे तकरार होने लगी। पति ने पूछा—"पुत्र पैदा करने वाली मेरी रानी, मटकी भर मोती तुमने क्या किया ?"

पत्नी बड़े प्यार से बोली—"मेरे भोले, पान जैसे पतले, सूखे मुँह वाले और चिड़चिड़े प्रियतम, मुझे गले लगा कर तुम मुझसे मोती का हिसाब लो।"

"एक अँजुरी मोती मैने ड्योढ़ीदार को दिया। एक अँजुरी मोती दाई को दिया। पुत्र का नारा छिलाया। एक थाल मोती पुरोहित को दिया। पुत्र की राशि की गणना कराई। एक थाल मोती मा को दिया और उनसे पुत्र की अँजुरी भराई। एक थाल मोती तुम्हारी भाभी को दिया। उनसे पुत्र के लिये पिपरी पिसवाई। एक थाल मोती तुम्हारी बहन को दिया और उनसे पुत्र की छट्ठी करवाई। दो-चार मोती गीत गाने वाली स्त्रियों को दिया और पुत्र-जन्म पर मगल-गान गवाया।"

पति बोला—"रानी चलो झाझ मऊ के राजा की अदालत मे मैं अपना और तुम्हारा न्याय कराना चाहता हूँ।"

पत्नी ने उत्तर दिया—"स्वामी, झाझ मऊ का राजा बड़ा भोला है। वह क्या न्याय करेगा ? तुम अपना घोड़ा खूटा से बँधवा दो और मुझ पर विश्वास करो। न्याय कराने की आवश्यकता नहीं है।"

पति प्रसन्न होकर बोला—"रानी, उठो ! तथा लँहगा पहनो। तुम जीत गई। मैं तुमसे हार मान रहा हूँ।"

पति वहाँ से उठ कर आँगन मे गया। माँ, बहन, देवरानी तथा जेठानी आदि बहू से पूछने लगीं—"किसकी हार और किसकी जीत हुई ?"

बहू ने सब को उत्तर दिया—"मैं तो अपने स्वामी की ही बड़ाई करती हूँ। मैं हार गई, स्वामी जीत गये।"

बहू से सास कहती है कि वास्तविक विजेता तो अपने पिता का यह प्यारा पुत्र है। मेरे भँड़वे समधी की बेटी हार गयी, फिर भी मै उसकी बलिहारी जाती हूँ, क्योंकि उसकी कोख शुभ लक्षणों से युक्त है। उसी के फल स्वरूप मेरा हारने वाला पुत्र जीत गया।

(२७)

अब गढले नगर का सोनार,
अरे मइया गढले नगर का सोनार।

तो जच्चारानी खूब गढा ..
अलबेलरि सोहागिन खूब गढा ॥

अब रूप दिया भगवान,
अरी मइया रूप दिया भगवान।

तो जच्चा की माये जनी ,
अलबेलरि सोहागिन की माये जनी ॥

अब जैसे नरियर गोला,
अरी मइया जैसे नरियल गोला।

जच्चा रानी शीश बने ,
अलबेलरि सोहागिन शीश बने।

अब जैसे पूनो का चाँद,
अरी मइया जैसे पूनो कर चाँद।

सोहागिन के माँथ बने. ,
अलबेलरि सोहागिन माँथ बने ॥

अब जैसे आमे की फाँकी,
अरी मइया जैसे आमे की फाँकी।

जच्चारानी आँख बनें ,
अलबेलरि सोहागिन आँख बनें ॥

अब जैसे अनार का दाना,
अरी मैया जैसे अनार का दाना।

जच्चारानी दात बने . . ,
अलबेलरि सोहागिन दाँत बनें ॥

अब जैसे गुलाबे का फूल,
अरी मैया जैसे गुलाबे का फूल।

जच्चारानी ओठ बने .. ,
अलबेलरि सोहागिन ओठ बने ॥

अब जैसे समुन्दर सीपी,
अरी मैया जैसे समुन्दर सीपी।

जच्चारानी कान बने .. ,
अलबेलरि सोहागिन कान बने ॥

अब जैसे सुगना के ठोंठ,
अरी मैया जैसे सुगना के ठोंठ।

जच्चारानी नाक बने ...,
अलबेलरि सोहागिन नाक बने ॥

अब जैसे रेशम का लच्छा,
अरी मैया जैसे रेशम का लच्छा।

जच्चारानी केश बने ,
अलबेलरि सोहागिन केश बने ॥

अब जैसे फूलो की छड़िया,
अरी मैया जैसे फूलो की छड़िया।

जच्चारानी हाथ बने .. ,
अलबेलरि सोहागिन हाथ बने ॥

अब जैसे पीपर का पात,
अरे मइया जैसे पीपर का पात।

जच्चारानी गादी बनी . ,
अलबेलरि सोहागिन गादी बनी ॥

अब जैसे मूँग की फलियाँ,
अरी मइया जैसे मूँग की फलियाँ।

जच्चारानी अँगुली बनी ...,
अलबेलरि सोहागिन अँगुली बनी।

अब जैसे धोबी का पाट,
अरी मैया जैसे धोबी का पाट।
जच्चारानी पीठ बने . ,
अलबेलरि सोहागिन पीठ बने।

अब जैसे केला के खम्भा,
अरी मइया जैसे केला के खम्भा।
जच्चारानी जाघ बनी ,
अलबेलरि सोहागिन जाघ बनी ॥

अब जैसे कॅवल का फूल,
अरी मइया जैसे कॅवल का फूल।
जच्चारानी छाती बनी ,
अलबेलरि सोहागिन छाती बनी ॥

अब घूम घुमैला है पेट,
अरी मैया घूम घुमैला है पेट।
तो सेल्ही अजब बने . ,
अलबेलरि सोहागिन सेल्ही अजब बनी ॥

अब भीतर हैं सुलतान,
अरी मैया भीतर हैं सुलतान।
तो फौज द्वारे खडी .. ,
अलबेलरि की फौज द्वारे खड़ी ॥

बिन म्याने तलवार. ,
अरी मैया बिन म्याने तलवार।
तो जच्चारानी खूब लडी . ..,
अलबेलरि सोहागिन खूब लडी ॥

निकल पड़े सुलतान . ,
अरी मैया निकल पड़े सुलतान ।
तो फौज बिडरे चली . ,
अलबेलरि की फौज बिडरे चली ॥
अब जच्चा ने खाया है पान,
अरी मैया खाया है पान ।
तो चद्दर पीक पडी ... ,
अलबेलरि की चद्दर पीक पडी ॥
धोबिया लागे तेरा बाप,
अरी मैया धोबिया लागे तेरा बाप ।
तो चद्दर कलप करी ...,
अलबेलरि चद्दर कलप करी ॥
अब इतना गाइ सुनाये,
अरी मैया इतना गाइ सुनाये ।
जच्चारानी नाही धुलै ,
अलबेलरि सोहागिन नाही धुलै ॥
होरिला हुआ चाँद-सूरज,
अरी मैया बेटा हुआ चाँद-सूरज ।
तो बच्चा की माये जनी ,
अलबेलरि सोहागिन मात बनी ॥
अब मोहर की थैली खोलो,
अरी मैया मोहर की थैली खोलो ।
जच्चारानी नेग देवै. ,
अलबेलरि सोहागिन नेग देवै ॥
अब जीवे तेरा लाल,
अरी मैया जीवे तेरा लाल ।
जच्चारानी बाँस बढे . ,
अलबेलरि सोहागिन बाँस बढै ॥

जच्चा रानी का सौंदर्य अप्रतिभ है। उनके एक-एक अंग से रूप बरस रहा है। लगता है, जैसे नगर के किसी चतुर स्वर्णकार ने उनकी रचना की है। भगवान् ने जच्चा को अनुपम लावण्य प्रदान किया है। धन्य है उसकी सुहागिन जननी, जिसने उसे जन्म दिया।

जच्चा रानी का सिर नारियल के गोले की तरह सुघर और सुन्दर है। ललाट पूर्णिमा के चन्द्रमा की भाँति कान्तिमान है। आँखे आम की फाँक जैसी है। अनार के दानों की भाँति उसके दाँत है। गुलाब के फूल जैसे ओठ और समुद्र की सीप जैसे कान है, तोते की टोट जैसी नाक है। रेशम के लच्छों जैसे केश हैं। फूलों की छड़ी की तरह हाथ है। पीपल के पत्ते जैसी हथेलियाँ है। मूँगफली जैसी उँगलियाँ है। धोबी के पाट के समान पीठ है। कदली-खम्भ जैसी जाँघे हैं। कमल के फूल जैसे उरोज है।

जच्चा का पेट गोलाकार और चारों ओर से भरा पूरा है। नाभि की सुन्दरता और भी अधिक मनोरम है।

पेट के भीतर सुल्तान (बच्चा) है। दरवाजे पर सम्बन्धियो की सेना खड़ी है।

जच्चा रानी कैसी बहादुर है। बिना म्यान-तलवार के ही उसने जग फतह की है। सुलतान (पेट का बच्चा) बाहर निकल आया (पैदा हो गया)। सम्बन्धियों की फौज तितर बितर हो गई।

वह मुँह में पान कूँच रही है। चादर पर पान की पीक पड़ गई है। प्यारे बेटे, धोबी तुम्हारा बाप लगता है। वह चादर साफ कर देगा।

इतना गाकर सुनाया। फिर भी जच्चा रानी हिलती-डुलती नहीं।

जच्चा ने चन्द्रमा और सूर्य जैसे तेजवान् पुत्र रत्न को जन्म दिया है। मुहरों की थैली खोलकर जच्चा रानी सब को नेग दे रही हैं। सब आशीर्वाद देते हैं—"जच्चा रानी, तुम्हारे लाल की लम्बी उम्र हो। तुम्हारे वश की वृद्धि हो।"

(२८)

कौन मास फूली करैली, कौने मास बहुआ गरभ से,
लाले हालरा!
सावन मास फूली करैली, भाँदो में बहुआ गरभ से।
लाले हालरा!

कोठे ऊपर कोठरी, नन्दा चढी है झपट कै,
लाले हालरा !
भौजी काहे तोर मुँहना पियरान बा।
लाले हालरा !
काह कहूं मोरी ननदी, कहा नही मोसे जाय,
तोरे भइया मोरे आँचर में पीक डाला, लाले हालरा !
वह तो बन्शा बढावन कइ डाला, लाले हालरा !
छोटकी ननदिया बडी हलबुलही, लाले हालरा !
वह तो बुढिया से जाइ लगावा, लाले हालरा !
बुढिया बडी हलबुलही रे, उ त बुढऊ से जाइ लगावा,
बुढऊ बड़े बुलबुलिया रे,वह तो पडित को लागे बुलावा।
लठिया ठेगत आवइ पडितवा, वह तो पोथी बिचारै,
बहुआ देखौ तुम्हारा रास गिनाउ रास कि,
लाले हालरा !
बहुआ बडी कुलच्छनी हो तुमरे होइहै बिटिया,
लठिया ठेगत पडित घरवा न पहुँचे कि होरिला ने जन्म सुनाया,
ससुरू बडे चालबजिया रे वह तो फेरि पडित को बुलावा,
लाले हालरा !
लठिया ठेगत अरे आया बुढौना रे, ओ तो पोथी भी साथ
लै आया, लाले हालरा !
चौका चढि अरे बैठे बलय जी पडित ने रास गिनाया,
तेरा होरिला हुआ सुलताना औ भागवाना।
बेटा रास गिनाई मोरा नेग पाच मोहर दिलवाना,
अरे भीतर से बहुआ बोली झडप के सुन पडित।
तब तो कहेव तोरे होइहैं धेरिया, लाले हालरा !
अरे हमरे बखरिया में कोदो के चाउरा, लाले हालरा !
अरे वोही बभनवा के नेग रे, लाले हालरा !
हमरे पेटरिया में फटही लुगरिया से वोही पडित के देउ।

हमरे खजाने में खोटा रुपइया वही-बुढौना क नेग रे,
लाले हालरा !
कोदो देउ बहू गइया-बछेरू तुम तो हो वश बढावन !
फटही लुगरिया नउनिया क देउ, तुम तो हो बहुआ लखरनियाँ,
खोटा रुपइया रक्खो अपने पेटरिया, वह तो बिगडे में आवे तेरे काम।
लाले हालरा !
बहू पाँच मोहर मेरा नेग, असरफी दुई माँगौ,
लाले हालरा !
सभवा से आय ससुर कहन लागे, मेरी बहुआ तो है कुलतारन।
बहुवा देव तौ होरिलवा खेलाई वहै दुलराई, लाले हालरा !
बहुवा देवौ मैं सरबस राज, लाले हालरा !
बहू देऊ न पडित का नेग बुढौना का जोग लाले हालरा !
पडित क दीहिन हासिल घोडा पाँच मोहर उनका नेग,
लाले हालरा !
जुग-जुग जिओ जच्चा बच्चा जी जुग जीओ परिवार,
लाले हालरा।

किस महीने मे करैली में फूल आये ? किस महीने में बहू ने गर्भ धारण किया ?

सावन के महीने में करैली मे फूल आये। भादो मे बहू ने गर्भ धारण किया।

कोठे पर एक कोठरी है। ननद झपट कर ऊपर पहुँची। गर्भवती भाभी से बोली—"भौजी, क्यो तुम्हारा मुँह पीला पड़ गया है ?"

"मेरी ननद, क्या बताऊँ ? कुछ कहते नहीं बन रहा है। तुम्हारे भाई ने मेरे आँचल पर पान की पीक का दाग लगा दिया। उन्होने अपने वश का गर्भ मुझे सौंप दिया।"

छोटी ननद बड़ी जल्दबाज है। बूढ़ी सास भी बड़ी जल्दबाज है। चटपट उसने बूढे ससुर को खबर दी। बूढे ससुर भी कम जल्दबाज नहीं। वे जाकर पण्डित बुला लाये, लाठी टेकता हुआ पण्डित आया। पत्रा खोलकर राशि और

नक्षत्र का विचार करने लगा। बहू से पूछा—"तुम अपनी राशि का नाम तो बताओ ! देखूँ, तुम्हारे गर्भ मे क्या है ?"

पुरोहित ने भविष्य वाणी की—"तुम बहुत कुलक्षणी हो। तुम्हारे लड़की पैदा होगी।"

लाठी टेकते हुए पण्डित अपने घर तक नही पहुँच पाया था, तभी पुत्र का जन्म हुआ। ससुर बड़े चतुर हैं। उन्होने फिर पण्डित को बुला भेजा। लाठी टेकता हुआ वृद्ध पण्डित पुनः पोथी-पत्रा साथ लेकर आया। पति पीढे पर बैठ गया। पण्डित ने राशि विचार किया। बताया—"तुम्हारा पुत्र बड़ा भाग्यवान् है। वह राजा बनेगा। और हाँ, राशि बताने के उपलक्ष्य मे तुम मुझे पाँच मुहरे दक्षिणा मे दो।"

भीतर से बहू तड़पकर बोली—"बूढे पण्डित सुन, उस समय तो तुमने बताया कि लड़की होगी। मेरे घर कोदो का चावल है। वही तुम्हे दक्षिणा मे दिया जायेगा। पेटारी मे फटी लुगरी है। खजाने मे खोटा रुपया है। वही सब तुम्हे नेग मे मिलेगा।" पण्डित ने उत्तर दिया—"बहू, कोदौ का चावल गाय बछड़ो को दो। तुम तो वश वृद्धि करने वाली हो। फटी लुगरी नाइन को दे दो। तुम तो लाखो की स्वामिनी हो। खोटा रुपया अपनी पिटारी मे ही पड़ा रहने दो। कुसमय मे काम देगा। तुम मुझे दक्षिणा मे पाँच मुहरे और दो अशर्फियाँ दो।"

ससुर जी सभा से उठकर आये। बहू से विनती करने लगे—"मेरी बहू तो कुल को पवित्र करने वाली है। बहू, मै पुत्र-जन्म के हर्ष मे सबको नेग दूँगा। अपना सारा राज-खजाना बाँट दूँगा। बहू, तुम स्वय ही प्रसन्न होकर पण्डित को दक्षिणा दो।"

पण्डित को नेग मे एक हासिल घोड़ा और पाँच मुहरे मिलीं। प्रसन्न होकर उसने आशीर्वाद दिया—"जच्चा, बच्चा और परिवार के सभी प्राणी युग-युग जियें।"

(२६)

लागत मास असाढ पिडुलिया मोरी काँपई हो,
ऐ हो लगि गै करैली में फूल मन ही मन बिहसई हो।
लालन-धनिया बोलावई अरे जाँघ बइठावई,
रनिया कौने भोजन कर साध कौन मन भावई हो ?

सकल पदारथ मोरे घर एकहु न भावे रे,
राजा दाख बदाम छुहारा नारियल मन भावई हो ।

लालन धनियाँ बोलावै बहुत समझावई,
रनियाँ कौने पलग कर साध कौन मन भावै हो ?

पलगा तो ठीक चनन का बिनवा रेशम का,
गोदिया तो नीक तुम्हार सवत नही भावहिं हो ।

लालन धनियाँ बोलायेन जाँघ बइठायेन हो,
रनिया कौने राज कर साध कौन मन भावन हो ?

राज तो नीक ससुर, कर अपनी सास कर,
राजा, कोट तो नीक देवर का झगडा ननद कर हो ।

लालन धनियाँ बोलायेन जघा बइठावई हो,
रनियाँ कौने चौक कर साध कौन मन भावै हो ?

चौक तो ठीक मोतिन कर, कलसा सोने कर हो,
गाठी तो नीक पुरुष कर, वेद पडित कर हो ।

लालन धनियाँ बोलायेन जँघा बइठायेन हो,
रनियाँ कौन रगित कर साध कौन मन भावई हो ?

लहगा तो नीक कसब कर, चुनरी कुसुम कर हो ।
राजा अँगिया तो ठीक फुलझरिया बदरिया सुहावन हो ।।

अषाढ़ मास लगते ही मेरी पिण्डली कॉपने लगी । करइली मे फूल आ गए । यह अत्यन्त शुभ लक्षण है । भीतर-ही भीतर जच्चा बहुत पुलकित हो रही है ।

पति ने पत्नी को पास बुलाया । अक मे बिठाकर पूछा—"रानी, तुम्हे किस भोजन की साध है ? तुम क्या पसन्द करोगी ? मेरे घर मे सभी पदार्थ मौजूद हैं । क्या तुम्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता ?"

"प्रियतम, मुझे अनार, बादाम और नरियल अच्छे लगते है ।"

पति ने आगे पूछा—"तुम कैसे पलग पर शयन करना चाहती हो ?"

"पलग चन्दन का होना चाहिए । वह रेशम की डोरियो से बिनी हो । प्रियतम, गोद तो तुम्हारी ही अच्छी लगती है । सवतों से मुझे बड़ा डाह होता है ।"

"प्रिये, किसका शासन तुम्हें प्रिय है ?"

"शासन अपने ससुर, सास और देवर का अच्छा लगता है और ननद की तकरार भली मालूम होती है ।"

पति ने आगे पूछा—"कैसा चौक तुम्हें सुहाता है ?"

"चौक मोतियों का हो । कलश सोने का हो । अपने पति की गॉठ अच्छी लगती है और पण्डित का वेदोच्चारण शोभा देता है ।"

"रानी, तुम्हे किस रग के कपड़ो की साध है ?"

"प्रियतम, मुझे कसब का लहँगा अच्छा लगता है । कुसुम-रग की चूनर प्रिय लगती है । बेल-बूटेदार अँगिया हो और इन समस्त वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होने पर बरसाती मौसम हो तब तो और ही अच्छा है ।"

(३०)

अँगने में तुलसा लगायेऊॅ मॉगन एक मागेऊँ,
तुलसा हमरे सम्पति के साध सम्पति हम लेबई ।

केहु के दिह्यो तुलसा सात-पाँच केहु के दुई चार,
तुलसा तुम्हरा मैं काह बिगाडेऊॅ, होरिल नहि पायेऊॅ ।।

तुमरइ पुरुष अधरमी, धरम नहिं जानइ हो ।
बेडई अवधपुर की मइया बम्हन देखि दुलछै ।

सौ-साठ गइया मगावऊँ मैं अब ही संकलपऊँ,
दूधवा की खिरिया बनाऊॅ मैं बम्हना जिवाऊँ ।।

बाम्हन जेवई नहि पावइ बहुआ गरभ से,
आठ मास नौ लागे, होरिल जनमे ।

बजै लागी अनन्द बधइया गावइ सखी सोहर,
मचिये बैठी सासु त बहुआ अरज करै ।

तुलसा दिहेन नन्दलाल मैं पियरी चढउबेऊँ,
एक हाथ लिहेन पियरिया दूसर हाथ नरियर।
बहुआ झपटि के चली मदिरवा तुलसा चढावई,
पूजा-पाठि करि जब लौटी तो तुलसा असीसै ॥
बहुआ, बाढइ तोरे माँग का सेधुर जिऊई तोरा होरिल!

आँगन मे मैंने तुलसी का बिरवा आरोपित किया। एक वरदान माँगा—"मा तुलसी, मुझे एक सम्पत्ति की कामना है। आपके आशीर्वाद से वह सम्पत्ति पाना चाहती हूँ। किसी को आपने-सात पाँच पुत्र दिए, किसी को दो-चार, मैंने क्या बिगाड़ा था कि मुझे एक भी पुत्र नहीं मिला?"

तुलसी ने उत्तर दिया—"तुम्हारा पति पापी है। धर्म करना नहीं जानता। अवध नगर की गायों को सताता है और ब्राह्मणों के साथ दुष्ट व्यवहार करता है।"

पत्नी ने प्रायश्चित स्वरूप निश्चय किया—"मैं अभी ही साठ सौ गायें मँगा कर गोदान करूँगी। दूध की खीर बनाकर ब्राह्मण को भोजन कराऊँगी।"

ब्राह्मण भोजन समाप्त भी नही कर सके थे कि बहू गर्भवती हो गयी थी। आठवे के बाद नवा महीना लगते ही पुत्र का जन्म हुआ। आनन्द के बाजे बजने लगे। सहेलियाँ सोहर गाने लगीं।

सास मचिया पर आसीन थी। बहू ने विनती की—"तुलसी की कृपा से ही मुझे पुत्र प्राप्त हुआ है। मै उन्हें पियरी चढ़ाऊँगी।"

एक हाथ मे पियरी और दूसरे हाथ मे नारियल लेकर बहू पूजा के लिए तुलसी के मन्दिर की ओर चल पड़ी। पूजा समाप्त कर जब लौटने लगी तो तुलसी ने आशीर्वाद दिया—"बहू, तुम्हारी माँग का सिन्दूर बढ़े। तुम्हारा पुत्र चिर-जीवी हो।"

(३१)

जौ मैं जनतिऊँ तहिया की बहुआ गरभ से,
अँगने में सोठवा बोअउतिऊँ खिडिकिया में मधु पीपर।
घोडनी का दँनवा दरइतिऊँ, भइसिया के खेहुड,
चेरिया का गुड सोठ बहुआ का मधु-पीपर ॥
घोडनी पैजानी घोड सरिया, भँइस कुस ढाभर,
चेरिया पैजानी बरोठवा, बहुआ गज ओबर।

घोडवा पूतवा चढन के, भइसी दूहन को,
चेरिया के पूतवा गुलाम, बहुआ राजबशी ॥

सास कह रही है कि यदि मै पहले से ही जानती होती कि बहू गर्भवती है, तो आँगन मे सोंठ और खिड़की मे मधु पीरर बुवाती ।

घोड़ी के लिए दाना दरवाती । भैस के लिए खेहुड़ बनवाती । चेरी के लिए गुड, सोठ तथा बहू के लिए मधु-पीरर बनवाती ।

घोड़ी ने घुडसार मे घोड़े को जन्म दिया, भैंस ने घास-फूस मे प्रसव किया । दासी ने ओसारे मे प्रसव किया और बहू ने सूतिका गृह में पुत्र को जन्म दिया ।

घोड़ा मेरे पुत्र की सवारी के लिए है । भैंस दूध देने के लिए है । दासी मेरे पुत्र की गुलामी करने के लिए और बहू मेरी वश-परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए है ।

(३२)

चलौ न सखिया सहेली जमुना जल भरई,
जमुना का निरमल पानी कलश भरि लाई ।
कोई सखी हाथ-मुख धोवई, कोई सखी जल भरईं,
कोई सखी ठाढि तवाईं तिरिया एक रोवई हो ॥
कि तुम्हहि सास-ससुर दुख कि नइहर दूर बसै,
कि तोर हरि परदेश कौन दुख रोवऊ ?
ना मोरे सास-ससुर दुःख, ना नैहर दूर बसैं,
ना मोरे हरि परदेश, कोखिया दुख रोवऊँ ॥
न रोउ तिरिया तू न रोऊ, जिया समझावऊ,
लै लेऊ हमरा होरिलवा, आपन कारि राखऊ ।
नूनवा तो मिलइ उधार तेल व्योहारवा न,
सखिया कोखिया के कौन उधार, जबै राम देइहै तबे हम लेइई ॥
मोरे पिछवडवा बढइया, बढइया मोर भइया,
भइया गढि लावो काठे कै पुतरिया, मैं जिया समुझावउ ।
तेलवा लगायों फुलेलवा खटोलवा सुतायो,
पुतरि तनी रोइ के सुनाओ, ब झिन घर सोहर हो ॥

सूनै नगरिया के लोग बझिन घर सोहर,
रनियाँ मैं तो काठे के पुतरिया कैसे रोइ के सुनावऊँ ।

तिरिया बगिया मे जाइके आज सूरजा मनावऊ,
वहि तोहिं देइहैं होरिलवा तो जिआ जुडवायऊ ॥

सखी—सहेलियो, चलो न, यमुना जी से जल भर लायें। यमुना नीर बहुत निर्मल है। चलो घड़े भर लायें !

कोई सखी हाथ-मुँह धोने लगी। कोई पानी भरने लगी। कोई घाट पर ही खड़ी रही, किन्तु एक स्त्री फूट फूट कर रोने लगी।

"क्या तुम्हे सास-ससुर का दुख है, अथवा नैहर दूर पड़ता है ? अथवा तुम्हारा पति परदेस गया है ? किस दुख से तुम रो रही हो ?"

"मुझे सास-ससुर का दुख नही है। नैहर भी दूर नहीं पड़ता। मेरा पति भी परदेस नहीं गया है। मे केवल कोख के दुःख से रो रही हूँ।"

एक सखी बोली—"अरे स्त्री रो मत ! धैर्य धारण कर। तू मेरा पुत्र ले। अपना ही समझ कर इसका पालन कर।"

स्त्री ने उत्तर दिया—"सखी, नमक तो उधार मिल जाता है। तेल भी व्यवहार मे मिल जाता है। किन्तु, भला कोख का कैसा उधार ? जब भगवान् पुत्र देंगे, तभी लूँगी।"

पुत्रहीन अबला रोती हुई घर लौटी। बढ़ई को बुलाने लगी—"मेरे पिछवाड़े रहने वाले बढ़ई, तुम मेरे भाई हो। मेरे लिए लकड़ी की एक पुतली बना दो। उसी से बोध करूँगी।"

माँ ने पुतली को तेल लगाया। फुलेल लगाया। खटोले पर सुला दिया, उससे कहा—"पुतली, तनिक तुम शिशु की भाँति रोओ तो ! मुझ बाँझिन के घर मे भी सोहर होने लगे। नगर-निवासी सुन लें कि मेरे घर मे भी सोहर हो रहा है।"

पुतली बोली—"रानी, मै तो काठ की बनी हूँ। भला कैसे अपना रोदन सुना सकती हूँ ? तुम बाग मे जाओ। सूर्य भगवान की आराधना करो। वही तुम्हें पुत्र देंगे, जिससे कि तुम्हारा कलेजा शीतल होगा।"

(३३)

चन्दना काटौ मैं पलँगा बिनायेउँ रेशम डोर लगाइया।
मैं वारी सैंया रेशम डोर लगाइयाँ ॥
सो पलगा चढि सोवै कौन रामा नाजो डोलावइ रसबेनिया ।
मै वारी सैया रेशम डोर लगाइयाँ ॥

हाथे की बेनिया भुइया गिरी है आइ झमाके की निदिया।
मैं वारी सैया आइ झमाके की निदिया ॥
मागे के होइ जो माँगो सोहागिन आज मागन की है बेरिया।
मैं वारी सैया आजु मागन की है बेरिया ॥
सास-ससुर का राज मागै देवरा जेठानी की जोडिया।
मैं वारी सैया देवरा जेठानी की जोडिया ॥
छेज्जन-छुज्जन लाल खेलै आगन-खेलै मेरो भाजा।
मैं वारी सैया आगन खेलै मेरो भाजा ॥
आवन-जावन नन्दी मागइ इतना नन्दोइया मेरो पाहुना।
मैं वारी सैया इतना नन्दोइया मेरे पाहुना ॥
गौरी का सुहाग माँगई शिव-शकर पति पाइयाँ।
मै वारी सैया शिव-शकर पति पाइया ॥
इतना मँगन तुम मागउ सुहागिन जो विधि पुरवै सो पाइया।
मै वारी सैयाँ जो विधि पुरवै सो पाइया ॥

चन्दन काट कर मैंने पलग बनाया। रेशम की डोर लगवाई। उस पर लेट कर अमुक पति सो रहा है। प्रिया पखा झल रही है। पत्नी को सहसा नींद आ गई। हाथ का पखा जमीन पर गिर पडा।

पति बोला—"सुहागिन! तुम्हें जो माँगना हो, मागो! आज माँगने की बेला है।"

"मैं सास-ससुर का राज चाहती हूँ देवर और जेठानी की जोड़ी चाहती हूँ। छुज्जे-छुज्जे पर मेरा पुत्र खेले, आँगन मे भाँजा खेले। ननद आने-जाने का नेग माँगे। ननदोई मेरा पाहुना बन कर आवे। पार्वती माता का-सा सुहाग मिले और शकर जैसा पति।"

"सुहागिन, इतने वरदान तुम माँग रही हो! विधाता यदि चाहेगा तो वह तुम्हें प्राप्त होगा।"

इस प्रकार सकेत पुत्र होने का वरदान मिल गया।

———

शिशु जन्म

जनमउ न जनमउ होरिलवा मोरे दुखिया घर,
उजडी नगरिया बसावउ हमई जुडवाउ हो।

कइसे क जनमउ मोरि मैया तोरे दुखिया घर,
टुटहे खटोलवा पौढइबिऊ, का गोहरइबिउ हो।

जनमउ न जनमउ होरिलवा मोरे सुखिया घर,
सोने का खटोलवा पौढउबै ललन कहि गाउब हो।

भोर होत पौ फाटत होरिला जनम लिये,
बाजै आनन्द बधइया, गावै सखि सोहर हो।

एक उदास मा सन्तान की कामना करती है। वह कहती है मेरे होरिल, तुम मुझ दुखिया के घर जन्म लो। मेरे हृदय की उजड़ी नगरी को बसा दो और मेरे तन-मन को शीतल कर दो।

होरिल कहता है—मेरी मा, मैं तुम दुखिया के घर कैसे जन्म लू ? तुम तो मुझे टूटे खटोले पर सुलाओगी और फिर मुझे यह भी पता नहीं कि तुम मुझे क्या कह कर पुकारोगी ?

माँ ने जवाब दिया—मैं सुखिया हू बेटे, तुम मुझ सुखिया के घर जन्म लो। मैं तुम्हें सोने के खटोले मे सुलाऊँगी और तुम्हें ललन कह कर पुकारूँगी।

प्रातः कालीन अरूणिमा के छिटकते ही मा की कोख से बेटा पैदा हो गया, आनन्द की बधाइया बजने लगीं और सभी सखिया मगलमय सोहर गाने लगीं।

(३५)

नन्द महल आज बहुत अनन्द श्याम मनोहर गाइये।
काहे के हसुआ नारा छिनाऊँ, काहे के खप्पर नहवाइये ?
काहे के अँगौछा-अगोछौ अँग, काहे के पलन पौढाइये ?
सोने के हँसुआ मैं छीनँउ नारा, रूपे के खप्पर नहवाइये॥

पीतम्बर अग अगोछौ सोने पाटे पलग पौढाइये,
घर मोरे सोहर पिया परदेश कैसे मैं रोचना पहुँचाइये ।
नउवा अउ बरिया हे बेगि चलि आवउ,
पिया को मैं रोचना पहुँचाइये ॥
नउवा जो रोचना दिया है लिलार,
रहस जानि चले राजा रामचन्द ।
नउवा के दिह्यो हासिल घोड,
बरिया के तोडा गढवाइये ।
धन रे महल जहा बाजत ढोल,
धन रे सोहागिन जहाँ गाइये ॥

नन्द बाबा के घर मे आनन्द मनाया जा रहा है क्योकि आज श्याम पैदा हुये है । इसलिए सभी सखिया मिल कर बधाई के गीत गा रही हैं ।

यशोदा जी कहती है—किस चीज के हसुआ से नारा काटा जाय ? किस धातु के बर्तन मे बच्चे को नहलाया जाय ? किस कपड़े के गमछे से उनका तन पोंछा जाय ? किस चीज के बने पालने मे उनको लेटाया जाय ? मै सोने के हसुआ से उनका नारा काटूँगी और चादी के बर्तन मे उनको नहलाऊँगी । पीताम्बर से उनका तन पोछूँगी और सोने की पाटियों वाली पलग पर उनको सुलाऊँगी ।

इस हर्षोल्लास के बीच ही उनको याद आता है कि पति तो परदेश मे है और घर मे सोहर गाया जा रहा है । सोचती है पति के पास रोचना कैसे भेजू ? फौरन कहती है—"हे नाऊ, बारी ! तुम लोग तुरन्त आओ । मै अपने पति के पास पुत्र-जन्म का सदेश भेजना चाहती हूँ । तुम उसे लेकर फौरन जाओ ।"

नाई ने रामचन्द्र के (रामचन्द्र का अर्थ येहा पति है) माथे पर रोचना लगाया । वह बहुत प्रसन्न हुये । उन्होंने नाऊ को घोडा दिया और बारी को तोडा गढ़वा दिया और महल की ओर चल पड़े ।

धन्य है वह घर जहाँ सोहर का ढोल बजता है और धन्य है वे सुहागिनें जो वहाँ जाकर सोहर गाती हैं ।

(३६)

गोकुल बाजत बधइया तो नद घर सोहर हो,
रामा जनमे है दीनदयाल दुवउ कुल राखन हो ।

कपिला दूध दुहाएउ, ललन नहवाएउ हो,
पीत पीतम्बर अग-अगौछेउ सिहासन बइठाएउ॑ हो ॥

लालन पाँउ पैजनियाँ तो रुन-झुन बाजइ हो,
कमर करधनियाँ रतन जडाउ तो कठुला बिराजइ हो।

लालन नैन कजरवा बहुत निक लागइ हो,
दिया है बुआ सुभद्रा तउ रचि के सँवारेउ हो ॥

लालन झाँग - झँगुलिया बहुत निक लागइ हो,
रतन जडाऊ की टोपी छबि भल सोहइ हो।

लालन हाथ लकुटिया बहुत निक लागइ हो,
भाल तिलक भल सोहइ बहुत छबि लागइ हो ॥

मइया के प्रान अधार बहिनिया के बधन,
अपने नद बबा के नयनवा जुडावै हो।

मोर मुकुट पीताम्बर मुरली अधर पर हो,
रामा देखि मुरत मन भावइ बिसरि दुख जावइ हो।

जे यह मगल गावँइ अरे गाइ सुनावँइ हो,
रामा कटि जैहैं जनम के पाप सुनवइया फल पावँइ हो।

गोकुल मे बधाई बज रही है। राजा नन्द के घर मे सोहर हो रहा है। दोनो कुलो के रक्षक, दीन दयाल भगवान् कृष्ण ने जन्म लिया है।

कपिला गाय के दूध से कृष्ण को स्नान कराया गया है। पीताम्बर से शरीर पोंछ कर उन्हें सिहासन पर बिठाया गया। उनके पैरों मे रुनझुन करते हुए नूपुर बज रहे है। कमर मे रत्न जटित करधनी और गले मे कठुला सुशोभित हो रहा है।

कृष्ण की आँखो मे काजल बहुत सुन्दर लग रहा है। बुआ सुभद्रा ने इसे कलात्मक ढग से लगाया है।

कृष्ण के शरीर पर झाँग और झँगुलिया बहुत सुन्दर लग रही है। सिर पर रत्न जटित टोपी की शोभा वर्णनातीत है।

कृष्ण के हाथ मे लाल छड़ी बहुत अच्छी लग रही है। मस्तक पर तिलक की शोभा और भी अधिक मनोहारिणी है।

वह अपनी माँ के प्राणों के आधार है, बहन के स्नेह बन्धन मे बँधे रहने वाले और बाबा नन्द के नेत्रो को अपरिमित शीतल प्रदान करने वाले है।

जो स्त्रियाँ यह मगल-गीत गाती है और गा कर दूसरे को सुनाती है, उनके जन्म भर के पाप विनष्ट हो जाते है। सुनने वालो को भी इससे असीम फल प्राप्त होता है।

(३७)

केकरि ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो,
केकर रोवै होरिलवा तउ महलिया अनन्द भए हो ?
राजा दशरथ ऊँची महलिया, तउ मानिक दीप बरइ हो,
राजा दशरथ के रोवै होरिलवा, तउ महलिया अनद भये हो ॥
केकरे पुतवा के पूत भये, केकरे नाती भये,
केकरि धेरिया जुडानी, तउ मानिक दीप बरइ हो ?
राजा दशरथ पुतवा के पूत भये, कौसल्या देइ के नाती भयें,
राजा जनक धेरिया जुडानी, तउ मानिक दीप बरइ हो ॥
हँसि के उठा हइ बेटवना बिहँसि के पतोहिया,
खम्भा ओटे ठाढी कौसल्या देई जनम सुफल भये हो।
भल किह्यो बहुआ मोरी कि भल रे बेटवना हो,
मोरा दुनउँ कुल भयेनि अँजोर पितर सब तरि गये हो ॥
नेवतउ चाद सुरुजवा, नेवतउ सातउ बहिनिया हो,
रामा नेवतउ कुल परिवार तउ जगि मँई रोपउँ हो।
अब बाजन लागे बधइया, उठन लागे सोहर हो,
रामा दान करत राजा दशरथ तउ पुतवा के पूत भये हो ॥
जे यह मँगल गावँइ, अरे गाई के सुनावँइ हो,
रामा जुग-जुग जीवै होरिलवा सुफल फल पावँइ हो।

किसके ऊँचे महल मे मणियो के दीपक जल रहे है? किसका पुत्र रो रहा है और कहाँ आनन्दोत्सव मनाया जा रहा है?

राजा दशरथ के ऊँचे महल मे मणियों के दीपक जल रहे है। उन्हीं का पौत्र रो रहा है और वहीं आनन्दोत्सव मनाया जा रहा है।

किसके पुत्र का पुत्र और किसका नाती पैदा हुआ है? किसकी कन्या क हृदय शीतल हुआ है?

राजा दशरथ के पुत्र (राम) का पुत्र और कौशल्या का नाती पैदा हुआ है। राजा जनक की कन्या (सीता) का हृदय शीतल हुआ है।

हँसते हुये राम खड़े हैं। आनन्द मग्न होती हुई सीता खड़ी है। खम्भे व आड़ मे कौशल्या देवी खड़ी है। सब आज अपना जन्म सार्थक मान रहे है।

कौशल्या जी सीता से कह रही हैं—"बहू आज तुमसे बहुत उत्तम का बन पड़ा है। मेरे पुत्र राम ने भी उत्तम कार्य सम्पादित किया है। मेरे दोन कुल आज प्रकाशित हो उठे है और स्वर्ग लोक मे पितरो को भी मुक्ति प्रा हो गई है।

चन्द्रमा और सूर्य को निमन्त्रित करो। सातो बहनो के साथ दुर्गा माता क निमन्त्रित करो। कुल और परिवार के समस्त सम्बन्धियो को बुलाओ। मै आज यज्ञ का अनुष्ठान करूँगी।

बधाइयाँ बजने लगी। सोहर गाये जाने लगे। राजा दशरथ नाती उत्पन्न होने के उछाह मे सब को दान दे रहे है।

जो स्त्रियाँ यह मगल-गीत गाती है, गाकर दूसरो को सुनाती हैं, उनकी सन्ताने दीर्घायु होती हैं और जीवन के सुन्दर फल उन्हें सुलभ होते है।

[यद्यपि दशरथ के जीवन-काल मे और अयोध्या के राज-प्रासाद मे सीता पुत्रवती नहीं हुई थीं, किन्तु लोक गीतो में इस प्रकार की कल्पनायें यो ही कर ली जाती है।]

(३८)

भँगिया के अमली महादेव, भँगिया भँगिया करै।
भँगिया घोटत अलसानी तउ छिन में बिकल भये।
लाओ न हमरा बाघम्बर पाट—पटम्बर।
नन्दी बैल असवार चले हैं झारिखन्ड।
की भोला भँगिया चोरायेऊँ की भभूत गिरायेऊँ,
की भभूति गिरायेऊँ रे?
कौन तपसिया में चूकेउँ, चले हो झारिखन्ड रे?
ना गउरा भँगिया चोरायेउ न भभूतिया गिरायेउ।

भँगिया घोटत अलसानिउँ, तो छिन में विकल भएउ रे।
तुम भोला जोगिया फकीर मरम नहिं जानउ।
गनपति लीन अवतार, तो छिन में विकल भएउँ,
छिन में विकल भएउँ रे।

भाँग के आदी भगवान् शकर भाँग-भाँग चिल्ला रहे है। भाँग घोटते समय पार्वती जी अलसा गयीं। भगवान् शकर क्षण भर मे ही विकल विह्वल हो उठे। क्रुद्ध होकर पार्वती से बोले—"मेरा व्याघ्र चर्म और पीताम्बर ले आओ। अब मै अकेले झारखड वन मे चला जाऊँगा।"

पार्वती जी ने काँपते हुये पूछा—"भगवान्, मैने भाँग चुरा ली अथवा मुझसे भभूत गिर पड़ी? मेरी कौन सी तपस्या खोटी पड़ गयी, जिसके कारण आप झारखण्ड चले जायेगे?"

शकर जी बोले—"पार्वती, न तो तुमने भाँग चुरायी और न तुम से भभूत ही गिर पड़ी। वास्तव मे तुम भाँग घोंटते समय अलसा गयी और इसी कारण क्षण भर मे ही मेरा मन क्षुब्ध हो गया है।"

पार्वती जी ने सफाई दी—"भोले शकर, तुम जोगी फकीर ठहरे। मर्म की बातों का तुम्हे तनिक भी ज्ञान नहीं है! तुम्हे जानना चाहिये कि मेरी कोख से अभी अभी गणेश जी ने अवतार लिया है, इसीलिए एक क्षण मै अलसा गयी थीं।"

(३६)

बन बीच बैठी मोरि सीता, चुवत ढुर ढुर आँसू रे।
मोरी माया, ना कोऊ अब मोरे आगे, कोऊ पाछे रे।

उमडि - घुमडि पीर आवइ, कमर मोरि टूटत हो।
मोरी माया, विधि कर बाधी गठरिया, त कर कर टूटइ हो।

भोर होत लोहा फाटत, होरिल मोरे जन्मेनि हो।
मोरे पूत तार उन दुनउ कुल डेहरी, अजोधिया नगरिया हो।

आवउ न बन की सखिया, बेगि चलि आवउ अगन मोरे।
मोरी सखि गावहु मगल चार ललन जी के जनमे रें।

निर्जन कानन मे सीता जी अकेली बैठी है। उनके नेत्रो से आँसुओं की अविरल धाराये प्रवाहित हो रही है। वे सोचती है—"यहाँ मेरे आगे-पीछे कोई भी मेरी देख-भाल करने वाला नही है। उमड-घुमड कर मेरे उदर मे पीडा हो रही है। कमर टूटती जा रही है। ईश्वर द्वारा बाँधी हुई गाँठें एक-एक कर ढीली पड़ती जा रही है। यहाँ कौन मेरी रक्षा करेगा? कौन मेरी नवजात सन्तति की देख भाल करेगा?"

"प्रातःकालीन अरुणिमा के फैलते ही मेरी कोख से पुत्र का जन्म हुआ। मेरे पुत्र, तुम्हारे जन्म से मेरे पिता और ससुराल के दोनों कुल पवित्र हो गये। अजोध्या नगरी धन्य हो गयी।"

"वन की मेरी सहेलियो, आओ! बहुत शीघ्र दौड़ कर मेरे पास आओ! आज पुत्र रत्न प्राप्त कर मेरा हृदय गद्गद् हो उठा है। इस हर्षोल्लास की वेला मे तुम सब मगल गीतो से समस्त दिशाओ को गुजित कर दो।"

मधु चटावन (४०)

नदिया तउ गहबरि भरि गयी सीता के रोये से हो,
बन पात सब झरि लागे तउ सीता के रोये से हो।
जउ हम होइति अजोधिया, सासु मोरि होतिन हो,
लेती होरिलवा उठाई, त ऊ भुइया नहि लोटत हो।
जो हम होइति सासु की कोठरिया, त उ मधुवा चटउतिन हो,
बन बीच जनमे होरिलवा तो मधु नहिं पावहि हो।
अब कइसे क मधुवा चटावऊँ, ओ लिखवाऊँ हो,
कइसे क करउँ अजोरवा, होरिल मुख देखउँ हो।
रिम-झिम बरसत दइया, दमिनि चहुँ चमकइ हो,
मोरी सीता देखउ त सन्तति के मुहवा होरिल बड सुन्दर हो॥

सीता जी अकेली निर्जन वन मे है। इसी समय उन्होंने पुत्र-प्रसव किया है। आज वे अयोध्या के अपने राज-प्रसाद मे होती तो न जाने क्या-क्या होता। अपनी असहाय दशा का स्मरण करते हुए उनके नेत्रो से आँसुओ की वर्षा होने लगती है। उन्हीं क्षणों का एक अत्यन्त मार्मिक और हृदयबेधी चित्र है—

सीता जी के रोने से अगम अथाह नदियाँ भर गईं। जगल के वृक्षों के सारे पत्ते झड़ गए।

वे स्मरण कर रही है, यदि मे अयोध्या मे होती तो सास मेरे नवजात पुत्र को गोद मे उठा लेतीं। वह इस समय की भाँति नगी भूमि पर न लोटने पाता। मैं सास की कोठरी मे होती तो वे पुत्र को मधु चटातीं। निर्जन कानन में मुझे पुत्र हुआ है। कहीं से मधु नहीं प्राप्त हो रही है। मै कहाँ से मधु लाकर पुत्र के मुँह मे चटाऊँ और 'ओम्' लिखाऊँ? चारों ओर अंधेरा है। किस तरह प्रकाश करूँ कि नवजात पुत्र का मुँह देख सकूँ!

रिमझिम मेघ बरस रहे हैं। चारों ओर बिजली चमक रही है। सीता, विद्युत् के क्षणिक आलोक मे ही देखो न, तुम्हारा पुत्र कितना सुन्दर है।

सरिया (४१)

सरिया खेलन्ते कवन रामा, रानी के कवन रामा,
कहाँ सारी खेलिये मेरे लाल रे।

सरिया तो खेले अम्बा तरे अउर बिरिछ तरे,
क्या रैन सारी खेलिये मेरे लाल रे॥

सोर हुआ तेरी महल और रनवास में,
तो तुमही बोलाइये मेरे लाल रे।

तोरी धन बेदना मेरे लाल रे,
तो चिहुँक पड़े हैं मेरे लाल रे॥

सरिया तउ फेकेनि अम्बा तरे अउर बिरिछ तरे,
तो चलि पडे घर को है मेरे लाल रे।

सलोनी धनि का भा मेरे लाल रे,
कहउ धनि बेदना, मेरे लाल रे॥

लाज सरम की है बात सकुच की है बात,
तो मर्द आगे का कहूं मेरे लाल रे।

सजन आगे का कहूं मेरे लाल रे,
सो अब नाही मैं जिऊँ मेरे लाल रे॥

हम तुम अन्तरजामी कपट जिय नाही,
कहउ धनि बेदना, मेरे लाल रे।
कहउ समझाइ मेरे लाल रे,
कहउ जिय खोलि, मेरे लाल रे॥

बावइँ अँग मोर करकइ दहिन मोर सालइ,
मरलिउँ कमरिया की पीर।
तो दर्द नाही सहउँ रे मेरे लाल रे,
नवल दाई बोलावऊ मेरे लाल रे॥

दाई के गाँऊ न जानू अरे नाउँ न जानूँ,
सुघर दाई कहँवा बसे मेरे लाल रे।
चतुर दाई कहवा बसे मेरे लाल रे,
नवल दाई कहँवा बसे मेरे लाल रे॥

पूँछउ भाई बहिनियाँ सग पितियनिया,
तो कुआँ पनिहारिनि मेरे लाल रे।
तो गाउँ के लोग से मेरे लाल रे,
चतुर दाई कहाँ बसे मेरे लाल रे॥

पूँछेनि माया बहिनिया सग पितियनियाँ,
तो कुआँ पनिहारिनि मेरे लाल रे।
सहरवा के लोग से मेरे लाल रे,
चतुर दाई कहँवा बसे मेरे लाल रे॥

ऊँच नगर पुर पाटन आले बास छाजनि,
तो चन्दन वाके द्वारे पै मेरे लाल रे।
लाले जडाऊ द्वार हैं मेरे लाल रे,
चतुर दाई उहाँ बसे मेरे लाल रे?

अगले के घोडवा कवन रामा पाछे बीरन भइया,
नवल दाई लेने चले मेरे लाल रे।

सलोनी दाई लेने चले मेरे लाल रे,
लोना दाई लेने चले मेरे लाल रे ॥

किन मौरी टटिया उघारी पहरुआ जगाई,
कुकुर मेरो भूकि रहे मेरे लाल रे ।
घोडा मेरो टाप धरे मेरे लाल रे,
तो - सोवत जगाइये मेरे लाल रे ॥

हम तोरी टटिया उघारी पहरुवा जगाई,
तो लोना दाई चाहिये मेरे लाल रे ।
तो मोरी धनि बेदना मोरे लाल रे,
चतुर दाई चाहिये मेरे लाल रे ॥

तोरी धना हँथवा की साँकरि मुहना की पातरि,
देवइ नही जानिये मेरे लाल रे ।
सो दाई माई नाही चलै मेरे लाल रे,
तो घर आपन जाइये मेरे लाल रे ॥

मोरी धनि हाँथ की दलेल मुह मीठ बोलनि,
देवइ भल जानै मेरे लाल रे ।
आदर भल होई मेरे लाल रे,
तो दाई माई सग चले मेरे लाल रे ॥

सावन भादो की रात अधेरी है रात,
पैदल दाई नाही चलै मेरे लाल रे ।
सो घोडे असवार हौ मेरे लाल रे,
सो दाई माई नाही चले मेरे लाल रे ॥

घोडा तो है सौ साठ पिनक मेरे साथ,
मसाल लिये हाथ सुघर दाई सग चले मेरे लाल रे ।
लाख बचन किया मोल सबहिं को तौल,
सो दाई माई चल पडी मेरे लाल रे ॥

द्वारे पै आयी है दाई भई है अगवानी,
दाई धरै जब पाँव महल बिच सोर।
सो दाई रानी आवै मेरे लाल रे,
सुघर दाई आवै मेरे लाल रे॥
आवो जच्चा मेरे पास, दबाऊँ तेरा हाथ,
मलूगी मैं पेट, देखूगी तेरा होट।
तो भुइयाँ तेरे लोट पडे नन्दलाल रे,
महल बिच सोर किया मेरे लाल रे॥
दाई तो देखसि पेट, मलेसि तब तेल,
बडी है हुसियार जनाया है पूत।
होरिलवा जनम लियो मेरे लाल रे,
दाई ने किया बकवास, मचाया है सोर॥
लगाया नही हाथ, दबाया नही पेट,
छिनरिया दाई क्या किया मेरे लाल रे।
तो सर मेरे दरद उठी मेरे लाल रे,
आगे मत जइयो, पीछे मत जइयो॥
महल न रहियो घर में न रहियो,
कुत्ता मेरा टॉग धरे मेरे लाल रे।
घोडा मेरा टाप धरे मेरे लाल रे,
आवेगी मेरी सास चलावे तेरे बाँस॥
आवेगा मेरा जेठ रखावे तेरा पेट,
जेठानी बन के जाइयो मेरे लाल रे।
छिनरिया बन के जाइयो मेरे लाल रे,
आवेगा मेरा बीर, चलावै तेरे तीर॥
आवेगा मेरा नाह करावै तेरा ब्याह,
सवत बन के जाइयो मेरे लाल रे।

पतुरिया बन के जाइयो मेरे लाल रे,
आँगन बरसा है मेंह भई है किचकादौ ।।
चहुँ दिसि दामिनि दमकी मेरे लाल रे,
सो दइया घनघोर है मेरे लाल रे।
अब दाई माई रपटि गई मेरे लाल रे,
बहरे से आये है साजन पीछे बीरन भइया ।।
दस बाके साथ मसाल लिये हाथ,
सो झपटि उठाइहै मेरे लाल रे।
अगौछन पोछि मेरे लाल रे,
तब तो कहेउ मोरे पूत कि अगरा गढाय दैबो ।।
पाट गुहाइ दैबो, सबुज रग चुदरी, मेरे लाल रे,
दस मोहर तोरा नेग मधु की गगरिया तेरे साथ।
तो पीयत छकिन भई मेरे लाल रे,
दाई का अगरा गढाय देवो पाट गुहाय देबो ।।
दस मोहर तोरा नेग सबुज रग चूदरी
मेरे लाल रे,
मधु की गगरिया तोरे साथ तौ पियत छकित
भई मेरे लाल रे ।।
हँसत घर जाइये मेरे लाल रे,
दाई ने दिया है असीस जिवे जगदीस ।।
जिवे तेरी जच्चा रानी जिवे तेरा लालना
मेरे लाल रे,
सोहागिन और जनो मेरे लाल रे,
तो फेरि बोलाइये मेरे लाल रे ।।
बाढे जच्चा तोरा बस बढै परवार,
तो कोठे ऊपर और चढै मेरे लाल रे।
तो फेरि-फेरि पूत जनउ मेरे लाल रे,
तो लछिमिनि धेरिया जनो मेरे लाल रे ।।

पत्नी प्रसव-पीड़ा से छटपटा रही है और पति बेखबर होकर बाग मे सरिया खेल रहा है। एक दूती उसे टोकनी है—

"सरिया खेलने वाले अमुक बहू के अमुक स्वामी, तुम कहाँ सरिया खेल रहे हो ?"

पति उत्तर देता है—"मैं आम के वृक्ष के नीचे सरिया खेल रहा हूँ।"

दूती कहती है– "क्या सारी रात तुम सरिया खेलते रहोगे। तुम्हारे महल के रनवास मे शोर हो रहा है। तुम्हारी बहू तुम्हे बुला रही है। वह प्रसव वेदना से बेहाल होकर चीख रही है।"

पति सरिया आम के पेड़ के नीचे फेंक कर तुरन्त घर पहुँचा। पत्नी से पूछा—' प्रिये तुम्हें क्या हो गया ? कैसी पीड़ा हो रही है ? मुझे बताओ।"

पत्नी बोली—"प्रियतम बड़े लाज-सकोच की बात है। पुरुष के सामने उसका ब्योरा कैसे बताऊँ। इतना तेज दर्द है कि शायद अब मै जिन्दा नहीं रह सकूँगी।"

पति ने कहा—"प्रिये, मै तुम्हारे भीतर की सब बाते जानता हूँ। मेरे और तुम्हारे बीच कोई दुराव या कपट नहीं है। तुम मुझसे अपनी पीड़ा का सच्चा हाल बताओ।"

"अच्छा, मैं समझाकर कह रही हूँ ! दिल खोलकर सब बातें बता रही हूँ। मेरा बॉया अग फड़क रहा है, दाहिने मे दर्द हो रहा है। कमर की पीड़ा जान लिए जा रही है। बड़ी असह्य हो रही है। तुम जल्द नयी दाई बुला दो।"

पति बोला—"मै दाई का न तो गॉव जानता हूँ और न नाम। तुम्हीं बताओ, सुघर और चतुर दाई कहाॅ रहती है ?"

पत्नी ने उत्तर दिया—"स्वामी, चतुर दाई का पता माँ, बहन, चाची, कुँये की पनिहारिनों और शहर के लोगों से पूछो। वही बतायेंगे। तुम्हें क्या यह नही मालुम की नगर में सुन्दर बाँसों से छाया हुआ एक ऊँचा मकान है। उसके दरवाजे पर चन्दन का वृक्ष है। हीरों से जड़ा हुआ दरवाजा है। उसी में चतुर दाई रहती है।"

आगे के घोड़े पर अमुक पति सवार है। पीछे के घोड़े पर उसका छोटा भाई है। वे नयी दाई बुलाने जा रहे है।

इन लोगों के पहुँचने पर दाई बोली—"किसने मेरी टटिया खोली ? किसने मेरे पहरेदारों को जगाया ? मेरा कुत्ता भूँकने लगा है। घोड़ा टापें मार रहा है, किसने मुझे नींद से जगाया ?"

अमुक पति ने उत्तर दिया—"मैने तुम्हारी टटिया खोली। पहरेदारो को जगाया। लोना दाई, मै तुम्हे साथ ले चलना चाहता हूँ। मेरी पत्नी प्रसव-पीड़ा से तड़प रही है। मुझे चतुर दाई की आवश्यकता है।"

दाई बोली—'तुम्हारी बहू थुरहॅथी और मुँह की पतली है। देना-दिलाना नहीं जानती। इसीलिए मै नहीं चलूँगी। तुम अपने घर लौट जाओ।"

उसे उत्तर मिला—'मेरी पत्नी बहुत दानशील और मधुर भाषिणी है। अच्छी तरह देना जानती है। तुम्हारा खूब आदर-सत्कार होगा। दाई माँ, तुम अवश्य मेरे साथ चलो।"

दाई ने आगे कहा—"हे घुड़सवार, सावन भादौ की अँधेरी रात है। दाई पैदल नहीं चलेगी।"

पति ने उत्तर दिया—"मेरे पास साठ सौ का घोड़ा है। साथ मे पीनक भी है। सुघर दाई हाथ मे मशाल लेकर मेरे साथ चले।"

एक लाख का मोल-तोल करने के बाद दाई माँ चलने के लिए राजी हुई। दरवाजे पर आते ही उसका स्वागत किया गया। महल मे उसके पाँव रखते ही शोर मच गया—"दाई रानी आ गई। सुघर दाई आ गई।"

जच्चा के पास जाकर वह बोली—"जच्चा, मेरे पास आओ, मै तुम्हारा हाथ दबाऊँगी। पेट की मालिश करूँगी। तुम्हारा शरीर देखूँगी। देखो तुम्हारा नन्दलाल जमीन पर लोटने लगा है। महल मे शोर करने लगा है।

दाई ने जच्चा का पेट देखा। नये तेल से उसकी मालिस की। तारीफ करने लगी—"जच्चा बड़ी होशियार है। इसने पुत्र को जन्म दिया है। मेरे लाल, पुत्र ने जन्म लिया है।"

पुत्र का जन्म हो जाने पर जब नेग देने की बात आई तो जच्चा दाई से ठिठोली करने लगी—,,दाई ने सिर्फ बक्वास की है। शोर मचाया है। इसने हाथ नहीं लगाया। पेट नहीं दबाया। हरजाई दाई ने भला क्या किया। इसे देख कर मेरे सिर मे दर्द होने लगा है। तुम आगे पीछे मत जाना, महल और घर मे न रहना। मेरा कुत्ता तुम्हारी टाँग पकड़ लेगा। घोड़ा लात मार देगा। मेरी सास आयेगी और बाँस से तुम्हारी मरम्मत करेगी। मेरा जेठ आयेगा और तुम्हारे पेट की रखवाली करेगा। तुम मेरी जेठानी बनकर जाना। सवत बन कर जाना। मेरा भाई आयेगा और तुम्हारे ऊपर तीर चलाएगा। मेरा स्वामी आकर तुमसे ब्याह करेगा। तुम मेरी सौत बनकर जाना। वेश्या बन कर जाना।"

आँगन मे बादलो की वर्षा हुई। कीच-काच मच गई। चारों ओर बिजली चमकने लगी। घना अँधेरा छा गया। दाई मा आँगन मे ही अड़ गई।

बाहर से पति आया और पीछे से उसका भाई। नौकर हाथ मे मशाल लेकर आये। पति ने झपट कर उसको उठाया। रूमाल से उसका बदन पोंछा।

खिन्न दाई बोली—"मेरे बेटे, उस समय तो तुमने कहा कि अगेला गढ़ा दूगा। पाट गुहा दूगा और हरे रग की चूनर दूँगा। दस मुहर और मधु का घड़ा मेरे नेग मे तै हुआ था, जिसे पान कर मै मस्त हो उठती।"

पति ने उत्तर दिया—"दाई के लिए मै अगेला (कगन) गढा दूँगा। पाट गुहा दूगा। दस मुहर और हरे रग की चूनर दूँगा। साथ मे मधु का घड़ा दूँगा, जिसे पीकर तुम मस्त हो जाओगी और हँसती हुई अपने घर लौटोगी।'

दाई ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया—"भगवान् तुम्हे सुखी रखे। जच्चा रानी, तुम्हारा पुत्र चिरायु हो। तुम्हारे और पुत्र हों, ताकि तुम मुझे फिर बुलाओ। तुम्हारे कुल और परिवार की वृद्धि हो। तुम्हारी कोठी और अधिक ऊँची हो। बार-बार तुम्हे पुत्र हो। लक्ष्मी जैसी कन्या उत्पन्न हो।"

(४२)

शिव चले झारी खण्ड तो आगे मधुबन,
तो भँगियाँ के अमल पडी मेरे राम रे!
तोरी गौरा बेदना व्याकुल लोटन-पोटन करे,
तो शीश में दर्द उठी मेरे राम रे।

सुनत बचन शिव चिहुँके तो झपटि के धाये,
कहो गौरा बेदना मेरे राम रे।
बाँये अँग मोरा साले दहिना मोरा करके,
मरलियूँ कमरिया की पीर मेरे राम रे।

ना मोर सासु ननदिया अरे नाही जेठनिया,
अरु माया मोरी दूर बसै मोरे राम रे।
के मोरि लीपइ ओबरिया, को समझावै,
अब के मोरा दर्द हरे मेरे राम रे॥

तीनो लोक की जेठानी नित सुत जायो,
तो छिन में बिकल भइउ मेरे राम रे।
कॉपत आकाश पाताल अरु तीनौ लोक,
तो चमकत दामिनि मेरे राम रे।

जनमे है दीनदयाल के गणपति गणेश,
तो गरभ भरी गौरा मेरे राम रे।
बाजत ढोल मजीरा ढप-ढप डमरू,
तो मृदग बोल उठे मेरे राम रे।

पडी नगाडे पर चोट चहुँ दिसि सोर,
तो गनपत जन्म लियो मेरे राम रे।
आई सब सखियाँ गावै लागी गरिया,
गौरा रानी मगन भई मेरे राम रे।

गौरा ने खाया गुड सोठ भइ मजबूत,
तो होरिला लइ लेट गई मेरे राम रे।
होरिला दिया करतार गो बडेन के भाग,
तो हमरी कोखिया तरी मेरे राम रे।

शकर जी भाग के नशे मे मस्त झारखण्ड बन मे चले जा रहे थे। किसी ने उन्हे सूचना दी—"भगवान्, आप की पार्वती प्रसव-वेदना से व्याकुल हो लोट पोट रही हैं। उनके सिर मे पीड़ा हो रही है।"

यह बात सुनते ही शकर जी चौक पड़े। दौड़ते हुए घर पहुचे। पार्वती से पूछा—"बोलो, बोलो ! कैसी पीड़ा हो रही है ?"

पार्वती कहने लगीं—"मेरा बाया अग दुख रहा है। दाहिने मे चुभन हो रही है। कमर की पीड़ा से मै मरी जा रही हू। मेरे सास, ननद और जेठानी कोई नही है। माँ भी बहुत दूर रहती है, कौन मेरी ओबरी लीपेगी ? कौन मुझे धीरज बँधायेगी ? हाय राम ! मेरी पीड़ा कौन दूर करेगा ?"

शकर जी ने आश्वासन दिया—"तुम तो तीनों लोक की माँ हो। नित्य अनेक पुत्रों को जन्म दिया है। क्षण मे ही इस प्रकार क्यों व्याकुल हो रही हो ?

आकाश, पाताल और पृथ्वी आदि तीनो लोक कॉप रहे है। आकाश मे बिजली चमक रही है। ऐसी ही घड़ी मे शकर जी के पुत्र गणेश का जन्म हुआ है। पार्वती गौरवान्वित हो उठी है। प्रभात काल के नव अरुणोदय मे ढोलक, मॅजीरा, डमरू और मृदग आदि बाजे बजने लगे है। नगाड़े पर चोट पड़ी और चारो दिशाओं मे शोर फैल गया कि गणेश जी ने जन्म लिया है। सहेलियाँ एकत्रित होकर 'सरिया' गाने लगीं। पार्वती जी पुलकित हो उठीं। गुड़ और सौंठ खाकर पार्वती हृष्ट पुष्ट हो गई और पुत्र को गोद मे लेकर लेट गईं। मन मे सोचने लगीं—"भगवान् ने बड़े भाग्य से मुझे पुत्र दिया। मेरी कोख पवित्र हो गई।"

पीपर (४३)

पिपरी मैं ना पिऊँ कड़ुवी लगे,
सैया तुमसे कहू मैं कड़ुवी लगे।
पिपरी हमारी सास ने भेजा,
अब ओही पियै सैया कड़ुवी लगे।
पिपरी हमारी जीजी ने भेजा,
अब ओही पियै सैया कड़ुवी लगे।
पिपरी पिलाने ससुर जी आये,
बूढे तुम क्या जानो कड़ुवी लगे।
पिपरी पिलाने जेठ जी आये,
जरा चख कर देखो कड़ुवी लगे।
पिपरी पिलाने ननद जी आयी,
छिनरो दूरि हटो ओ कड़ुवी लगे।
पिपरी पिलाने बलम जी आये,
जरा होरिला को लो मैं पिपरी पिऊँ।

मैं पीपर नहीं पियूगी। कड़वी लगती है। साजन, सच! पीपर बहुत कड़वी लगती है।

पीपर मेरी सास ने भेजी है। वही पियें। जीजी ने भेजी है, उन्हीं को मुबारक हो! मैं नहीं पियूँगी।

ससुर जी पीपर पिलाने आये है। बूढे बाबा, तुम क्या जानो! पीपर बहुत कड़वी लगती है।

पीपर पिलाने जेठ जी आये है। जरा आप ही चख कर देखे, पीपर कितनी कड़वी लगती है।

पीपर पिलाने के लिये ननद जी आयी है। हरजाई, तू दूर हट, पीपर बहुत कड़वी लगती है।

पीपर पिलाने मेरे बालम आये है। भला अब क्यो नही पियूँगी! तनिक मेरा बच्चा थाम लो, मै पीपर पियूँगी!

(४४)

ऊचे नगर पुर पाटन, आले बास छाजनि हो,
अरे बसि गये बनिया महाजन, पीपर महँग भई हो।

अँगने में ठाढि बनिनिया सिपहिया एक आवत हो,
अरे सिपहिया देबइ सतरँगिया, बइठो मोरे अँगना हो।

केतने सेर बेचउ पिपरिया, केतने सेर जायफर हो,
अरे केतने सेर लवँगिया, लवँगिया हम लेबइ हो।

बेचउँ असरफी सेर पिपरि, रुपैया सेर जायफर हो,
पाँचइ मोहर लवँगिया, तउ लवँग महग भई हो।

की तोरि माया गरभ से, कि बहिनी गरभ से,
धनि बारह बरिस के उमरिया पीपर काउ करबेउ हो?

माया की साध न जानउ बहिन परदेसिन हो,
अरे बारह बरिस के उमरिया तो राम नेवाजइँ हो।

लेबै अशरफी सेर पीपर, रुपैया सेर जायफर हो,
लेबै अनमोल लवँगिया, तो घर चलि आपन हो।

आनउ सोना सिलौटी, रूपे रँग लोढा हो,
अरे भौजी, रगि-रगि पीसौ पिपरिया तो तुमका पियावउ हो।

पीपर कडुवी कसायल, अउर बकसायल हो,
जिभिया कमल कर फूल, पीपर हम न पीअब हो।

एतनी बचन जब सुनली, रस से बेरस भये हो,
घोडे असवार भये धन, करबौ दूसर बियाह हो।
धरिन पगडिया का फेट, अगरखा का कोरवा हो,
पीबौ मैं लाम्बो-लाम्बे घोट, होरिलवा के कारन हो॥

लम्बे बाँसों से छाया हुआ ऊँचा नगर है। सेठ महाजन बस गए हैं, फिर भी पीपर महँगी हो गई है।

अपने आँगन मे एक बानिन खड़ी है। एक सिपाही को आता देखकर बोली—"सिपाही मै तुम्हारे लिए दरी बिछा दूँगी, तुम मेरे आँगन में बैठो।" सिपाही पूछता है—'कितने रुपये सेर तुम पीपर बेचती हो और कितने रुपये सेर जायफल ? और तुम लौग का भी भाव बताओ। मैं लौग खरीदूँगा।"

"अशर्फी सेर पीपर बेचती हूँ और रुपया सेर जायफल। पाँच मुहर मे लौग बेचती हूँ। लौग बहुत महँगी है। लेकिन पहले यह बताओ कि क्या तुम्हारी माँ गर्भवती है अथवा बहन ? तुम्हारी उम्र तो बारह साल ही मालूम होती है। तुम पीपर क्या करोगे ?"

खरीदने वाले बहू के देवर ने उत्तर दिया—"माँ की साध नहीं जानता, बहन दूसरे देश मे रहती है। मेरी बारह साल की उम्र ही मुबारक हो। मैं अशर्फी सेर पीपर लूँगा। रुपया सेर जायफल लूँगा। अनमोल लौग भी खरीदूँगा, तब अपना काम चलेगा।"

सब सामान खरीद कर देवर अपनी भाभी से बोला—"भाभी, सोने की सिलौटी और चाँदी का लोढ़ा ले आओ। खूब घिस कर पीपर पीसो और जच्चा को पिलाओ।"

बहू पीपर पीने से इन्कार करने लगी। पति के भी अनुरोध करने पर बोली—"पीपर कड़वी है। कसायल और बकसायल लगती है। स्वामी, मेरी जीभ कमल के फूल-सी कोमल है। मै पीपर नहीं पियूँगी।"

यह बात सुन कर पति रुष्ट हो उठा। घोड़े पर सवार होकर बोला—"प्रिये, तुम पीपर नहीं पियोगी, तो मैं अपना दूसरा ब्याह कर लूँगा।"

उसने सिर पर पगड़ी बाँधी, कुर्ता पहना। यह देखकर बहू तुरन्त पीपर पीने के लिये राजी हो गई। उसने प्रियतम् की पगड़ी और अगरखे की कोर पकड़ कर आग्रह पूर्वक कहा—"प्रियतम्, पुत्र के कारण मैं बड़े-बड़े घूँटों से पीपर पियूँगी।"

केकरि ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो,
रामा केकरि नवल बुहरिया तउ लोट-पोट करइ हो।
राजा दसरथ ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो,
रामचन्द्र के रोवइ होरिलवा महलिया आनन्द भये हो।

कइ मन उपजी है सोंठि, तउ कइ मन पीपरि हो,
हमर लखपतिया रामचन्द्र पिपरि बनिज गये हो।
आनउ सोन सिलउटी, रूपे रग लोढउ हो,
भाभी रगि-रगि पीसउँ पिपरिया मँइ धन के पियावउँ हो।

मँइ भलि अपनी सासु की चेरुआ भरावइँ हो,
मँइ भली अपने ससुर की रासि गिनावइँ हो।
मँइ भलि अपनी जेठानी की बिरवा जोडावइँ हो,
मँइ भली अपने जेठ की पच बटोरइँ हो।

मँइ भली अपने देवर की नउबति बजवावइँ हो,
मँइ भली अपने ननदोइया की टरिया बँधावइँ हो।
मँइ भली अपनी ननद की छठिया धरावइँ हो,
लीपि पोति चउक पुरवाइँ तउ मँगल गावइँ हो।

मचियइ बइठी जे सासु तउ बिनती बहुत करइँ हो,
बहुवा देबेउ मँइ सहस भडार पियउ मधुपीपरि हो।
गुडिया खेलन्ती ननदिया तउ बिनती बहुत करइँ हो,
भउजी देवेउँ मँइ भइया बोलाइ पियउ मधु पीपरि हो।

बाहर से आवँइ सइयाँ तउ विनती बहुत करइँ हो,
धन देबेउँ मँइ होरिला खेलाइ पियउ मधु पीपरि हो।
पीपरि कड़ुवी कसायलि अउ बकसायलि हो,
सइयाँ नैना बहइ जल नीर पीपरि मोर के पियइ हो।

एतनी बचन जब सुनेनि, रस से बेरस भये हो,
धन करबइ मॅइ दूसर बियाह पिपरिया के कारन हो।
थाम्हेनि पगडी वह फेट, अगरखा जउ दावेनि हो,
राजा पीबइ मॅइ लम्बे-लम्बे घूट सवति नहि सहबइ हो।

किसका ऊँचा महल है, जिसमे माणिक दीप जल रहे हैं? किसकी नवेली बहू जमीन पर लोट-पोट कर रही है?"

राजा दशरथ का ऊँचा महल है, जिसमे दिये की ज्योति प्रज्वलित हो रही है। रामचन्द्र का पुत्र रो रहा है और महल मे आनन्दोत्सव की धूम मची है।

कितने मन सोंठ पैदा हुई है और कितने मन पीपर? हमारे लखपती राजा रामचन्द्र पीपर खरीदने गये हैं।

भाभी, सोने की सिलौटी और चाँदी का लोढ़ा ले आओ। खूब घिस कर मैं पीपर पीसूँ और बहू को पिलाऊँ।

मैं अपनी सास की बहुत प्रिय हूँ। वे पुत्र का चिल्लू भरा रही हैं। ससुर पण्डित बुला कर राशि की गणना करा रहे है। जेठानी पान के बीड़े लगा रही हैं और मगल गीत गा रही हैं। जेठ जी स्वजनो को एकत्रित कर यज्ञ का अनुष्ठान कर रहे है। देवर नौबत बजवा रहे हैं और ननदोई टटिया बँधवा रहे है। ननद छट्ठी धरा रही है। मचिया पर बैठी हुई सास अनुरोध कर रही हैं—"बहू, तुम प्रसन्न होकर मधु पीपर पियो, इस खुशी मे मै एक सहस्र कोष लुटा दूँगी।" चौबारे में बैठी हुई जेठानी अनुरोध कर रही है—"बहू, तुम प्रसन्न होकर मधु-पीपर पियो, मैं तुम्हे राम-रसोई दूँगी।" गुड़िया खेलती हुई ननद कह रही है—"भौजी, पीपर पियो, मै अपने भाई को बुला दूँगी।" बाहर से आते हुये प्रियतम् अनुरोध कर रहे है—"प्रिये, मै पुत्र खेलाऊँगा, तुम पीपर पी लो!"

"प्रियतम्, मेरे नेत्रों से आँसू बह रहे है। मैं कैसे पीपर पियूँ?"

यह बात सुन कर पति रुष्ट होता हुआ बोला—"प्रिये, यदि तुम पीपर नहीं पियोगी तो मैं दूसरा विवाह कर लूँगा।"

पति ने ज्यो ही पगड़ी उठाई और बगल मे अँगरखा दबाया, पत्नी पानी-पानी हो गयी—"प्रियतम्, मैं लम्बे-लम्बे घूँटो से पीपर पियूँगी, किन्तु भला सौत का आना कैसे सह सकूँगी।"

छठिया की रात (४६)

मोरी छठिया कइ राति के रे बसै,
पिया छाये बिदेसवा केरे बसै।
जउ घर होती सासु हमारी,
देती चमाइनि सौर घर॥

जउ घर होते ससुरू हमार,
नौबति बाजति सौर घर।
जउ घर होते लक्षिमन देवरा,
बँसिया बजवतेनि सौर घर॥

जउ मइँ होतिउँ अजोध्या नगर में,
भाँटिन गावत सौर घर।
जउ मइँ होतिउँ राम महल में,
चेरिया जागत सौर घर॥

ना कोउ आगे, ना कोउ पाछे,
मोरी छठिया कइ रैन केरे बसै।
धीर धरत सीता नीर बहावै,
मोरी उजडी नगरिया केरि बसै॥

लवकुस जनमे बीच जँगल में,
बन की चिरैया रैन बसै॥

सीता जी अकेली निर्जन बन मे है। उनके पुत्र हुआ है। आज छट्ठी की रात है। किन्तु उनके पास रहने के लिए, उनके साथ जागने के लिए आज एक भी सगा सबन्धी नही है। प्रस्तुत गीत मे इसी कारुणिक स्थिति का चित्रण किया गया है।

छट्ठी की रात मे मेरे साथ कौन रहे? स्वामी विदेश मे है। मेरे साथ कौन रहे! यदि घर मे मेरी सास होतीं तो वे सौर मे चमाइन बुला देतीं। यदि घर में ससुर जी होते तो सौर मे आज नौबत बजती। यदि घर मे लक्ष्मण देवर होते तो वे अवश्य ही सौर मे बाँसुरी बजाते। यदि मैं अयोध्या नगर मे

होती, तो मेरी सौर मे बैठकर भाँटिन गीत गाती। यदि मैं राम के महल मे होती, तो मेरी दासी मेरे साथ सौर मे जागरण करती। मेरे आगे-पीछे कोई भी नहीं। बिल्कुल अकेली हूँ। छट्ठी की रात मे मेरे साथ कौन रहे? धैर्य धारण करती हुई सीता आँसू बहा रही हैं और आशा कर रही हैं कि मेरी उजड़ी नगरी फिर कभी बसेगी। जगल मे लव-कुश का जन्म हुआ है। वन की चिड़ियाँ ही रात मे साथ देंगी।

मनरंजना (४७)

बीरन के घर लाला भये मनरजा के लाल,
ननदी बधाव लै आई मनरजा के लाल।
छट्ठी दै ठाढि भई हो मनरजा के लाल,
भाभी लाओ हमारा नेग मनरजा के लाल॥

नेग-जोग मोर नाही हो मनरजा के लाल,
ननद लइजाओ होरिलवा उठाइ मनरजा के लाल।
ननदी ले गयी होरिलवा उठाइ मनरजा के लाल,
मोर अहर-वहर जिउ होइ मनरजा के लाल॥

झपटि अटरिया चढि गई हों मनरजा के लाल,
अपने साजन से बतियानी हो मनरजा के लाल।
ननदी ले गयी होरिलवा उठाइ मनरजा के लाल,
मोसे ठाढे बइठि ना जाइ मनरजा के लाल॥

हे गयी हो गयी हो मनरजा के लाल,
ननदी चली ससुरारि रिसाइ मनरजा के लाल।
ननद दइ देउ होरिलवा हमार मनरजा के लाल,
मुँह भरि माँगउ आपन नेग मनरजा के लाल॥

ननदी दे गई होरिलवा फेरि मनरजा के लाल,
बीबी लेउ बैल की सीग मनरंजा के लाल।
सिगिया तो भेजो अपनी माया बहिनि को,
मइँ तो लेउँ मोतिन कर हार मनरजा के लाल॥

पहिरि ओढि के ठाढि भई मनर जा के लाल,
जुग-जुग जीवे कुल परिवार मनर जा के लाल।
ओछे घर की छोकरी ना जाने मान मनर जा के लाल,
मैं तो बखानूँ बीरन की बाँह मनर जा के लाल ।।
जिनि राखो हमरा मान हो मनर जा के लाल,
पाया मोतिन कर हार मनर जा के लाल।
छठिया धराई नेग हो मनर जा के लाल,
भौजी और जनो पूत हो मनर जा के लाल ।।

भाई के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है, ननद बधाव लेकर आई है।

छठी देकर ननद खड़ी हो गई। भाभी से कहने लगी—"भाभी मेरा नेग दो।" भाभी ने उत्तर दिया—"ननद मेरे पास नेग वगैरह देने के लिए कुछ नहीं है। तुम यह बच्चा ही उठा ले जाओ।"

ननद बच्चा उठा ले गई। मेरा दिल घबड़ाने लगा। झपट कर मैं अटारी पर चढ़ गई। स्वामी से बताया—'ननद बच्चा उठा ले गई। न तो मुझसे खड़ा हुआ जाता है और न बैठा जाता है।"

इधर-उधर होती हुई ननद अपनी ससुराल के रास्ते पर चल पड़ी। भाभी अपना पुत्र माँगने लगी—'ननद, मेरा बच्चा देती जाओ। मैं तुम्हारा नेग दे रही हूँ।"

ननद महल में आकर बच्चा वापस कर गई। पुन. नेग माँगते समय भाभी उससे मजाक करती हुई बोली—"ननद, नेग के नाम पर तुम बैल की सींग लो।"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी बैल की सींग अपनी माँ और बहन के पास भेजो। मै तो तुमसे मोतियो का हार लूँगी।"

ननद नेग के वस्त्राभूषण धारण कर खड़ी हुई और आशीर्वाद देने लगी—"भाई का परिवार युग युग तक चिरजीवी हो। मेरी भाभी तो ओछे घर की लड़की है। वह मेरा आदर-सम्मान करना क्या जाने? प्रशंसा के योग्य तो मेरा भाई है जिसने मेरा इतना मान किया है! जिसने मुझे मोतियों की माला पहनाई है। भाभी, तुम और कई पुत्रों को जन्म दो ताकि मैं पुनः तुमसे छट्ठी का नेग माँगने के लिए आऊँ।"

गजमोहना

(४८)

फुलवा तो फूलें फुनवरिया, मन मोरे बसि गये हो,
रामा, परि गये कृश्न जी के हँथवाँ, दिहेनि रानी रुकुमिनि हो।
ननद भउज मिलि बइठी, एक मत कीहेनि हो,
भउजी जउ तोरे होइहइँ नन्दलाल तउ काउ हमइँ देबिउ हो ?
मँइ वडी बोल बचन की, मुँहना की सांची रे ना,
ननदी करबइ तोरि बिदइया, जियरा मॅंइ खोलि के हो।
भोर होत, पउ फाटत, होरिला जनम भये हो,
बाजै लागी आनन्द बधइया, गावईं सखि सोहर हो ?
हँकरउ न नगर के नउवा, बेगेहिं चलि आवउ हो,
रगि-रगि पीसउ हरदिया, रोचना पहुँचावउ रे।
रुकुमिनि देवी कर नइहर न जानेऊँ पुरुब पच्छिऊँ हो,
नाही जानेऊँ उत्तर दक्खिन, कवनि राह थामऊँ हो ?
ना जानेऊँ भीखम दुवरिया, राजा कइ महलिया हो,
ना जानेऊँ भीखम चउपरिया, कवने रङ्ग ठाटरि हो।
लालहि लाल दरवजवा, लालइ मोहरवउ हो,
हाथी झूमहि दुवरवा, उहइ भीखम चउपरिया हो ?
कँहवा से आयेउ नउवा, कहाँ तुहुँ आयउ हो,
रुकुमिनि के भये नन्दलाल, रोचना लइ आयेउँ हो।

दुधवा पखारउँ तोर पाउँ, घिउ गुर मुह धरउँ हो,
घियना की पुरिया पोवावउँ, दुधवा कइ जाउरि हो।
नउवा बइठउ मोरि जेमनरिया, मैं बेनिया डोलावउँ हो,
चलत बेरिया करउँ बिदइया, हँसत घर जाएउ हो।
नउवा के दिहे पाँचउ जोडवा, हाँथे का तोडवउ हो,
भीखम दिहे गज मोहना, दिहेउ रानी रुकुमिनि हो।
रहिया में बसइँ सुभद्रा, नउवा नजर परी हो,
हमरे नइहर का नउवा, हिया कइसे आएउ हो।
कहँवा के तुहुँ नउवा, कवने गाउँ जाबेउ हो,
नउवाँ केकरे भये नन्दलाल, रोचना लइ आयेउ हो?
गोकुल- का हम नउवा, अवध हम जाबइ हो,
रुकुमिनि के भये नन्दलाल, रोचना लइके आएउ हो।
भल किहेउ मोरे नउवा, तउ भलही सुनाएउ हो,
दुधवा पखारउ तोर पाउ, घिउ गुर मुह धरउ हो।
घियना कइ पुरिया बनावउ, दुधवा कइ जाउरि हो,
नउवा बइठउ मोरी जेवनरिया, बेनिया डोलावउ हो।
जेइ-जेइ नउवा ठाढ भयेऊ बहिनि बोलाएउ हो,
बहिनी करउ न मोरि बिदइया, हसत घर लउटउ हो।
नउवा के दिहेनि पाचउ जोड़वा, हाँथे कर तोड़वउ हो,
अरजुन दिहेनि हासिल घोड़, हँसत नउवा घर गएउ हो।
सभवइँ बइठे राजा अरजुन, सुभद्रा रानी बिनवइँ हो,
साहेब भउजी के भयें नन्दलाल, बधावा लइके जाबइ हो।
कइसन बाउरि मोरि धनिया, केन बउराएउ हो,
बिन रे बोलाए तुँहुँ जाबेउ, आदर नाही पउबेउ हो।
बाजत आवइ बजना, एक सह नइयउ हो,
नाचत आवइ ननदिया, बीरन घर सोहर हो।

झपटिके उठें सिरी कृश्न, धाइके भीतर गये हो,
रनिया, आवत बाबा की दुलारी, गरभ जिनि बोलेउ हो।

रुकुमिनि निहुरि पइयाँ लागेउ, आदर भल कीहेउ हो,
अग-अग मउर बांधेउ, गरूहड ओढाएउ हो।

ननदी का मुह बड ओछर, करेज मोर सालइ हो,
अस जिनि जानेउ मोरि भउजी की छूछइँ आएउ हो।

भउजी अस्सी मोहर कर कठुलवा, बधाउ लइके आएउँ हो।

आवउ ननद गोसाईं, बडी ठकुराइनि हो,
ननदी लिझिया भरल मोर हाँथ, मइ पइयाँ कइसे लागउं हो।

मोरि भउजी बडी टकुराइनि, अउर मिठ बोलनि हो,
भउजी मुँह मोर भरल तमोलवा, मँइ कइसे असीसउँ हो।

ननदी बइठउ पाटे के खटोलवा, भतिजवा खेलावउ हो,
ननदी हथवा में कुछु रे धरावउ, कठुलवा गरे डारउ हो।

जउ मइ भतिजवा खेलावउँ, हाथे पहिरावउँ हो,
भउजी गजमोहना मोर नेग, पहिरि घर जाबइ हो।

सोनवा तउ देबइ अढइया, रुपवा पसेरिनि हो,
ननदी एक नहिं देबइ गजमोहना, हमरे बाप कर हो।

ना मइ पठएउँ नउवा, नाही भेजेउँ बरियउ हो,
ननदी, नाही मइ पठएउँ बीरन तोर, कइसे के आइउ हो ?

देखइ आयउँ बाबा अमरइया, माया कइ रसोइया जे हो,
भउजी, देखन आयेउँ भइया लरिकइया, अउ तोर करतब हो।

बाबा अमरइया मइ लगाएउ, माया की रसोइया मँइ रीन्हेउ हो,
ननदी, परि गये तिसर तोर नात, इहा कइसे आइउ हो ?

रोवइ सुभद्रा रसोइयाँ, बाबा की चउबरिया में हो,
माई निकरउ न राम रसोइयाँ, धिया के समुझावउ हो।

लाल पियर कइसे पहिरउँ, अपने बिरन घर हो,
गरुहरि गठरिया कइसे बान्हउँ, कोंछ कइसे दाबउँ हो।
जउँ मंइ होतेउँ बन की कोइलिया, बनहिं बन रहतेउँ हो,
मोरे बिरना बइठतेनि डरिया, मइ कुहुकि सुनवतेउँ हो।

एक पग गइली सुभद्रा, दुसरे बँन सासुर हो,
रामा, बिन रे मयरिया की धेरिया, रूठलि जाइ सासुर हो।

बहरे से आये सिरी कृश्न, धाइ के भितर गये हो,
धन काउ देइ किहिउ बिदइया, बहिनी सुभद्रा कइ हो ?

सोनवा तउ दिहेउँ अढइया, रुपवा पसेरिनि हो,
गरभ कइ माती ननदिया, माँगइ गजमोहन हो।

देउ न आवा कइ रखिया, अउर भभुतियउ हो,
रूठलि बहिनिया के कारन, जोगिया मइँ होबेउँ हो।

रहिया चलत एक बटोहिया, पूछइँ सिरी कृश्न हो,
रामा, हँसत गयी मोरि बहिनी की रोवत सासुर हो ?

काउ कहउँ सिरी कृश्न, कहत लाज लागइ हो,
रामा, बहिनी सुभद्रा के रोये, नदिया अगम भई हो।

हकरउ न नगर के कँहरवा, बेगेहिं चलि आवउ हो,
रामा, चनन कइ डोलिया फनावउ, मॅइ ननद मनावउँ हो।

गुल्ली डण्डा खेलत भयनवा, धाइ के भितर गएउ हो,
रामा, आवत बाटे मोरे मामा, अउर मोरि मामिउ हो।

कोखिया के जनमे न होतेउ, तउ खलरी खिचवतेउ हो,
रामा, अपनेहि कोखिया के जनमें तउ बोल अस बोलउ हो।

झपटि के चढी हैं अटरिया, झरोखवन चितवैं हो,
आवत मोरि भउजइया, पिछवा बिरन भइया हो।

हकरउ न नगर के सोनरवा, बेगेहिं चलि आवउ हो,
रामा, सउ साठि गढउ गजमोहना, पंवरी बिछावउ हो।

भउजी चढी मोरि आवइ, नेवछावरि नउवा मागइ हो,
एतना गजमोहना तेरे ननदी कि पाँवरि मोरि दिहिउ हो,

एक गजमोहना के कारन, बिरना जोगिया किहेउ हो।
एतना गजमोहना मोरि ननदी, तउ कवने अरथ कर हो।

एक गजमोहना मँइ पउतिऊ, नगर देखवतिउ हो,
सात बिरन कइ बहिनिया, मान नहिं जानेउ हो।

जे यह मगल गावइ, गाइ के सुनावइ हो,
कटै जनम कर पाप, सुनवइया फल पावइ हो।

फुलवारी मे फूल खिल गये। उन्हे देखकर मेरा मन लालायित हो उठा। रुक्मिणी रानी ने कृष्ण जी के हाथ मे फूल दिया।

ननद और भाभी ने मिलकर सलाह की। ननद ने पूछा—"भाभी, तुम्हे पुत्र होगा तो मुझे क्या दोगी?"

भाभी ने उत्तर दिया—"ननद, मै अपनी बात की बड़ी पक्की हूँ। मैं हृदय खोलकर तुम्हारी बिदाई करूँगी।"

प्रभात का अरुणोदय होते ही पुत्र का जन्म हुआ। आनन्द की बधाइया बजने लगीं। सखियाँ सोहर गाने लगीं। भाभी नाई को पुकारने लगी—"नगर के नाई, तुम कहाँ हो? घिस-घिस कर हल्दी पीसो और रोचना ले जाओ।"

नाई ने कहा—"मै नहीं जानता कि रुक्मिणी का नैहर किस ओर है? राजा भीष्म का दरबार मुझे नहीं मालूम है।"

रानी ने बताया—"लाल रग का दरवाजा है। लाल रग के किवाड़े लगे है। दरवाजे पर हाथी झूम रहे है। वही राजा भीष्म का दरबार है।"

राजा भीष्म के दरबार मे पहुँचने पर नाई से पूछा गया—"नाई तुम कहाँ से आये हो? कहाँ आये हो? किसके घर मे पुत्र हुआ है? जिसका रोचना तुम ले आए हो?"

"गोकुल का मै नाई हूँ। अवध मे आया हूँ। रुक्मिणी ने पुत्र को जन्म दिया है। वहीं से रोचना ले आया हूँ।"

"दूध से तुम्हारा पाँव धोऊँ। तुम्हें खाने के लिए घी गुड़ दूँ। तुम्हारे लिए घी की पूड़ी बनवाऊँ। दूध की खीर बनवाऊँ। तुम रसोई में बैठो। मैं तुम्हें पखा झलूँ। चलते समय तुम्हें ख़ुशी-ख़ुशी विदा करूँ।"

नाई को पाचों पोशाकें दी गई। हाथ का तोड़ा दिया गया। राजा भीष्म ने गजमोहना देकर कहा कि इसे रुक्मिणी रानी को देना।

सुभद्रा रास्ते मे ही थीं। उन्होंने नाई को देख लिया। उससे पूछा—"तुम तो मेरे नैहर के नाई हो। यहाँ कैसे आये हो? किसके पुत्र हुआ है जिसका तुम रोचना ले आये हो।"

नाई ने उत्तर दिया—"गोकुल का मैं नाई हूँ। अवध मे आया हूँ। रुक्मिणी ने पुत्र को जन्म दिया है। वही से रोचना ले आया हूँ।"

"नाई, तुमने अच्छा किया। अच्छी बात सुनाई। मै दूध से तुम्हारा पैर धोऊँगी। तुम्हें घी-गुड़ खिलाऊँगी। घी की पूड़ियाँ बनवाऊँगी। दूध की खीर बनवाऊँगी। तुम रसोई मे बैठो। भोजन करते समय तुम्हे पखा झलूँगी।"

भोजन के पश्चात् नाई चलने के लिये तैयार हुआ। बहन को बुलाकर कहा—"बहन, मेरी विदाई करो, ताकि मै प्रसन्न-चित्त घर वापस लौटूँ।"

नाई को पाँचों पोशाकें दीं। हाथ का तोड़ा दिया। अर्जुन ने हासिल घोड़ा दिया। हँसता हुआ नाई घर चला।

सभा मे राजा अर्जुन बैठे थे। रानी सुभद्रा विनय करने लगीं—"प्रियतम, भाभी के पुत्र हुआ है। मै बधावा लेकर जाऊँगी।" अर्जुन बोले—"रानी, तुम कितनी पगली हो! किसने तुम्हे पागल कर दिया है! बिना निमत्रण ही तुम जाओगी तो तुम्हारा आदर-सम्मान नहीं होगा।'

शहनाई बज रही है। ननद नाचती हुई आ रही है। भाई के घर मे सोहर हो रहा है। कृष्ण जी झपट कर उठे और दौड़ते हुए भीतर पहुचे। रुक्मिणी से बोले—"रानी, मेरे पिता की दुलारी बेटी आ रही है। कोई घमण्ड की बात मत बोलना। झुककर पाँव छूना। उसका ख़ूब आदर करना। उसके सिर पर मौर बाँधना। अच्छे वस्त्र ओढ़ाना।"

रानी बोली—"ननद की बाते मेरे हृदय मे चुभ जाती हैं।"

ननद ने कहा—"भाभी, ऐसा मत समझना कि मैं ख़ाली हाथ आई हूँ। मैं बधाव में अस्सी मुहर का कटुला ले आई हूँ।"

"ननद रानी, आओ। तुम मेरे लिए पूज्य हो। किन्तु, मैं किस प्रकार तुम्हारा चरण स्पर्श करूँ? मेरे हाथ में उबटन की लीभी लगी है।"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी, तुम बड़ी ठकुरानी हो। मधुर भाषिणी हो। मेरे मुँह मे पान भरा है। मैं तुम्हें किस प्रकार आशीर्वाद दूँ?"

"ननद, तुम पाट के खटोले पर बैठो और अपना भतीजा खेलाओ। उसके हाथ में कुछ पहनने के लिये देना। गले के लिये कठुला देना।"

ननद बोली—"भाभी, यदि मैं भतीजा खेलाऊँगी और उसे हाथ मे आभूषण पहनाऊँगी तो नेग मे तुम्हे गजमोहना देना होगा, जिसे पहनकर मै अपने घर जाऊँगी!

भाभी ने उत्तर दिया—"ननद, मैं अढ़इया भर सोना दूगी। पसेरियों चाँदी दूँगी, किन्तु गजमोहना नहीं दूँगी, क्योकि यह मेरे पिता का दिया हुआ है।"

"न तो मैंने नाई भेजा था और न बारी। तुम्हारे भाई को भी नहीं भेजा था। फिर तुम क्यो बिना बुलाए ही चली आई?"

"भाभी, मै तो अपने पिता की फुलवारी, माँ की रसोई, भाई का लड़कपन और तुम्हारा करतब देखने आई हूँ।"

"बाबा की अमराई और माँ की रसोई तो अब मेरी है। तुम्हारा तो अब तीसरा नाता हो गया है। तुम क्यो यहाँ आई हो?"

माँ की रसोई और पिता के चौबारे मे सुभद्रा विलाप करने लगीं—"माँ, तुम रसोई से निकलकर अपनी बेटी को क्यों नहीं समझातीं? अपने भाई के घर मे मैं किस प्रकार लाल-पीले वस्त्र पहनू? माँ, अपने आँचल से तुम मेरे लिये भारी गठरी बाँधो!

"यदि मै बन की कोयल होती तो जगल-जगल मे रहती। मेरा भाई पेड़ की डाल के नीचे बैठता और मैं उसे कुहुक कर अपनी आवाज सुनाती।"

सुभद्रा एक क़दम आगे बढ़ीं। दूसरे बन मे उनकी ससुराल थी। बिना माँ की बेटी होने के कारण वह रूठ कर ससुराल चली जा रही थीं।

बाहर से कृष्ण जी आए। दौड़ते हुए भीतर पहुँचे। रुक्मिणी से पूछने लगे—"रानी, तुमने बहन सुभद्रा को क्या विदाई दी?"

रुक्मिणी ने उत्तर दिया—"मैने अढ़ैया भर सोना दिया। पसेरी भर चाँदी

दी। किन्तु घमण्ड से मतवाली ननद मुझसे गजमोहना माँग रही थी। मैं उसे नहीं दे सकी।"

कृष्ण बोले—"मुझे आवा की राख और भस्म दो। अपनी बहन के रूठ जाने के कारण मैं योगी बन जाऊँगा।"

रास्ते मे एक बटोही जा रहा था। श्री कृष्ण ने उससे पूछा—"भाई, मेरी बहन अपनी ससुराल हँसती हुई गई अथवा रोती हुई?"

बटोही ने उत्तर दिया—"कृष्ण जी, क्या बताऊँ? बताते हुये शरम लग रही है। सुभद्रा के रोने से गहरी नदियाँ बह चली।"

रुक्मिणी को भी बड़ा पश्चात्ताप हुआ। वह भी चलने की तैयारी करने लगीं—"नगर के कहारों, शीघ्र आकर चन्दन की पालकी सजाओ। मैं अपनी ननद को मनाने जाऊँगी।"

भान्जा गुल्ली-डण्डा खेल रहा था। दौड़कर भीतर खबर दी—"माँ, मेरे मामा और मामी आ रहे है।"

सुभद्रा रुष्ट होकर बोली—"तुम यदि मेरी कोख से न उत्पन्न हुए होते तो तुम्हारी खाल खिचवा लेती। मेरी ही कोख से उत्पन्न होकर ऐसी बात कह रहे हो।"

वह झपट कर कोठे पर चढ़ गई। खिड़की से देखा, उनके भाई और भाभी आ रहे थे। वह तुरन्त सुनार को बुलाने लगी—"नगर के सुनार, जल्द आओ! साठ सौ गजमोहन तैयार करो और उन्हीं का पायन्दाज बनाकर बिछाओ! मेरी भाभी आ रही है। नाई को न्योछावर देना होगा।"

यह देखकर भाभी बोली—"ननद, तुम्हारे पास तो इतने गजमोहने है कि उनका पायन्दाज बिछवा दिया है, किन्तु एक ही गजमोहन के कारण तुमने अपने भाई को योगी बना दिया।"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी, इतने गजमोहने मेरे किस काम के है? तुम्हारा दिया हुआ मैं एक भी गजमोहन पाती तो उसे सारे नगर मे दिखाती। मैं सात भाइयो की बहन हूँ, किन्तु तुमने मेरा मान नहीं समझा, मेरा आदर नहीं किया।

जो स्त्रियाँ यह मगल गीत गाती हैं, इसे गाकर दूसरो को सुनाती है, उनके जीवन के पाप विनष्ट हो जाते हैं और सुनने वालों की भी सारी मनोकामनाये पूर्ण हो जाती हैं।

(४६)

बीरन के घर लाला भये हैं।

नन्दा बधाव लै आयी भउज मोरी,
चुनरी पहिनाओ भउज मोरी।

भइया हमारे मुखहू न बोले,
मैं काहे को आयी भउज मोरी।

भीतर बिरना होरिलवा खेलावै,
बाहर ननद है ठाढी भउज मोरी।

अस जिनि जानेउ भउजी हमारी,
छूछे ननद चलि आयी भउज मोरी।

अस्सी मोहर का कठुला मेरा,
अस्सी नगद लै आयेउँ भउज मोरी।

आओ ननदिया, बैठो मोरे अँगना,
होरिला को लेउ खेलाइ ननद मोरी।

जो तुम होतिउ सासु की जाई,
बिन रे बोलाये काहे आइउ ननद मोरी।

अस जिन जानेउ भउजी हो मोरी,
लेने-देने को आयउँ भउज मोरी।

लाख टका का घर-अर छोडेउँ,
करतब तोर देखन आयेउँ भउज मोरी।

छठिया धराई मैं टठिया लेबेउँ,
आँख रँगाई कटोरा भउज मोरी।

सैया चढन को घोडा लेबेउँ,
पाँव दबन को चेरी भउज मोरी।

टठिया तो अइहैं, सास लै जइहैं,
ननदी कटोरा लै जाउ ननद मोरी।

कटोरा तो देउ भाभी अपने नउन को,
उबटन पिसाई का नेग हो भउज मोरी।

अपनी ननद को चुनरी रगाऊँ,
झाझेमऊ की साडी ननद मोरी।

खडे-खडे पहिनावे बीरन भइया,
मैं रे बहिन बलिहारी भउज मोरी।

जोडा तो लोरै भाभी आडो-माडो,
भौरा लोरै फुलवारी भउज मोरी।

मेरे बीरन लोरै सेज-सुपेती,
मैं रे बहिन बलिहारी भउज मोरी।

भाई के घर पुत्र हुआ है। ननद बधाव लेकर आई है। भाभी से कह रही है—"तुम पुरस्कार मे मुझे चुनरी पहनाओ। मेरा भाई तो यह भी नहीं पूछ रहा है कि मै यहा क्यों आई हूं।"

भाई घर के अन्दर बच्चा खेला रहा है, ननद बाहर खड़ी है।

"भाभी, ऐसा मत समझना कि ननद खाली हाथ ही आई है। मैं अस्सी मुहर का कठुला ले आई हूँ और अस्सी रुपया नक़द भी ले आई हूँ।"

"ननद, आओ, मेरे आँगन मे बैठो। लो, बच्चा खेलाओ। यदि तुम मेरी सास की असली बेटी होतीं, तो मेरे घर बिना निमत्रण के ही क्यो आतीं।"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी, मुझे ऐसा मत समझो। मैं यहाँ कुछ लेने-देने आई हूँ। लाख रुपए का अपना घर और स्वामी छोड़कर मै तुम्हारा करतब देखने आई हूँ। छट्ठी धराई मे मै तुमसे थाली लूँगी और बच्चे की आँख मे काजल लगाने के बदले में कटोरा लूँगी। अपने स्वामी की सवारी के लिए एक घोड़ा लूँगी और पैर दबाने के लिए दासी लूँगी।"

भाभी बोलीं—"ननद, थाली तो मेरी सास ले जायँगी। तुम बस कटोर ही ले जाओ।"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी, कटोरा तो तुम अपनी नाउन को उबटन पिसाई के नेग में दे देना।"

भाभी मुस्कराकर बोलीं—"मैं अपनी ननद के लिए अवश्य ही चूंन रगा दूँगी। उसके लिए झामेमऊ की साड़ी भी मँगा दूंगी।"

भाई खड़ा होकर बहन को चुनरी पहना रहा है और उसकी बलाये ले रहा है

ननद पुलकित होकर आशीर्वाद दे रही हैं—"भाभी, मण्डप मे जोब शोभा देता है। फुलवारी मे भौंरा अच्छा लगता है और धवल शैया पर मे भाई सुशोभित होता है। मै बार बार उसकी बलाये ले रही हूँ।"

पालना

(५०)

पालना ले लो मोल जच्चारानी,
अपने होरिलवा के जोग जच्चारानी।

काहे का तेरा बना पालना,
काहे लागी डोर जच्चारानी ?

अगर चनन का बना पालना,
रेशम लागी डोर जच्चारानी।

घडी एक झूलै लाल पालना,
घडी दादी की गोद जच्चारानी।

बुआ झुलावै मगल गावै,
बार बार बलिहारी जच्चारानी।

पालना बेचने वाली पुकार कर कह रही है—"जच्चारानी, अपने पु- योग्य पालना खरीद लो।"

जच्चा पूछती है—"मेरा पालना किस काठ का बना है और उसमे सूत की डोरियाँ लगी हैं ?"

"मेरा पालना अगर चन्दन का बना है और उसमे रेशम के सूत की डोरियाॅ लगी हैं। तुम इसे ख़रीद लो। थोड़ी देर तक बच्चा पालने पर झूलेगा और थोड़ी देर तक वह दादी की गोद मे रहेगा।"

बच्चे की बुआ उसे पालने पर झुलाती हुई मगल गीत गा रही हैं, बार-बार बच्चे की बलायें ले रही है।

(५१)

झुला दो माई श्याम ललन पालना,
काहे का तेरा बना पालना,
काहे लगे फुदना ?

अगर चनन का बना पालना।
रेशम लगे फुदना।

कौन गुजरिया की नजर लगी है,
रोवन लागे ललना।
राई नोन मै ललना उतारौ,
खेलन लगे ललना।

एक गोपी यशोदा माॅ से कह रही है—"माई यह लो, मै पालना ले आई हूँ। तुम इसे ख़रीद लो और साॅवले श्याम को इसी मे बिठा कर झुलाओ!"

"तेरा पालना किस लकड़ी का बना है और उसमे किस सूत के फुदने लगे है?"

"माई, मेरा पालना अगर चन्दन का बना है और उसमे रेशम के फुदने लगे हैं।"

झूलते झूलते बालकृष्ण रोने लगे। यशोदा माँ घबरा गई—"किस छबीली नारी की नजर लग गई, जिसके कारण मेरा बच्चा रोने लगा?"

मैंने सरसो और नमक उतारा। नज़र का रोग दूर हो गया। बच्चा पुनः हॅसता हुआ खेलने लगा।

झुनझुना

(५२)

झुन झुना गढ़ि लाई मनिहारिन।

हीरा लाल सबूजे रग को,
बिच-बिच ककड डाली मनिहारिन।
जब यह झुनझुना बाजन लागे,
दादी बलइया ले मनिहारिन॥

जब यह लटुआ चटकन लागे,
जब यह भँवरा गूजन लागे।
नानी मुगल घर जाये मनिहारनि,
मामी मौसी हमारे घर आवे मनिहारिन।

मनिहारिन झुनझुना बनाकर ले आई। लाल और हरे रङ्ग के हीरों का झुनझुना बनाया है। बीच बीच मे ककड़ की गोलियाँ भरी गई है।

बच्चे के हाथ मे झुनझुना बज रहा है। बच्चे की दादी उसकी बलायें लेती हैं और आनन्द-विह्वल होकर मजाक के स्वर मे कहती हैं कि जब यह लट्टू चटकने लगे, जब यह भौंरा गुजार करने लगे तो बच्चे की नानी जहाँ पराए घर चली जाय, वहाँ उसकी मामी और मौसी हमारे घर मे आकर बच्चे की बलाये लें।

बधइया

(५३)

राज घरे ननदी लाई रे बधइया।
पहली बधइया दुवरवा पै बाजी,
बाबू का जियरा हुलसै।
दुलारी धिया आय गयी लै कै बधइया॥

दुसरी बधइया अँगनवाँ में बाजी,
मइया का जियरा हुलसै।
धिया मोरी आय गयी लैके बधइया॥

तिसरी बधइया बरोठवा में बाजी,
भइया का जियरा हुलसै।
बहिन मोरी आय गयी लैके बधइया॥

चौथी बधइया ओबरिया में बाजी,
भाभी का जिया घबडान।
लूटन हमें आय गयी लैके बधइया॥

पँचईं बधइया पलँगिया पे बाजी,
होरिलवा का जियरा हुलसै।
बुआ मोरी आय गयी लैके बधइया॥

पुत्र-जन्म के समारोह मे बहू की ननद अपनी ससुराल से 'बधाई' लेकर आती है। उसी अवसर का एक गीत है—

राजा के घर ननद बधाई लेकर आई है। पहली बधाई दरवाजे पर बजी। पिता का हृदय पुलकित हो उठा। उसे ज्ञात हो गया कि दुलारी पुत्री बधाई लेकर आ गई।

दूसरी बधाई आँगन में बजी। माँ हर्ष-विभोर हो गई। उसे तुरन्त ध्यान आया—"मेरी बेटी बधाई लेकर आ गई।"

तीसरी बधाई बरोठे मे बजी। भाई यह जानकर गद्गद् हो गया कि बहन बधाई लेकर आ गई है।

चौथी बधाई ओबरी मे बजी और लोग उसकी ध्वनि से हर्षित हुए। किन्तु भाभी को तो ननद को नेग देना था, इसलिए उसका दिल घबड़ाने लगा। उसे ख्याल आया—"ननद बधाई लेकर हमे लूटने के लिए आ गई।"

पाँचवीं बधाई जच्चाखाने के पलँग पर बजी। नवजात पुत्र किलकारियाँ मारने लगा। उसे यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि मेरी बुआ बधाई लेकर आ गई।

(५४)

आजु मोरे लीपन-पोतन ललन अन्न-प्रासन,
ललन अन्न-प्रासन हो।

सासु नेवतेउ अरिगन परिगन नइहर सासुर,
अउर अजियाउर हो।

आये हैं नइहर सासुर अउर अजियाउर लोग कुटुम,
अरे लोग कुटुम हो,

ननदी एक नही आये बीरन, जिया मोरा कल्पत
जिया मोरा कल्पत हो।

द्वारे पर बाजत नौबत, बीरन मोरे आये,
आँगन मोरे आये हो।

सासु अँगने में चौक पुरावौ ललन अन्न प्रासन,
ललन अन्न प्रासन हो।

कपिला दुधवा दुहाएउँ साठी के चाउर,
साठी के चाउर हो।

बहुवा कोछे में लेउ ललनवाँ मइँ जाउर चटावउँ,
मइ जाउर चटावउँ हो।

बहू हर्ष-विभोर होकर कह रही है—"आज मेरे घर मे, मेरे आँगन मे लिपाई-पुताई हो रही है। आज मेरे लाल का अन्न-प्राशन है। आज वह पहली बार अन्न ग्रहण करेगा।"

"सास ने समस्त सम्बन्धियों, स्वजातियों, नैहर, ससुराल और मेरे अजियाउर तक के लोगों को निमन्त्रित किया। हर जगह के सभी कुटुम्बी और सम्बन्धी आए, एकत्रित हुए। लेकिन ननद, अकेला मेरा वह भाई नहीं आया, जिसके लिए मेरे प्राण दुखी हैं, आकुल हैं।"

"द्वार पर नौबत बज रही है। मेरा भाई आ गया, मेरे आँगन में मेरा भाई आ गया।"

"सास, आँगन में चौक पुराओ, आज मेरे लाल का अन्न प्राशन है।" सास ने उत्तर दिया—"बहू! मैंने कपिला गाय का दूध दुहाया है। साठी के चावल की खीर बनवायी है। तुम गोद में पुत्र को लो, मै उसे खीर खिलाऊँगी। आज लाल का अन्न प्रासन है, मै उसे खिलाऊँगी।"

सोहर

(५५)

पनवाँ बिरौना एक सुन्दर,
देखत सुहावन हो।
पनवाँ चढ़ि गये ससुरु महलिया,
तउ लागत सुहावन हो।
सेइ पान खाएनि कवन रामा,
दँतुली रचावइँ हो।
पीक डारइँ बहुरिया के अँचरा,
तउ देखत सुहावन हो।
मचियइ बइठी हैं सासु तो,
बहुवा अरज करइँ हो।
बहुवा कवन रचेस तोर अँचरा,
तउ देखत सुहाबन हो?
काउ कहउँ सास कहत लाज लागइ,
सासु तोर पूत छैल चिकनियाँ।
अँचरा पीक डारइँ,
तउ देखत सुहावन हो।
मोर पूत बसइ आनन्द बन,
तुम धउराहर हो।

बहुआ कवन छयल चित लायेउ,
तउ गरभ जनायेउ हो ?

तोर पूत बसइ आनन्द बन,
हम घउराहर हो।
सासु, भौरा भेलष धइ आवई,
मँइ गरभ जनायेउँ हो ?

मोरे पिछवारे पटहरवा, लागउ मोरे बीरन,
पटहर रेसम डोरिया जे आनउ।
मँइ चोरवा फँसावउँ,
सासु के देखावउँ हो।

मोर पूत गया क गजाधर,
प्रयाग बेनी माधो हो।
बहुआ, मोर पूत सबका दुलरवा,
ढीलेनि अग बाँधेउ हो।

का करउँ गया के गजाधर,
प्रयाग बेनी माधो से।
सासु का करउँ सबका दुलरुवा,
करेजे बोली सालइ हो।

तब तउ बन्हतेऊ मँइ ढीले अग,
अउर फूलेनि अग हो।
सासु अब मैं बान्हउँ पारी लाइ,
छोडाए नहि छूटइँ, भगाये नहिं भागइ।

पान का एक सुन्दर बिरवा है। देखने मे बहुत भला लगता है। उसकी बेल ससुर के महल के ऊपर तक चढ़ गई।

अमुक पति ने वह पान खाया। उसके दाँत रग उठे। बहू के आँचल पर उसने पान का दाग डाल दी। देखने में पान का दाग बहुत सुन्दर लग रहा है।

मचिया पर बैठी हुई सास बहू से पूछ रही है—"बहू तुम्हारे आँचल पर यह कैसा रग पड़ गया है ?"

"सास जी, क्या बताऊँ ? कहते हुए शरम लग रही है। आप के छैल-छबीले पुत्र ने मेरे आँचल पर पान का दाग डाल दी है।"

सास बोली—"बहू, मेरा पुत्र तो आनन्द वन में रहता है। और तुम धौरहरे मे रहती हो। साफ साफ बताओ ! किस पराए व्यक्ति से प्रीति जोड़कर तुमने गर्भ धारण किया है ?"

"सास जी, यह सच है कि हम दोनो अलग-अलग है। तुम्हारा पुत्र आनन्द वन मे है और मै धौरहरे मे हूँ, किन्तु वह भौरे का वेश बना कर मेरे पास आता है और मैने उसी का गर्भ धारण किया है।"

इसके बाद बहू पटहार को बुलाती हुई कहने लगी—"मेरे पिछवाड़े रहने वाले पटहार भाई, तुम रेशम की डोरी ले आओ। मै चोर फँसा कर उसे अपनी सास के सामने हाजिर करूँगी।"

सास बोली—"बहू, मेरा पुत्र उतना ही महिमावान् है जितने कि गया के गदाधर और प्रयाग के बेणी माधव भगवान् है, वह सबका प्रिय और स्नेह-पात्र है। उसे तुम यदि बाँधती हो, तो ढीली रस्सी से ही बाँधना।" बहू ने उत्तर दिया—"सास जी, भले ही वह गया का गदाधर और प्रयाग का वेणीमाधव है, भले ही सबका स्नेहपात्र है, लेकिन मै क्या करूँ ? मुझसे आपका ताना नहीं सहा जाता।"

"पहले तो मै इसे ढीली और हलकी रस्सी से ही बाँधती, लेकिन अब तो अपनी सेज की पाटी से इस तरह कसकर बाँध दूँगी कि छुड़ाने पर भी नहीं छूट सकेगा, भगाने पर भी नहीं भाग सकेगा।

(५६)

जियरा खोलि के माँगउ ननदी,
मन चाहै सो आजु माँगउ ननदी।

बरतन न माँगो, मोरे चौके का सिंगार है,
बरतन में से करछुल देबइ,
खोरिया लेबइ काटि।

हुण्डा न माँगो, घिरौची का सिगार है,
हुण्डा में से गगरा देबइ,
पेंदा लेबइ काटि ।

गहना न माँगो, डिब्बे का सिगार है,
गहना में से अरसी देबइ,
छल्ला लेबइ काटि ।

साडीं न माँगो, तोरी भाभी के जोग है,
साडी में से साया देबइ,
सबही लेबइ काटि ।

सेजा न माँगो तोरे भइया के जोग है,
सेजा में से पलँगा देबइ,
झिनगा लेबइ काटि ।

गइया न माँगो, तोरे भतिजवा के जोग,
गइया का दुहइया मेरी ननदी का यार।

घोडा न माँगो, तोरे बीरन के जोग हैं।
घोडे का सईस, मेरी ननदी का यार ।

बच्चा पैदा होने पर उसकी बुआ, अर्थात् बहू की ननद का नेग सबसे बड़ा होता है। लेन-देन मे ननद और भाभी की छेड़-छाड़ मशहूर है। वह कुछ माँगती है, भाभी देने से इन्कार करती है। आखिर आसानी से मिल जाने वाली चीज की कीमत भी तो नहीं समझी जाती। प्रस्तुत गीत मे ननद और भाभी की एक ऐसी ही रस-पूर्ण नोक-झोंक देखने लायक है।

बहू कह रही है—"ननद, तुम दिल खोलकर माँगो। जो इच्छा हो, वह ले लो लेकिन, तुम बर्तन मत माँगना, क्योंकि वे मेरी रसोई के शृंगार है। बर्तनों में तुम चाहो तो एक करछुल ले लो, परन्तु कटोरा नहीं मिलेगा।

"हण्डा मत माँगना, क्योंकि मेरी घिरौंच की वही शोभा है। हाँ, चाहो तो गगरा ले लो, लेकिन उसका पेंदा मै निकाल लूँगी।

"गहने मेरे डिब्बे के सिंगार हैं, अतः उन्हें मत माँगना। वैसे तुम एक आरसी ले सकती हो, लेकिन छल्ला नहीं पाओगी।

"साड़ी मत माँगो। वे बस मेरे ही पहनने लायक है। लेकिन मै तुम्हें साया दे दूँगी, बाकी और कुछ नहीं पाओगी।

"सेज मत माँगो, वह तुम्हारे भाई के सोने लायक है। तुम्हें खाली पलँग दे दूँगी, लेकिन झिनगा नहीं दूँगी।

"गाय मत माँगो, उसका दूध तुम्हारा भतीजा पियेगा। गाय का दुहने वाला मेरी ननद का यार लगता है।"

'घोड़ा मत माँगो, उस पर तुम्हारा भाई चढेगा। घोड़े का साईस मेरी ननद का यार है।'

(५७)

पनवँड़ अस गोरी पातरि, कुसुम रग सुन्दरि,
चढि गयी ऊँची अँटरिया, झरोखवन चित गएउ हो।

झपटि के उतरी अँटरिया, आँगन बिच ठाढि भयी,
सासु तोर पूत ठाढ पिछ्वरवा, हेलिनिया से बिहँसइ हो।

हँसि-हँसि हेलिनि बोलावइँ, बिहँसि बात पूछइँ,
हेलिनि, कौने रस भोरएउ पिउ मोर;
कौने रस राखेउ, कवने बिधि राखेउ हो?

हँसि-हँसि बोलइ हेलिनिया, सुनउ रानी बतिया,
बहुवा फूलन सेजिया दसाएउँ, नयन रस राखेउँ हो;
बहुवा हँसि हँसि बेनिया डोलाएउँ, नयन रस लोभी हो।

एतनी बचन जब सुनेनि, सासु के बोलावइँ रे,
सासु तोरी जे बहुवा गरभ से, गरभ जनाएउ हो;
सासु पियवा के आनउ बोलाइ, ससुरके जनावउ हो।

बहरे से आये कवन रामा, धनिया बोलावइँ हो,
रनिया सूनि बाटइ मोरि गजओबरि, एक होरिल बिन हो।

भोर होत पउ फाटत, होरिला जनम भयें,
ननदी देउ न बिरना जगाइ, सुनइँ घर सोहर हो।

पान जैसी पतली और फूल जैसी सुन्दर बहू ने कोठे पर चढकर खिडकी के रास्ते से कुछ देखा। झपट कर वह नीचे उतर आई और आँगन में पहुच कर सास से शिकायत करने लगी—"सास जी, आपका पुत्र पिछवाड़े खडा होकर हेलिन से हँस रहा है और नेत्रों से उसके रूप रस का पान कर रहा है।"

बहू ने हेलिन को बुलाकर हँसते हुए उससे पूछा—"हेलिन, भला बता! किस प्रकार तूने मेरे स्वामी को फुसलाया, किस प्रकार उसे अपने पास रखा और कैसा उसका स्वागत-सत्कार किया?"

हेलिन ने हँसते हुए उत्तर दिया—"बहू मैने उनके लिए फूलों की सेज तैयार की, अपने नेत्रों का रस पान कराया, हँस-हँस कर उन्हे पखा झला। मेरी भी आँखे उनके रूप पर लुब्ध थीं।"

यह बात सुनकर हेलिन ने घर की सास को बुलाया और उससे कहने लगी—"सास जी, आपकी बहू का पेट गर्भ से भारी हो आया है। इसके स्वामी को सूचित करो, इसके ससुर को खबर दो।"

बाहर से अमुक पति आया। पत्नी को बुलाकर गोद मे बिठा लिया। और कहने लगा—"रानी, कोई पुत्र न होने से मेरा राज्य एकदम सूना लगता है।"

प्रभात का नव अरुणोदय होते ही घर मे पुत्र ने जन्म लिया। बहू ननद से कहने लगी—'मेरी ननद, जाकर अपने भाई को जगा दो, प्रसन्न होकर वे सोहर सुने। घर मे बच्चा पैदा हुआ है।"

(५८)

चन्दा तउ लागइ मोर भइया, बदरिया मोरि बहिनी रे,
बदरी जाइ बरसउ वोहि देश, जहाँ साजन भीजइँ हो।

भिजत भिजत जब आयें डेउढिया के ठाढ भये,
रानी, खोलि देतिउ चनन केवरिया, पैतनवा के सोउब हो।

की तुँहुँ चोर, पहरुवा, की चोरवा के भइया रे,
राजा की तुहुँ होरिला के बाप, पैतनवा मोरे सोउबेउ हो?

न हम चोर, पहरुवा, न चोरवा के भइया रे,
धनियाँ हम तउ होरिलवा के बाप, पैतनवाँ तोरे सोउब हो।

एक तउ साकरि खटिया, दुसरे गोदी ललना,
सइयाँ लइ लेतेउ मूठी भर पुवरवा, ओसरवा डासि सोवउ हो।

पुरुबू पछिउँ कइ बयरिया, पुवरवा उडि जइहइँ,
धनियाँ, खोलि देतिउ चनन केवरिया, होरिलवा मुख देखिति हो।

एक पाउँ धरेनि डेहरिया, दुसर गज ओबरि हो,
तीसर पाँउँ धरेनि सेजरिया, मुरुगवा बोली बोलइ हो।

रहु-रहु बइरी मुरुगवा, डखनवा तोर तोरउ, केसरि नोचउँ,
मुरगा, बरिस-बरिस कइ कुफुतिया, पिया नाही सुनइ पाये हो।

चन्दा मेरा भाई है। बदली मेरी बहिन है।

"बदली, मेरी बहिन, जाकर उस देश मे बरसो जहाँ मेरा प्रियतम भींग जाये।

भींगते-भींगते पति घर लौटा। द्वार पर खड़ा होकर बोला—"मेरी रानी, चन्दन के किवाड़े खोलो। मै तुम्हारे पैंताने सोऊँगा।"

भीतर से पत्नी ने पूछा—"क्या तुम चोर हो, या पहरेदार अथवा चोर के भाई हो? अथवा क्या तुम पुत्र के पिता हो, मेरे प्रियतम, जो कि इतनी रात आकर मेरे पैताने सोना चाहते हो?"

"न तो मै चोर हूँ और न पहरेदार! चोर का भाई भी नहीं हूँ। मेरी पत्नी मेरी रानी, मै तो पुत्र का पिता हूँ। अपना पुत्र देखने आया हूँ, तुम्हारे पैंताने सोने आया हूँ।"

पत्नी आगे बोली—"एक तो सँकरी चारपाई है, दूसरे गोद में पुत्र लिए हूँ। साजन, तुम मुट्ठी भर पुआल ले लो और ओसारे मे बिछाकर सो रहो।"

पति ने उत्तर दिया—"रानी, पूरब और पश्चिम की तेज हवायें चल रही हैं। पुआल बिखर कर उड़ जायेंगे। तुम चन्दन के किवाड़ खोल दो, ताकि मैं बच्चे का मुँह देख लूँ।"

पति ने एक पाँव देहरी पर रखा दूसरा गजओबरी में और तीसरा सेज पर। इतने में ही मुर्गा बाँग देने लगा।

"रुको, रुको, मुर्गे! मै तुम्हारे पख तोड़ दूँगी, कलँगी नोच डालूँगी। बरसों की अपनी कोफ़्त अभी मै प्रियतम को नहीं सुना पायी। थोड़ी देर तक और चुप रहो, तब बोलना, तब भोर होने की सूचना देना।"

(५६)

जउ मइँ जनतेउँ ए दइया, राम जनम होइहइँ,
करतेउ मँइ राम कइ बरहिया, इन्द्र बोलवतेउ हो।
इन्द्र के हाथे अमरित फहवा, होरिला अमर करतेनि हो।

एक फूल फूलइ बनारस, दुसर फूल गोकुल,
तीसर फूल फुलवरिया, चउथ मोरे आँचर हो।
इन चारिउ फुलवा जउ पउतिउँ, हरवा गुथवतिउ,
देतिउ ललन पहिराइ, तउ सब जग मोहत हो।

जे यहि मँगल गावइँ, गाइ के सुनावइ,
जनम-जनम अहिबात, तउ पूत फल पावइ हो।

यदि मै जानती कि श्री राम जन्म लेंगे, तो अवश्य ही उनकी बरही करती, इन्द्र को निमत्रण देकर बुलाती। वे अमृत का फाहा लेकर आते और मेरे पुत्र को अमर कर देते।

एक फूल बनारस मे खिलता है। दूसरा गोकुल में, तीसरा फुलवारी में और चौथा फूल मेरे आँचल में खिलता है। अगर मै इन चारों फूलों को पाती तो इनका हार गुथवा कर पुत्र को पहनाती, सारा ससार उसे देखकर प्रसन्न होता।

जो नारियाँ यह मगल गीत गाती हैं और गाकर सुनाती हैं, उनका जन्म भर अहिवात बना रहता है और उन्हें पुत्र,फल प्राप्त होता है।

(६०)

ननदिया न आवै मोरे अगना,
हमारे घर लाला हुए।

सासु जी का नउवा, जेठानी का बोलउवा।
ननदिया के एको न बोलउवा,
हमारे घर लाला हुए।

सासु जी का पियरी, जेठानी के चुनरी,
ननदिया का एको नहिं लत्ता,
हमारे घर लाला हुए ।

सास जी का मोहर, जेठानी के असरफी,
ननदिया का एको नहिं पैसा,
हमारे घर लाला हुए ।

सास जी का लड्डू, जेठानी को पेडा,
ननदिया को एको नाही गट्टा,
हमारे घर लाला भये ।

सास जी को डोलिया, जेठानी को डडिया,
ननदिया को एको नाही खच्चड,
हमारे घर लाला भये ।

सास जी का दिया मेरे घर में रहेगा,
जेठनिया का अदला-बदला,
ननदिया का दिया नाही लौटे,
हमारे घर लाला भये ।

पुत्र जन्म का उत्सव है । सारे सगे सम्बन्धी एकत्रित हैं, किन्तु ननद अभी तक अपनी ससुराल से नहीं आई । भाभी का मन उसके लिए आकुल व्याकुल हो रहा है ।

मेरे घर मे पुत्र हुआ है, लेकिन ननद अभी तक मेरे आँगन में नहीं आई । सास जी के लिए नाई भेजा गया । जेठानी को बुलाया गया, लेकिन ननद को बुलाने के लिए कोई नहीं गया ।

सास को पियरी दी गई । जेठानी को चुनरी दी गई । लेकिन ननद को कोई भी कपड़ा नहीं दिया गया ।

सास को मुहर और जेठानी को अशरफी दी गई, किन्तु ननद को एक भी पैसा नहीं दिया गया । सास को लड्डू और जेठानी को पेड़ा दिया गया । ननद को एक गिट्टी भी नही मिली । सास को डोली और जेठानी को पालकी दी गई, परन्तु ननद की सवारी के लिए कोई खच्चर भी नहीं दिया गया ।

सास को जो कुछ दिया गया, वह तो मेरे घर में ही रहेगा। जेठानी का अदला बदला होता रहेगा। उनकी चीजें मेरे घर आती रहेंगी और मेरी उनके घर जाती रहेगी। लेकिन ननद को तो जो कुछ दिया जाता है, वह फिर वापस नहीं मिलता। वस्तुतः वही तो वास्तविक दान होता है।

(६१)

ननद मोरी आय गई सोना चिरइया,
आवौ ननद जी बैठो अँगन मोरे,
आज झगडने की बेला।

हाँथे का भाभी कगना लेबइ,
सइया गले का तोडा,

पहिरन का भाभी साडी लेबइ।
सइयाँ का पाँचो जोडा।

चढने का भाभी डोला लेबइ,
सइयाँ चढन का घोडा।

ऐतना माँगन मागौ मोरी बीबी,
भइया करिहैं बिदइया,
ननद मोरी आय गइ सोना चिरइया।

पहिरि ओढि ननदी घर का सिधारैं।
जुग-जुग जीवे मोरा भइया ?

सोने की चिड़िया जैसी मेरी ननद आ गई।

"ननद, आओ, मेरे आँगन में बैठो। आज मुझसे तुम्हें तकरार और ठनगन करने की शुभ घड़ी आई है।"

ननद कहती है—"भाभी, मैं तुमसे अपने हाथ के लिए कगन लूँगी और अपने स्वामी के गले के लिए तोड़ा लूँगी। अपने पहनने के लिए साड़ी लूँगी और अपने स्वामी के लिए पाँचों पोशाकें लूँगी। अपनी सवारी के लिए तुमसे पालकी लूँगी और अपने पति के लिए एक घोड़ा लूँगी। इतनी चीजें

मैं तुमसे माँग रही हूँ। इन सब के साथ मैया मेरी अच्छी तरह से विदाई करेंगे।

पहन-ओढ़ कर, भाई को युगों तक जीने का आशीर्वाद देते हुए, ननद ने अपनी ससुराल के लिए प्रस्थान किया।

(६२)

चाहे गुस्सा करो, ननद न बोलउबै।

ननदी अइहै गहना मगिहैं।
चाहे गुस्सा करो, एक छल्ला न देबैं।

तुम गुस्सा करो, एक छल्ला न देबो।
हम गुस्सा करबई, कँगन लैके जाबैं।

ननदी अइहै, साडी मँगिहैं।
चाहे गुस्सा करो, एक लत्ता न देबैं।

तुम गुस्सा करो, एक लत्ता न देबो।
हम गुस्सा करबैं, सालू लैके जाबैं।

ननदी अइहैं, बरतन मँगिहै।
चाहे गुस्सा करौ, एक लोटिया न देबैं।

तुम गुस्सा करौ, एक लोटिया न देबो।
हम गुस्सा करबैं, सागर लैके जाबैं।

नेग नहीं देबो, होरिल लै जइहैं।
हमार मन होय, सेजिया नहिं अउबै।

पुत्र जन्म के अवसर पर पत्नी अपने पति से कह रही है—"प्रियतम, भले ही तुम नाराज हो जाओ, लेकिन मै ननद को अपने घर नहीं बुलाऊँगी। ननद आयेंगी तो गहने माँगेंगी। लेकिन मै उन्हें एक छल्ला भी नहीं दूँगी।"

पति ने उत्तर दिया—"तुम रुष्ट होकर एक छल्ला भी नहीं दोगी, लेकिन मैं कगन लेकर अपनी बहन के पास जाऊगा।"

"ननद आयेंगी तो साड़ी माँगेगी, तुम भले ही अप्रसन्न हो जाओ, किन्तु मैं एक लत्ता भी नहीं दूँगी।"

"रानी, तुम एक लत्ता भी नहीं दोगी, किन्तु मै उसके लिए सालू लेकर जाऊँगा।"

"ननद आने पर बर्तन मागेंगी, लेकिन मै उन्हें एक लुटिया भी नहीं दूँगी।"

"प्रिये, तुम एक लुटिया भी नहीं दोगी, किन्तु मैं उसके लिए सागर लेकर जाऊँगा। तुम मेरी बहन को नेग नहीं दोगी तो वह बच्चा उठा ले जायगी और मै तुमसे रूट होकर तुम्हारी सेज पर भी नहीं आऊँगा।"

(६३)

नदिया के घाटे एक तिरिया, केवटा-केवटा करइ हो,
केवटा, नइया लगउतेउ पार, नइहर हम जाबइ हो।

की दुख बाटइ सासु का, की सइयाँ तोर दूरि बसइ हो,
तिरिया कवने दुखन चलि आइयु, नइहर बाट ताकेउ हो ?

नाही दुख सासु कर, नाही सइया दूरि बसइ हो,
केवटा कोखिया का दुख मोहिं दारुन, नइहर बाट ताकेउँ हो।

सासु के लागउ झुकि पड़याँ, ननद के कलेवा देउ हो।
तिरिया सइयाँ की साजउ सेजरिया, होरिल तोरे होइहइँ हो।

आठ महीना नउ बीते, होरिल घर जनमें,
बाजै लागी अनन बधइया, उठन लागे सोहर हो ?

नदी के तट पर खड़ी एक स्त्री केवट को पुकार रही है—"केवट भाई, नाव उस पार ले चलो, मै अपने नैहर जाना चाहती हूँ।"

केवट ने पूछा—"स्त्री, क्या तुम अपनी सास के का ण दुखी हो, अथवा तुम्हारा पति परदेस में रहता है ? किस दुख से तुम नैहर जाना चाहती हो, वह तो बहुत दूर है ?"

स्त्री ने उत्तर दिया—"न तो मुझे सास का दुख है, और न मेरा पति ही मुझसे दूर रहता है। मेरे केवट, मैं सन्तानहीन हूँ। मुझे केवल कोख का

दुख है । इसीलिए अब नैहर में जाकर वहा योगिनी का बाना धारण कर लूँगी।"

केवट ने समझाया—"भोली स्त्री, तू झुककर अपनी सास के चरणों का स्पर्श कर । ननद को प्यार से कलेवा खिला और अपने स्वामी के लिए सेज रचा । तुम्हारे अवश्य ही पुत्र होगा ।

आठवें के बाद नवा महीना बीतते ही घर मे पुत्र ने जन्म लिया । द्वार पर आनन्द की बधाइया बजने लगीं और आगन में सोहर गाया जाने लगा ।

(६४)

सुगना तउ बोलइ पिंजरवा, कगा अँटरिया बोलइ हो,
सुगना तउ बोलइ हरिहर, कागा बोलइ पिया-पिया हो ।

की मोर आवइ बिरनवाँ, की सइयाँ कइ पाती आवइ हो,
कागा कवनिनि बोल तुहूं बोलउ, बोलिया सुहावनि हो ?

नाही तोर आवइ बिरनवा, न सइयाँ की पाती आइव हो,
बहुआ, आजु के नवये महिनवाँ, होरिल तोरे होइहॅइ हो ।

काहे कटु बोली तुहूँ बोलउ, बोलन नाही आवइ हो,
कागा, जनम कइ दुखी मोरि कोखिया, होरिल कइसे होइहँइ हो ?

तोरे होइहइँ होरिलवा, काउ हमुइँ देबिउ, कवने रग भोजन,
बहुआ होरिला देखि भूलि जाबेउ, गरब भरि जाबेउ हो ।

सोने रूप टोटवा मढउबइ, मोनिया चुनउबइ हो,
कागा, दूध-भात तोर भोजन, कटोरवा में देबइ हो ।

जुग-जुग जीवइ तोरा होरिला, अमर होइ सेन्हुर हो,
बहुवा, बाढइ नइहर-सासुर, अमवा अमिलिया जस हो ।

तोता पिंजड़े मे बोलता है और काग अटारी पर ।
तोता राम-राम बोलता है और काग पिया-पिया बोलता है ।

"मेरे काग, क्या मेरा भाई आने वाला है, अथवा प्रियतम का पत्र मिलने वाला है ? तुम कौन-सी बोली बोल रहे हो ? बोलने और सुनने मे यह बहुत सुहानी लग रही है ।

"न तो तुम्हारा भाई आ रहा है और न प्रियतम की पाती ही आ रही है। बहू, आज के नवें महीने तुम पुत्र को जन्म दोगी।"

"काग, तुम क्यों ताना मार रहे हो? बात कहने का ढंग भी, तुम्हें नहीं आता। मेरी कोख तो जन्म से ही दुखी है, फिर भला पुत्र कैसे पैदा होगा?"

काग ने आगे पूछा—"अच्छा, यदि तुम्हारे पुत्र हुआ तो मुझे क्या दोगी? किस प्रकार का भोजन दोगी? बहू, तुम तो पुत्र का मुँह देखते ही गर्व से भर जाओगी।"

बहू ने उत्तर दिया—"काग, यदि मेरे पुत्र होगा तो तुम्हारी चोंच सोने से मढ़ा दूँगी, तुम्हें मोतियाँ चुगाऊँगी और कटोरे में दूध-भात खिलाऊँगी।"

काग ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया—"बहू, तेरा पुत्र युगों तक जीवित रहे, तुम्हारे माँग का सिन्दूर बना रहे और तुम्हारे नैहर और ससुराल का आम और इमली की भाँति विस्तार हो।

(६५)

सोवत रहलेउँ अँटरिया, सपन एक देखेउँ हो,
सासु सपने का करउ बिचार, सपनवाँ बड अवगुन हो।

बॅम्हना तउ देखेउँ निसरत, गइया के बेढत हो
सासु, अमवाँ तउ देखेउँ बउरत, अमवा फल लागत हो।

चुप रहु बहुवा, तू चुप रहु, बैरिनि नाही सुनइँ हो,
बहुवा, सुनि के सपनवाँ सिहइहइँ, सपनवाँ बड शुभकर हो।

बँम्हना तउ अहेनि नरायन, गइया तोरी लछिमी,
बहुवा, अमवाँ तउ तोर सन्तति, सन्तति सुख पाएउ हो।

भोर होत पउ फाटत, होरिला जनम भये हो,
बाजै लागी अनन बधइया, उठन लागे सोहर हो।

बॅम्हना के दिहेउँ हीरा मोतिया, गइया के सोन खुर हो,
सखिया अमवाँ बउर दूध सीचउ, बहुतइ सुहावन हो।

एक बहू अपनी सास से एक स्वप्न का वर्णन कर रही है—

'मैंने अटारी पर सोते समय एक स्वप्न देखा ! सास जी, आप इस स्वप्न का विचार करें। यह तो बहुत अशुभ था, बहुत अवगुण पूर्ण था।

'मैंने एक ब्राह्मण को निकल कर गायों को रोकते हुए देखा। एक आम के पेड़ को बौराते हुए, उसमें फल लगते हुए देखा।"

सास बोली—"खामोश रह, बहू ! कोई बात मत कर। कहीं बैरिनें न सुनने पायें। वे यह सपना सुनेंगी तो इससे बड़ी डाह करने लगेंगी, शाप देने लगेंगी। तुम्हारा स्वप्न बहुत शुभ है, बहुत गुणकारी है। ब्राह्मण तो स्वयं नारायण भगवान् थे और गाय लक्ष्मी थी, और मेरी बहू, आम तुम्हारी सन्तति था। तुम्हें सन्तान-सुख प्राप्त होगा, पुत्र का फल मिलेगा।"

नव विहान के स्वर्णिम अरुणोदय में पुत्र ने जन्म लिया। आनन्द के बधाव बजने लगे। सखियाँ सोहर गाने लगीं।

सहेलियाँ बहू से कहने लगीं—"सखी, ब्राह्मण को हीरे-मोतियों का दान दो। गाय का खुर सोने से मढ़ा दो और आम के बौर को दूध से सींचो। बहुत शुभ हुआ है, बड़ी सुन्दर और सुहानी बेला आई है।

लोरी (६६)

आ री निदरिया तू प्यारी निदरिया !
ललना की अँखियो पे छा री निंदरिया,

गगन मँडल से चदा बुलावे,
तारो से खेले तेरी निदरिया,
ललना की अँखियो पे छा री निंदरिया।

आ री निंदरिया तू आ री निंदरिया !
पलना झुलत राम निदिया न आवे,
भर लेत गोदी में दशरथ की रनियाँ,

ललना के नैनो में छा री निंदरिया।
आ री निदरिया तू प्यारी निदरिया !

आ, प्यारी नींद, तू मेरे लाल की आँखों पर छा जा !

आकाश-मण्डल से तुझे चन्द्रमा बुला रहा है। तू तारों से खेल रही है। प्यारी नींद, तू नीचे आ और मेरे लाल की आँखों में वास कर !

राम पालने में झूल रहे हैं। उन्हें नींद नहीं आ रही है। दशरथ की रानी कौशल्या राम को अपनी गोद में भर लेती है। उनके लिए निद्रा का आह्वान् करती हैं।

(६७)

झरवइया बुलाउ, अरी बैदा बुलाउँ,
मोरे लालन को टोना लगो।

ना लालन सोने लाली पलगिया, ना मैया गोद री,
टोना लगो, हेरी टोना लगो।

गोकुल नगरिया से आयी छोकरिया ललना लेगयी उठाय री,
टोना लगो, हेरी टोना लगो।

अरी सखी, ओझा बुलाओ, वैद्य बुलाओ। मेरे लाल को टोना लग गया है। न तो वह लाल पलॅग पर सोता है और न माँ की गोद में ही उसे नीद आती है। अवश्य ही किसी ने जादू-टोना कर दिया है। इसीलिये नींद नहीं आ रही है।

गोकुल नगर से एक लड़की आई। वह मेरे लाल को उठा ले गई।

(यहाँ गोकुल की लड़की से निद्रा का ही तात्पर्य है।)

(६८)

आ जा री निदिया, निद्रा बन से,
मेरा मुन्ना सोवे छनिक भर में।

तोसक तकिया पटने से,
आ जा री निंदिया निद्रा बन से।

मुन्ना आवे ननियउरे से,
दादी खेलावे अजियउरे से।

आ जा री निदिया निद्रा बन से,
मेरा मुन्ना रोवे छनिक भर में।

प्यारी नींद, मैं तुझे बुला रही हूँ। तू निद्रा वन से आ, ताकि मेरा लाल क्षण भर में सो जाय।

मैंने पटने से तोशक और तकिया मँगाया है। उस पर मेरा लाल लेटा है। प्यारी नींद, तू आ और मेरे मुन्ने की आँखो मे विश्राम कर।

मुन्ना ननिहाल से लौटा है। दादी अजियाउर मे उसे खेला रही है। प्यारी नींद, तू आ और मेरे मुन्ने को सुला दे!

(६६)

मोरा मुन्ना, मोर मुन्ना का करऽले,
तिसिया के तेल में फुलेल खेलऽले।
माछर को मार-मार घर भरऽले,
दुशमन की अखियाँ धमक गइले।
खेल-कूद मुन्ना जब थकि गइले,
मइया की गोद में सूत गइले।
आजी दादी की गोद में सूत गइले,
हाँ जी बुआ की गोद में सूत गइले॥

मेरा मुन्ना क्या कर रहा है?

मेरा प्यारा मुन्ना तीसी के तेल मे फुलेल खेल रहा है। मच्छरों को मार-मार कर घर मे उनका ढेर लगा रहा है। उसे देखकर दुश्मनों की आँखें फूटी जा रही हैं।

खेल कूद से मुन्ना थक गया। वह चुपचाप माँ की गोद में सो गया, आजी और बुआ की गोद मे सो गया।

———

मुन्डन

मभवा में बइठे कवन रामा, धनिया अरज करइ,
साहेब झालरि छेके है लिलार, झलरिया अब मुडावउ।

कइसे मुडावउँ झलरिया, झलरिया झलरिया करउ,
रनिया, एक बहिनि बिनु कइसे झलरिया मँइ मुडावउँ रे?

बरिया त भेजेउँ अवि रतिया, नउवा तउ भोरही हो,
गरब कइ माती ननदिया, अबहुँ नाही आवइ रे।

कइसे क आवइ बहिनिया रे, है लखपतिया रे,
सात बीरन कइ बहिनिया तउ गरब की माती रे।

सोने-रूपे लावउ रे डोलिया, मँइ ननद मनावउँ,
झलरिया मोरी रोपइँ, परछि देखावइँ रे।

अब सात बीरन की बहिनिया तउ अहइ हरजाई रे,
ननदी बहुतइ हलफ के होरिलवा झलरिया मोरी रोपउ रे।

जउ भउजी बार परिछिहौ, परिछ देखावउँ रे,
भउजी लेबई चनन कर हार, मोहर दस नेग हो।
भउजी येहि रे भतिजवा के भये कुछउ नहि दीहिउ रे।
जउ तुहुँ ननदी बार परिछिहउ परिछि के देखइतेउ,

ननदी, दुइ रे टका तोर नेग, परैया दुइ चाउर रे।
सोने के खडउँवा बीरन भइया, खुटुर-खुटुर करँइ हो,
मोरी सात बीरन की बहिनिया, आदर हम करबई हो।
लेउ न बहिनी अरे लहरा पटोर, बहनोइया हासिल घोड रे,
बहिनी, लेउ न कपिला गाइ भयनवाँ के खातिर रे।
लहर-पटोर पहिनि बहिनी, दिहेनि असीस, बढइ तोर बस,
जुग-जुग जियइ मोरा बीरन भइया अउर भतिजवउ रे।
अब अम्मर होई सोहाग, भउज रानी बस बढई।

सभा मे अमुक पति बैठा है। उसकी पत्नी निवेदन कर रही है—"स्वामी, बालक के सिर के बालो की लटों ने उसका माथा छेक रक्खा है। लटो का अब मुण्डन करा दो !"

पति उत्तर देता है—"रानी, बालक के सिर के बालो की लटों का मुण्डन कैसे कराऊँ ? बहन तो अभी तक आई ही नही। उसके बिना मुण्डन-सस्कार किस प्रकार सम्पन्न होगा ?"

पत्नी कहती है—"स्वामी, मैने आधी रात को ही अपनी ननद को बुलाने के लिये बारी को भेजा, सुबह होते ही नाई को भेजा, किन्तु गर्व से मतवाली ननद अभी तक नही आई !"

"प्रिये, बहन भला किस प्रकार आये ? वह लखपती ससुर के घर मे ब्याही गई है। सात भाइयो की अकेली बहन है, इसीलिये इतना अधिक गर्व करती है।"

पत्नी कहती है—"सोने की पालकी ले आओ। मै अपनी ननद को मनाने जाऊँगी। वे आकर मुण्डन के अवसर पर मेरे लाल की लटे अपने आँचल मे रोपेगी, वही मेरे पुत्र के बाल परछेंगी !"

ननद अपनी ससुराल से भाई के घर आ गई। भाभी पहुँचते ही उसे छेड़ने लगी—"ननद, सात भाइयो की बहन होने पर भी तुम बडी हरजाई हो ! जल्दी आओ ! मेरा लाल बडी मान-मनौती का है। तुम उसकी लटे अपने आँचल मे रोपो !"

ननद कहती है—"भाभी, यदि मै बाल परछूँगी तो नेग मे तुमसे एक चन्दन का हार और दस मुहरे लूँगी, क्योकि इस भतीजे के जन्म पर तुमने मुझे कुछ भी नही दिया है।"

भाभी बोली—"ननद, अगर तुम बाल परछोगी तो दो टका और दो परई चावल ही तुम्हारा नेग होगा। इससे अधिक और कुछ नही मिलेगा।"

सोने का खडाऊँ पहने हुए खटपट करता हुआ भाई आँगन मे आया, अपनी बहन को मनाता हुआ बोला—"हम सात भाइयों की यह इकलौती बहन है। मै इसका यथोचित आदर सम्मान करूँगा। बहन, मै तुम्हे पहनने के लिये लहँगा और साडी दूँगा। अपने बहनोई को चढने के लिये हासिल घोडा दूँगा और भाजे को दूध पीने के लिये एक कपिला गाय दूँगा !"

लहँगा और साडी पहन कर बहन ने प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद दिया—"मेरा भाई चिरजीवी हो, मेरे भतीजे की भी बडी लम्बी उम्र हो। भाभी का सुहाग अमर रहे और उसके परिवार की निरन्तर वृद्धि हो !"

(७१)

अँगने मे ठाढे है कवन रामा, झलरी-झलरी करै हो,
अब है कोई सहरवा के नायक, झलरिया मुडावइ हो।
हम तोरे बाबा कौन रामा सहरवा के नायक झलरी मुडावउँ हो,
बेटा, सोने-रूपे लोइया गढवावउँ, झलरिया तोरि मुडावउँ हो।
सोने के खडउवाँ पहिने कवने रामा, खुटुर-खुटुर चलत हो,
मइया बहिनी के लेउ बुलाइ, झलरिया मोरी रोपइँ हो।
नउवा तउ भेजेउँ रतिगर, बरिया भोरहे मे रे,
बेटा, आवइ न धेरिया हमारी, तो गरब की मानी रे,
देउ न धन ढुँढिया, अउ पियरी गहबर त बहिनी बोलावउँ रे,
सोने-रूप डँडिया बहिनिया आवत सोरहो बजन मे रे।
आवहु ननद गोसाई, अँगन मोरे बैठउ, झलरिया मोरी-रोपउ रे,
ननदी, लेउ न अपनी मजुरिया, अढइया दुई चाउर रे।
जउ भउजी मै बार परिछिहेउँ, परिछि देखावउँ रे,
भउजी पाँच मोहर मोर नेग, मजुरिया हम लेवइ रे।
हडपि-तडपि बोली भउज रानी, सुनउ न ननद छिनरउ हो,
ननदी, मोहरा भँजाइ करउँ नेवछावरि, भतिजवा के ऊपर हो।
अस-तस जिनि जानेउ भउज रानी, भतिजवा बहुते हलफ कर हो,
भउजी, मोहरा करब नेवछावरि, तबहूँ न मोल चुकइ हो।
कँगना की जोडी पछेलिया, ननद मोरी पहिनइ, हँसत घर जाइ हो,
ननदी भरि मुख देहु असीस, झलरिया मोरी रोपउ हो।

आँगन मे खडा अमुक बालक सबसे पुकार-पुकार कर कह रहा है कि जो कोई शहर का नायक हो वह आकर मेरे केशो का मुण्डन करा दे!

उसका आजा उत्तर देता है—"मै, तुम्हारा अमुक पितामह, शहर का नायक हूँ। बेटा, मैं सोने का अस्तुरा गढाऊँगा और तुम्हारे केशो का मुण्डन कराऊँगा!"

सोना का खड़ाऊँ पहन कर चलता हुआ अमुक भाई अपनी माँ से कहता

है—"माँ, बहन को बुला लो, वे मुण्डन के समय केश अपने आँचल मे रोपेगी।"

माँ कहती है—"बेटा, रात रहते ही नाई भेजा, बडे भोर मे ही वारी को रवाना किया, किन्तु गर्व से मतवाली मेरी बेटी अभी तक नही आई।'

पति अपनी पत्नी से कहता है— 'प्रिये, मुझे बूँटी और चटक रग की पियरी दो। सोने की पालकी पर सोलहो बाजो के साथ मै अपनी बहन को घर ले आऊँगा।"

ननद आई, भाभी उसका स्वागत करती हुई बोली—"ननद रानी, आओ, मेरे आँगन मे बैठकर अपने भतीजे का केश आँचल मे लो और मजदूरी के रूप मे दो अटैया चावल ले लो।"

ननद उत्तर देती है—"भाभी, केश बटोरने पर तुमको नेग मे मुझे पाँच मुहरे देनी पडेगी। मै और दूसरी मजदूरी नही लूँगी।"

भाभी तडप कर बोली—"ननद, ऐसा ही है तो तुम पाँच मुहरे भुना कर भतीजे के नाम पर न्योछावर करके बाँट दो।"

ननद ने जवाब दिया—"भाभी, तुम कुछ ऐसा-वैसा मत समझना। मेरा भतीजा बडी मान-मनौती के बाद पैदा हुआ है। उसके ऊपर मै मुहरे निछावर कर दूँगी। तब भी उसकी कीमत नही अदा होगी।"

भाभी प्रसन्न होकर बोली—"ननद रानी, एक जोडी कगन और पछेला पहन कर तुम हँसती हुई घर जाना। आज मेरे पुत्र के केश रोप कर उसे मुक्त-कण्ठ से आशीर्वाद दो।"

(७२)

छोटइ पेड कदम कर, पतवन झापस,
तेहि तर ठाढी कवनि देई देवा मनावइँ हो।
जौ तुम बरसउ देवा, पटुक मोरी भीजइ, सासु मोरी खीझहँ हो,
देवा, तबहूँ न गये बिन रहबइ, बीरन घर मूडनि हो।
अँगना बटोरत चेरिया त बाप की नउनिया रे,
चेरिया लेउ न लाल पियरिया भउज आँगन सोहर रे।
आगे-आगे आवत भयेनवा, पाछे ननद मोरी
अब लाले घोड है मोरा साजन, मोरहौ बजन से हो।

अब मोरे होइगा है मूडन, अउर कन-छेदन हो,
बेटी अस गज गहिरे के माती, अँगन मोर नहि आइउ रे।
की मइया भेजेउ नउया रे, की भेजेउ बरिया रे,
माया की भेजेउ पिठिया के बीरन, गरभ मोरा देखेउ रे ?
वरिया त भेजेउँ भोरही, नउवा सगुन लेइ,
बेटी, भेजेउँ बँभना बेटवना, धिया मोरी आवइ हो ।
जौ मोरी होतिउ मैया अरे दुख मोरा बुझतिउ हो,
मैया होइ गइउ मयरिया, दरद नहि बूझउ रे ।
सभवा से आये हे बाबा अरे बेटी समझावत रे,
बेटी लेउ न आपन नेग हँसत घर जाउ रे ।
सभवा से आये बीरन भइया, बहिनी बोलावत रे,
बहिनी लेउ न आपन नेग भतिजवा कइ मूडनि रे ।

घने पत्तोवाला छोटा-सा कदम का पेड है। अमुक देवी उसके नीचे खडी होकर देवताओ का स्मरण करती हुई कहती हैं—"भगवान्, चाहे तुम जितना भी पानी बरसो, भले ही मेरी साडी भीग जाय और मेरी सास मुझ पर क्रोध करे, तब भी मै अपने भाई के घर जाने से बाज नही आऊँगी। उसके घर मे मुण्डन है। मै अवश्य ही जाऊँगी।"

एक दासी आँगन मे झाडू लगा रही थी। स्त्री उससे बोली— 'दासी, लाल पियरी ले आओ। मेरी भाभी के आँगन मे सोहर हो रहा है। मै वहाँ जाऊँगी।"

ननद को दूर से आती हुई देख कर भाभी बोली—"आगे-आगे भाजा आ रहा है। पीछे-पीछे मेरी ननद आ रही है। लाल घोडे पर मेरा स्वामी आ रहा है और सोलहो बाजे बज रहे हैं।"

बेटी के घर आने पर उसकी माँ उलाहना देती हुई बोली—"बेटी, मेरे घर मे मुण्डन और कर्ण छेदन-सस्कार पूरे हो गये। किन्तु तुम इतनी मानवती हो कि मेरे आँगन मे नही आई ?"

बेटी ने उत्तर दिया—"माँ, न तो तुमने नाई भेजा और न बारी। मेरे भाई को भी तुमने मुझे बुलाने के लिये नही भेजा, फिर क्यो मेरे गर्व और मान का उलाहना दे रही हो ?"

माँ ने सफाई दी—"बेटी, मैने सबेरे ही बारी को भेजा। नाई को भी शकुन देकर रवाना किया और फिर ब्राह्मण के लड़के को भेजा, ताकि तुम यहाँ आ सको।"

बेटी ने जवाब दिया—"यदि तुम मेरी असली माँ होती तो मेरा दुःख समझ सकती, किन्तु सौतेली माँ होने के कारण मेरी पीडा का तुम्हे किस प्रकार बोध हो सकेगा ?"

सभा से आकर पिता बेटी को समझाने लगा—"बेटी, तुम अपने सारे नेग लो और हँसती हुई घर जाओ !"

सभा से आकर भाई बोला—"बहन, तुम अपने नेग लो, आज तुम्हारे भतीजे का मुण्डन हुआ है !"

(७३)

मै पानी भरूँ हलकोरि, रेशम की डोरियाँ,
सोने के घयलवा जब सोहै रे, जब पातरि तिरिया होइ।
पातरि तिरिया जब सोहै रे, जब गोदी होरिलवा होय।
गोदी होरिलवा जब सोहै रे, जब गगा पै मुँडन होय।
गगा पै मूँडन जब सोहै रे, जब छोटकी ननदिया होय।
छोटकी ननदिया जब सोहै रे, जब हाँथे मे कगन होय।
सोने के कगना जब सोहै रे, जब सोनरा खसम तोरा होय।
सोनरा खसम भाभी जब सोहै रे, जब हिजडा बीरन तोरा होय।

मै रेशम की रस्सी से डभकोर कर पानी भरूँगी !

सोने का घडा तब अच्छा लगता है जब उसे हाथ मे लेनेवाली कामिनी पतली और छरहरे बदन की हो !

पतली कामिनी तब अच्छी लगती है जब उसकी गोद मे बच्चा हो !

गोद का बच्चा तब अच्छा लगता है जब गगा के तट पर उसका मुण्डन हो !

गगा तट पर बालक का मुण्डन उस समय अच्छा लगता है जब साथ मे छोटी ननद हो !

छोटी ननद उस समय शोभा देती है, जब उसके हाथ मे कगन हो !

भाभी ननद से कहती है—"ननद, सोने का कगन उस समय शोभा देता है, जब तुम्हारा ब्याह सोनार के साथ कर दिया जाय !"

ननद उत्तर देती है—"भाभी, सोनार के साथ मेरा ब्याह तब अच्छा लगेगा, जब किसी हिंजडे को तुम अपना भाई बना लो !"

(७४)

जौ पूत रहिहैं बार और गभुवार,
खेतवन गोहुँवा बोवावइँ, बाबा तुम्हार।
खेतवन गोहुँवा बोवावइँ, चाचा तुम्हार।
उडत चिरइया नाही पकडइँ, बाप तुम्हार,
सँकरी गलिया नहि जइहै, बाप तुम्हार।
जौ पूत रहिहैं बार और गभुवार,
नित कइ सोहरिया पोवावइँ, दादी तुम्हार
मोटी-मोटी पुडिया पोवावँइ, चाची तुम्हार।
बडे-बडे लेडुवा बँन्हावँइ, बुआ तुम्हार,
सोने-रूपे लोइया जे लेइहैं, बुआ तुम्हार।
अँगने मे झगडा पसारउँ, बुआ तुम्हार।
जौ पूत रहिहैं बार और गभुवार।
सोने-रूपे छुरवा गढइहइ, नाना तुम्हार।
हउदन पियरी रँगइहइ, नानी तुम्हार।
पहिली चउक लइ के अइहइँ, मामा तुम्हार।

माँ अपने पुत्र से कह रही है—"बेटा, यदि तुम्हारे सिर पर घने और घुघराले बाल रहेंगे, तो तुम्हारे बाबा खेत मे गेहूँ बोवायेंगे, तुम्हारे चाचा खेत मे गेहूँ बोवायेंगे। तुम्हारे पिता उडती हुई चिडिया को नही पकडेंगे। तुम्हारे पिता सँकरी गली मे नही जायेंगे।"

"बेटा, तुम्हारे सिर पर घुघराले बाल रहेंगे, तो तुम्हारी दादी नित्य नई पूडियाँ बनवायेंगी। तुम्हारी चाची मोटी-मोटी पूडियाँ बनवायेंगी। तुम्हारी बुआ बडे-बडे लड्डू बँधायेंगी। तुम्हारी बुआ सोने और चाँदी की लोइयाँ ले आयेंगी। आँगन मे तुम्हारी बुआ खूब झगडा करेंगी।"

"बेटा, अगर तुम्हारे सिर पर घुघराले बाल रहेंगे, तो तुम्हारे नाना सोने और चाँदी के छूरे गढायेंगे। तुम्हारी नानी हौदो मे पियरी रँगायेंगी। तुम्हारे मामा पहली चौक की पियरी और भेंट लेकर आयेंगे।"

सरग भवन्तुलि चिरई, सरव गुन आगरि,
चिरई, जॅहॅ पठवउॅ, तॅहॅ जाउ, नेवत दइ आवउ हो।
सभवइँ नेवतेउ ननदोइया, रसोइयाँ ननद रानी,
छुटे बन्द नेवतेउ भयनवाँ, तीनिउँ जन आवॅइ हो।
घोडवा जउ आवइ ननदोइया, डॅडिया ननद रानी,
छुटे बन्द आवइ भॅयनवाँ, मॅडौना मोर भरि गये हो।
आवउ ननद गोसाई, बडी हो ठकुराइनि,
ननदी बइठउ न माँझ मॅडॅवना, झलरिया मोरि पोरवउॅ।
जउ भउजी झालरि पोरवउॅ, अँचरा परीछउॅ,
पाँच मोहर मोर नेग, अढइया दुइ चाउर हो,
भितरा से बोलइॅ भउज रानी, गुधुन - गुधुन करइॅ,
ननदी, एक टका तोरा नेग, परइया दुइ चाउर हो।
सभवा से उठे है बिरन भइया, हडपि - तडपि बोलइॅ,
बहिनी पाँच मोहर हम देब, अढइया दुइ चाउर हो।

बहू आकाश मे उडनेवाली एक चिडिया से निवेदन कर रही है—"चिडिया, तुम सभी गुणो मे पारगत हो। मै तुम्हे जहाँ भेजूँ वहाँ जाकर निमन्त्रण दे आओ।"

"सभा मे जाकर तुम मेरे ननदोई को निमन्त्रण देना। रसोई मे मेरी ननद को और छुटे बन्दवाले भाजे को निमन्त्रण देना और कहना कि तीनो लोग एक साथ आये।"

"घोडे पर बैठ कर मेरा ननदोई आ रहा है। पालकी मे बैठ कर ननद रानी आ रही हैं। छुटे बन्द वाला भाजा आ रहा है। सब के आने से मेरे आँगन मे भीड लग गई है।"

"ननद रानी, आओ मेरे मडप मे बैठ कर झालर रोपो।"

ननद कहती है—"भाभी, यदि मै झालर रोपूँगी और आँचल मे उसे परछूँगी तो पाँच मुहर और दो अढैया चावल मेरा नेग होगा।"

भीतर से भाभी भुनभुनाती हुई कह रही है– "ननद, तुम इतना क्यों माँग रही हो? एक टका और परई-भर चावल ही तो तुम्हारा नेग होता है।"

यह बात सुनने पर सभा से उठ कर भाई तडपता हुआ कह रहा है–– "बहन, तुम घबराना नही। तुम्हारे नेग के रूप मे मे पाँच मुहरे और दो अटैया चावल तुम्हे दूँगा।"

(७६)

ऐपन कर अस लेड ुवा, ननदिया के पठएउँ,
ननदी मसकि के बइठी मोर लेड ुवा, आँगन नहि आवइँ हो!
मचियह बइठी हे सासु तउ बिनवइँ दुलहिन देई,
सासु केसे मँइ झलरी पोरवावउँ, ननद नहि आवँइ?
की बहुवा पठएउ नउवा, की रे बहुवा बरिया,
बहुवा की बेदनइता बिरनवाँ, गरब तुहुँ उलपेउ?
नउवा मँइ पठएउँ नेवत लइके, बरिया सनेस लइके,
सासु लिल्ले घोडी सइयाँ असवार, तबहुँ नहि आवइँ!
घोडवइ आवइ ननदोइया, डँडिया ननद रानी,
गगा-जमुनी का पडा है ओहार, ननद मोरी आवइँ!
आवउ न ननद गोसाईं, बडी हो ठकुराइनि,
ननदी बइठउ न माँझ मँडौना, झलरिया मोरि परछउ हो।
जउ मँइ जनतेउँ बतिया, भउज बैना उटकइ,
मँइ तउ बडे बडे लेड ुवा बँन्हवतिउँ, बैना तोर फेरतिउँ!

मचिया पर बैठी हुई सास से बहू निवेदन कर रही है––"मैने ननद को ऐपन का लड्डू भेजा, लेकिन वे उस चुपचाप खाकर अपने घर मे ही बैठी रहीं, मेरे आँगन मे नही आयी। अब मै किससे पुत्र की झालर पोरवाऊँगी?"

सास ने पूछा––"बहू, तुमने नाई, बारी या स्नेही भाई को उसे बुलाने के लिये भेजा था या यो ही उसके दम्भ का उलाहना दे रही हो?"

बहू ने उत्तर दिया––"नाई निमत्रण लेकर और बारी सदेशा लेकर गया था। लिल्ली घोड़ी पर बैठकर मेरा स्वामी भी उन्हे बुलाने गया था। तब भी वे नही आयी।"

थोडी देर के बाद ही बहू ने देखा कि घोडे पर उसका ननदोई आ रहा है। पालकी मे ननद आ रही है। उसकी पालकी मे गगा-जमुनी रंग के परदे लगे हैं।

ननद का स्वागत् करती हुई बहू बोली—"ननद रानी, आओ, मेरे मडप मे बैठो और अपने भतीजे की झालर परछो।"

भाभी द्वारा उपहार के लिये उपालम्भ दिये जाने पर ननद बोली—"भाभी, यदि मुझे पहले से मालूम होता कि तुम मेरी भेंट का उलाहना दोगी तो मै बड़े-बडे लड्डू बाँधती और तुम्हारी भेंट के उत्तर मे ढेर का ढेर बायन लेकर आती।"

(७७)

सोने के खडउवाँ बिरन भइया, चुटुर-चुटुर चलइँ हो,
कहाँ बसइँ बहिनी कवनि देई, झलरिया मोरि परछइँ ?
जउ भइया झालरि परछउँ, परछि के देखावउँ,
भइया सोने का कँगनवाँ हम लेब, झलरिया तोरि परछब हो।
अइसी हठीली ननदिया, हमइँ नहि भावइ,
ननदी एक टका तोर नेग, परइया दुइ चाउर हो !
सभवाँ से उठे हैं बिरन भइया, हडपि - तडपि बोलइँ,
बहिनी सोने का कँगनवाँ हम देब, झलरिया मोरि परछउ।
गरुहे सजनवाँ का पूत तउ गरुहरि बचन बोलइ,
वहि हरजोतवा कइ धेरिया, हलुकी बचन बोलइ।
की बहिनी पहिरउ सुआ सारी, की बहिनी रातुल,
बहिनी की तुम लहर-पटोर, झलरिया मोरि परछउ।
ना भइया पहिरब सुआ सारी, ना भइया रातुल,
भइया पहिरब हरदी पियरिया, झलरिया तोरि परछब।

सोने का खड़ाऊँ पहन कर अमुक भाई खटर-पटर चलता हुआ पुकार रहा है—"मेरी अमुक बहन कहाँ है? शीघ्र आकर मेरे मडप मे झालर परछे।"

बहन कहती है—"भाई, यदि मै झालर परछूँगी तो तुमको मुझे सोने का कगन देना पडेगा।"

बहू हस्तक्षेप करती हुई बोली—"ऐसी झगडालू ननद मुझे अच्छी नही लगती। एक टका और परई भर चावल ही तो उसका नेग होता है।"

सभा से उठ कर भाई आया। बहू को फटकारता हुआ बहन को आश्वासन देने लगा—"बहन, तुम झालर परछो! मै तुम्हे सोने का कगन दूँगा!"

ननद अपनी भाभी को उलाहना देती हुई बोली—"देख भाभी, बडे बाप का बेटा हमेशा बडी बाते ही बोलता है, लेकिन तुम हलवाहे की पुत्री होने के कारण हमेशा कजूसी की बाते करती हो।"

भाई ने बहन से पूछा—"बहन, बताओ, हरे रग की साडी, रातुल अथवा लहँगा धोती मे तुम क्या लेना पसन्द करोगी?"

उसने उत्तर दिया—"भाई, न तो मै हरे रग की साडी लूँगी और न मुझे रातुल की ही अभिलाषा है। मै तो झालर रोपने के बदले मे तुमसे केवल एक पीली पियरी ही पाना चाहती हूँ।"

(७८)

झबरे-झबरे बाल होरिलवा के,
भुवरे-भुवरे बाल होरिलवा के,
कुरता चूमौ, टोपी चूमौ,
और चूमौ गोरे गाल होरिलवा के।
चटुवा चूमौ, झुनझुना चूमौ,
और चूमौ गोरे गाल होरिलवा के।
जब लालन के मूडन होइहै
बाबा पटना लुटावै होरिलवा के।
जब लालन आँगन मे खेलिहै,
दादी बलि-बलि जाये रे होरिलवा के।

बच्चे के झबरे-झबरे बाल है, भूरे-भूरे बाल हैं।
मै उसके कुरते, टोपी और गोरे गाल का चुम्बन लूँगी!
मै उसके चट्टू और झुनझुने को चूमती हुई बार-बार उसके गोरे गाल का चुम्बन लूँगी!

मेरे लाल का जब मुण्डन होगा, तो उसके बाबा वस्त्र लुटायेंगे। मेरा लाल जब आँगन मे खेलेगा, तो दादी उसकी बलैया लेगी।

(इसी प्रकार परिवार के सभी स्त्री पुरुषो का नाम लेकर गाया जाता है)

(७९)

माया बहिनि मोरि कतहूँ देखिउ,
मोर अरसी का फुलवा, झालर साँवर हो ?

देखेउँ मँइ देखिउँ, आजा बाबा चौपारि,
सब दादी औ पुरखिनि आरती उतारि।

आरती उतारन ठाढी, बलि बलि जाँय,
तुँहु जीवो कवन लाल, लाख बरीस।

बहू अलसी का फूल खोजती हुई परिवार की सभी स्त्रियो और अपनी सगी सहेलियो से पूछ रही है—"मेरी माताओं और बहनो, क्या कही आप लोगो ने मेरा साँवला और लहराता हुआ अलसी का फूल देखा है ?"

सब बताती हैं—"हाँ, हाँ ! मैने आजा और बाबा के चौबारे मे तुम्हारा अलसी का फूल देखा है। दादी और परिवार की बडी-बूढियाँ उसकी आरती उतार रही हैं। आरती उतारती हुई दादी बलैया ले रही है। आशीर्वाद दे रही हैं—"अमुक लाल, तुम लाख बरस तक जीते रहो !"

(इसी प्रकार परिवार की समस्त स्त्रियों के नाम के साथ यह गीत गाया जाता है।)

(८०)

अरे अरे नउवा बढइते, आँगन मोरे आवउ,
नउवा सोने रुपे छुरवा निकारउ, कवन लाल मूडनि हो।

जउ मँइ छुरवा निकारउँ, कवन लाल मूडनि,
रानी, लेबेउँ मँइ हाँसिल घोड, हाँथ कर तोडउ हो।

गम करु नउवा रे गम करु, नहछू बटोरउ,
नउवा देबइ मँइ हाँसिल घोड, रहँसि घर जाएउ हो।
बाढइ रानी तोर नइहर, बाढइ तोर सासुर,
रानी बाढइ तोरि गोदी का होरिलवा, नउवा जे घोड चढइ।

माँ अपने पुत्र के मुण्डन के लिये नाई को पुकारती हुई कह रही है—"हे भाई नाई, मेरे आँगन मे आओ। सोने और चाँदी का छूरा निकालो और मेरे अमुक लाल का मुण्डन करो।"

नाई कहता है—"रानी मै अपने पारिश्रमिक के रूप मे एक हासिल घोडा और हाथ का छल्ला लूँगा, तब मुण्डन करूँगा।"

"धैर्य रक्खो, मेरे नाई, तुम पहले नहछू बटोर लो, फिर मै हासिल घोडा भी तुम्हे दूँगी और तुम हँसते हुए अपने घर जाओगे।"

नाई आशीर्वाद देता हुआ कह रहा है—"रानी तुम्हारे मायके और ससुराल की वृद्धि हो। तुम्हारे उस पुत्र की लम्बी उम्र हो, जिसके मुण्डन मे मुझे घोडा चढने को मिला।"

(८१)

झालरि आम अमिलिया, झलरिया जवा कर खेत,
झलरिया जगि रोपउ।
काहेनि पोरवेउ कवने लाल, काहेन पोरवेउ झालरि,
झलरिया जगि रोपउ?
घिउ गुर पोरवेउँ कवन लाल, तेल फुलेल लइ झालरि,
तोहरिनि झालरि कवन लाल, भँवर जाइ बइठइ हो।
निसरु निसरु लोने भँवरा, तोरि रितु आयी नेचकइ।
सभवा बइठे आजा-बाबा, कवन लाल झगडा पसारइँ,
मुडावउ बाबा झालरि, छेके लिलार सब हो।
मचियइ बइठी आजी-चाची, कवन लाल झगडा पसारइँ,
मुडावउ दादी झालरि, छेके लिलार सब हो।
मोटी-मोटी पुरिया पोवावउ, मुडावउ दादी झालरि।

मुडावउ बुआ झालरि, मोतीचूर लड्डुवा बँधावउ हो।
मचियइ बइठी नानी मामी, कवन लाल झगडा पसारइँ
मुडावउ नानी झालरि, हउदन पियरी रगावउ,
सोने रुपे छुरवा गढाउ, मुडाउ मामी झालरि हो।

माँ अपने पुत्र के बालों की लटो की प्रशसा करती हुई कह रही है—"केश की लटे आम और इमली की भाति है, जौ के खेत की भाति है। मैंने इनके लिये आज यज्ञ का अनुष्ठान किया है।"

एक सखी पूछ रही है—"क्या खिलाकर तुमने पुत्र को बडा किया? किस प्रकार केश की लटो का पोषण किया?"

"अमुक लाल को मैंने घी-गुड खिलाकर बडा किया। तेल और फुलेल से केश की लटो का पोषण किया।"

"अमुक लाल, तुम्हारे केशों मे एक भौरा बडे मजे मे बैठा है।"

"सुन्दर भौरे, बाहर निकल आओ। अब तुम्हारी ऋतु का अन्त निकट आ गया है। अब तुम्हारे जाने का समय बिल्कुल पास आ गया है।"

सभा मे सभी आजा बाबा बैठे हैं। अमुक पुत्र झगड रहा है—"बाबा, मेरे केश का मुण्डन करा दो। इसने मेरा माथा छेक रखा है।"

मचिया पर आजी और चाची बैठी है। अमुक पुत्र झगड रहा है—"दादी, मेरा केश मुँडा दो। मेरे लिये मोटी-मोटी पूडियाँ बनाओ और मेरा मुण्डन करा दो।"

मचिया पर बैठी हुई बुआ और जीजी से भी बालक मचल कर कह रहा है कि, "मेरा मुण्डन करा दो और मेरे लिये मोतीचूर के लड्डू बनाओ।"

मचिया पर बैठी हुई नानी और मामी से भी बालक कह रहा है—"नानी, मेरा मुण्डन करा दो और हौदों मे पियरी रगाओ। सोने और चाँदी का छूरा गढाओ और मेरी लटो का मुण्डन करा दो।"

(८२)

अरे अरे दादी सेतुआ करउ, चाची गठरी करउ,
कासी बनारस जावइ, उही करबइ मूँडनि हो।

काहे के पोता सेतुआ करउँ, काहे के गठरी करउँ,
बाबा तुमरे लखपतिया, घर ही मुँडनि करइ हो।
चाचा तुम्हारे लखपतिया, घर ही मुँडनि करइँ हो।
अरे अरे मामा सेतुआ करउ, मामी लेड़ुवा करउ,
कासी बनारस जाबइ, उँहई मुँडनि करब हो।
काहे के बेटा सेतुआ करउँ, काहे के लेड़ुवा करउँ,
बाबू तुम्हारे लखपतिया, घर ही मुँडनि करइँ हो।

अपने केशो के मुण्डन के लिये आकुल बालक परिवार के सभी सम्बन्धियों से कह रहा है—'मेरी दादी, सत्तू तैयार करो। मेरी चाची, गठरी बाँधो। मैं काशी जाऊँगा, वहीं अपना मुण्डन कराऊँगा।"

दादी कहती है—"नाती, तुम क्यो सत्तू तैयार करने की बात कहते हो? क्यो गठरी बाँधने की बात करते हो? तुम्हारे बाबा लखपती हैं। वे घर में ही तुम्हारा मुण्डन करायेंगे। तुम्हारे चाचा लखपती हैं। वे घर में ही तुम्हारा मुण्डन करायेंगे।"

बालक यही बात मातृ-पक्ष के सम्बन्धियों अर्थात् मामा और मामी से भी कहता है और उनसे भी उसे यही उत्तर प्राप्त होता है।

बरुआ

(८३)

माघइ बरुआ सेइ चले, बइसाख पहुँचे,
मँइ तोसे पूछउँ ए बरुआ, तुहुँ जाबेउ कवन घर हो?
जाबेउँ मँइ जाबेउँ सेओहि घर, जहाँ बाबा कवन रामा हो,
आपन बेद पढइहइँ, पण्डित हमइँ करिहइँ हो।
अपनिनि पँतिया बइठइहइँ, हमइँ उत्तिम करिहइँ हो।
अपनेनि कान्हे का जनेवना, हमइँ बाम्हन करिहइँ हो।
भीख दे माता असीस ले, मँइ तउ बरुआ बराम्हन हो,
मोतियन थार भरउबइ, भिखिया उठि डारब हो।
अमवाँ की नइयाँ पूत बउरउ, अमिलिया एस लागउ हो,
पुरइनि अस पूत पुरवउ, कमल अस बिहँसउ हो।

कोई बालक अपने यज्ञोपवीत संस्कार के लिये उतावला हो रहा है। वह कहता है कि माघ का महीना बीत गया। वैशाख का महीना भी आ पहुँचा। अब मैं विश्राम नहीं करूँगा।

उसकी माँ पूछती है—"ब्रह्मचारी, मैं जानना चाहती हूँ कि तुम कहाँ के लिये चल पड़े हो?"

वह उत्तर देता है—"माँ, मैं वहाँ जाऊँगा, जहाँ अमुक नाम के बाबा रहते हैं। वे मुझे अपना वेद पढ़ाकर पण्डित बना देंगे। अपनी पंक्ति में बिठाकर वे मुझे पवित्र कर लेंगे और अपने कन्धे का जनेऊ पहनाकर मुझे ब्राह्मण बना लेंगे।"

"माँ, तू मुझे भिक्षा दे और मेरा आशीर्वाद ले। मैं ब्रह्मचारी ब्राह्मण हूँ।"

माँ कहती है—"पुत्र, मैं मोतियों से थाल-भर कर तुम्हें भिक्षा दूँगी। आम के वृक्ष की भाँति तुम में बौर लगे। इमली की भाँति तुम्हारा विस्तार हो। पुरइन की तरह तुम पूर्ण रहो और कमल की भाँति सदैव हँसते रहो।"

(८४)

तीरेंनि तीरे बरुआ फिरइँ, केउ पार लगवउ हो,
पठइ देउ बाबा कवन राम, नावरि चढ़ि आवउँ हो।
ना मोरे नाउ नेवरिया, नाही घर केवट,
जेकेर जनेवना कइ साध, पँवरि धाइ आवइ हो।
भीजइ मोर आटुल-पाटुल, पाउँ महावरि हो,
भीजइ मोर चन्दन-बन्धन, कान्हे कर जनेवनउ हो।

ब्रह्मचारी बालक नदी के किनारे-किनारे घूम रहा है। नदी पार उतरने के लिये दूसरों से सहायता की याचना कर रहा है—"अमुक बाबा, नाव भेज दो। मैं नाव में बैठकर उस किनारे आ जाऊँ।"

बाबा उत्तर देता है—"न तो मेरे पास नाव या डोंगी है और न कोई केवट। जिसे यज्ञोपवीत लेने की इच्छा हो, वह तैर कर इस किनारे चला आये।"

ब्रह्मचारी कहता है—"मेरा उत्तरीय भीग जायगा। पैरों की महावर छूट

जायगी। ललाट का चन्दन छूट जायगा और कन्धे का जनेऊ भी भींग जायगा।"

(इसी प्रकार परिवार के सभी सम्बन्धियों का नाम लेकर यह गीत गाया जाता है।)

(८५)

ऊँच ओसार नवल घर, जहाँ खम्भ खोदावल हो,
खम्भा ओट दादी कवनि देई, पिया से अरज करइँ हो।

सुनउ पिया सुनउ पिया पण्डित, बरुआ दइ देतेउ हो,
सुनउ धन, सुनउ धन सुन्दरि, बरुआ कुछु चाहित हो।

चाहित चन्दन-बन्धन, पाँचउ रतन पदारथ हो,
चाहित धोती अँगौछा, दस बाम्हन भोजन हो।

नये घर का ऊँचा ओसारा है। वहाँ एक खम्भा गडा है। उसकी ओट मे अमुक दादी खडी हैं। वे अपने पति से विनती कर रही हैं—"स्वामी, बालक का बरुआ दो।"

दादा उत्तर देते है—"रानी, बरुआ के लिये अनेक सामग्री की आवश्यकता पडेगी। उसके लिये चन्दन, मूँज के बन्धन, पाँचों रत्न पदार्थ और धोती तथा अँगौछे की आवश्यकता है। इसके साथ ही दस ब्राह्मणों को आमंत्रित कर उन्हे भोजन भी कराना होगा।"

(इसी प्रकार परिवार के सभी सम्बन्धियों का नाम लेकर यह गीत गाया जाता है।)

(८६)

जेहि बन सिकिया न डोलइ, बघवा न गरजइ हो,
सेहि बन पइठे कवन बाबा, काटइँ परस डण्डा हो।

मोरे घर तपसी कवन राम, ओन्हइ चाही परस डण्डा हो,
हमरे दुलरुवा के जनेउ, ओन्हइँ चाही मिरिग छाला हो,

जिस बन मे (हवा के अभाव मे) एक पत्ता भी नही डोलता और बाघ भी नहीं गरजता है, उसी बन मे पिता पलाश का दण्ड काटने के लिये और मृगछाला खोजने के लिये चल पडा।

वह कहता है कि मेरे पुत्र का जनेऊ होने वाला है। उसके लिये पलाश-दण्ड की आवश्यकता है। उसके लिये मृग चर्म का प्रबन्ध करना है।

यज्ञोपवीत के अवसर पर ब्रह्मचारी को पलाश का दण्ड धारण करने के लिये तथा मृगछाला पहनने के लिये दिया जाता है। इस गीत मे इसी रीति का सकेत किया गया है।

(८७)

कुइयाँ जगत पर मुँजिया क थन्हवाँ, जहँवा कवन लाल नहाइँ हो,
कोरवा के दुलहे राम मचलि कहतु है, बाबा, हम लेबइ पियरी जनेउ हो,
झारेनि पोछेनि जाँघ बइठाएनि, पोता हम देबइ सोने का जनेउ हो,
पोता हम देबइ मूँजे का जनेउ हो।

कुएँ की जगत पर मूँज का एक थान है। अमुक बालक वहाँ स्नान कर रहा है। अपने पितामह की गोद मे बैठा हुआ दूल्हा मचल-मचल कर कह रहा है—"बाबा, मै पियरी और जनेऊ लूँगा।"

पितामह ने धूल पोछ कर उसे गोद मे बिठाते हुए कहा—"नाती, मै तुम्हे सोने का जनेऊ दूँगा, मै तुम्हे मूँज का जनेऊ दूँगा।"

(८८)

जेठ तपइ दुपहरिया, सिर घाम लगतु हइँ हो,
मँडए मे ठाढ कवन राम, सिर घाम लगतु हइँ हो।
अरे अरे बाबा कवन राम, सोन-छत्र धरावनु हो,
मँडए मे ठाढ दुलहे राम, सिर घाम लगतु हइँ हो।
अरे अरे आजी कवन देई, सिर आँचर डारउ हो,
मोरे घर तपसी कवन राम, सिर घाम लगतु हइँ हो।

आँगन मे पुत्र का यज्ञोपवीत हो रहा है। गरमी की तेज धूप उसके

सुकुमार शरीर पर पड़ रही है। स्त्रियों का वात्सल्य फौवारे की जल-धाराओं की भाति सहसा फूट पडता है--

जेठ की दुपहरी तप रही है। अमुक बालक मण्डप मे खडा है। उसके सिर पर धूप पड रही है। हे अमुक पितामह, उसके सिर पर सोने का छत्र तनवा दो। हे अमुक दादी, उसके सिर पर अपना आँचल फैला दो। मेरे घर मे अमुक दूल्हे ने तपस्वी का वेश धारण किया है। उसके सिर पर धूप लग रही है।

(इसी प्रकार परिवार के सभी स्त्री पुरुषो का नाम लेकर यह गीत गाया जाता है।)

(८९)

अरे अरे आजी सेतुआ करउ, अउर लेड्ुन करउ,
बेद पढन हम जाबइ, कासी - बनारस हो।
काहे के पूत सेतुआ करइँ, काहे के लेड्ुवा करउँ,
बाबा तुम्हारे है पण्डित, घरहि पढावइँ हो।

ब्रह्मचारी बालक विद्याध्ययन के लिये काशी जाने की तैयारी कर रहा है। घर के सभी सम्बन्धियो मे वह कहता है--"दादी, सतुवा तैयार करो, लड्डू और मठरी तैयार करो। मै वेद पढने के लिये काशी जाऊँगा!"

दादी उत्तर देती है--"बेटा, सतुआ और लड्डू तैयार करने की क्या आवश्यकता है? तुम्हारे पितामह विद्वान् और पडित हैं। वे तुम्हे घर पर ही सारे वेद पढा देगे!"

(इसी प्रकार परिवार के सभी सम्बन्धियो के नाम के साथ यह गीत गाया जाता है।)

जनेऊ

(९०)

सभवइ से आए हइँ दसरथ, रनियाँ अरज करइँ हो,
साहेब बारेहि बाटे मोर राम, जनेवना के भूखल हो,

एक हाथ लिहेनि हर बैल, दुसरे कपास लिहेनि हो,
रनियाँ, चल्उ न गोडडी कियरिया, कपास हम बोउब हो।

झुकि झुकि बोवइँ कपसिया, अँगुरियन फाँस गडी हो,
रनियाँ दुधवन सीचउँ खेत, अँगुरियन पीर मिटइ हो।

हरियरि पतियन बीच, कपास मोरि खिलि आई,
दइया दूध बरन है कपास, नजर केउ न लावइ हो।

ककही जे अवटइँ कपास, सुमित्रा हाँथ पूनी बरइँ,
राम, कातइँ, कौसिल्या रानी सूत, जनेवना के खातिर हो।

आधे आँगन बइठे हैं गुरु जन, आधे वशिष्ट मुनि,
चउके प बइठे चारिउ भइया, जनेवना करावइँ हो।

राजा दशरथ के राजसभा से उठकर रनवास मे आने पर रानी कौशल्या उनसे निवेदन करने लगी—"राजन् मेरे राम अभी क्वारे ही है। उनका यज्ञोपवीत करने का समय आ गया है।"

एक हाथ मे हल और दूसरे हाथ मे कपास लेते हुए राजा दशरथ बोले—"रानी मेरे साथ निकटस्थ खेत मे चलो। हम लोग कपास बोयेंगे।"

रानी कौशल्या झुक-झुक कर कपास बो रही थी। उनकी उँगली मे फाँस चुभ गयी। दशरथ बोले—"रानी, मै दूध से यह खेत सिंचाऊँगा। फिर तुम्हारे हाथ मे फासे नही चुभ सकेंगी।"

हरे-हरे पत्तो के बीच कपास के फूल खिल आये। उनमे दूध जैसे सफेद सफेद रेशे पडने लगे। कपास के फूल बहुत सुन्दर लग रहे हैं। बचाना है, उन्हे कही कोई नजर न लगा दे।

कैकेयी कपास ओट रही हैं। सुमित्रा जी अपने हाथ से पूनियाँ बना रही हैं और यज्ञोपवीत तैयार करने के लिये कौशल्या जी (तकली पर) सूत कात रही हैं।

आधे आँगन मे बडे-बडे सम्बन्धी जन बैठे है। आधे भाग मे वशिष्ट महाराज विराजमान हे और राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न आदि चारों भाई यज्ञोपवीत कराने के लिये चौक मे बैठे हुए हैं।

गलियइ गलिया फिरइँ भवानी, खोरिया खोरिया पूछइँ बात,
केकरे दुलरुवा कइ इहाँ जगि रोपी, हम जगि देखन जाब !
दशरथ राम दुलरुवा कइ इहाँ जगि रोपी, हम जगि देखन जाब।
आवउ भवानी, बइठउ मोरे अँगना, देबइ सतरँगिया बिछाइ,
घिउ गुर कइ मइया होम करउबइ, मोरि जगि पूरन होइ।
दहिया दहेडी मइया अँगने धरउबइ, मोरि जगि पूरन होइ,
सोने के कलसवा पर दियना बरउबइ, मोरि जगि पूरन होइ,

भवानी गली-गली घूम रही हैं। बाट-बाट के लोगो को बुला कर पूछ रही है—"यहाँ किसके पुत्र के विवाह का यज्ञ हो रहा है ? मै यह यज्ञ देखने जाऊँगी !"

"क्या यहाँ दशरथ के पुत्र राम के विवाह का यज्ञ हो रहा है ? मै यह यज्ञ देखने जाऊँगी !"

"भवानी, आप आये। मेरे आँगन मे बैठे, आपके आसन के लिये मै सतरगी दरी बिछा दूँगी। घी और गुड का होम कराऊँगी। आपकी कृपा से मेरा यज्ञ पूरा हो !"

"माँ, दही की दहेडी आँगन मे रखूँगी। स्वर्णकलश पर दीपक जलाऊँग। आपकी कृपा से मेरा यज्ञ पूर्ण हो !"

(६२)

गावउँ माता रे गावउँ भवानी, लेउँ सातउँ बहिनी कर नाउँ,
तोहरी सरन मइया मँइ जगि रोपेउँ, मोरि जगपूरन होइ।
गावउँ मँइ माता रे, गावउँ भवानी, लेउँ विन्ध्याचल कर नाउँ,
तोहरी सरन मइया मँइ जगि रोपेउँ, मोरि जगि पूरन होइ।
गावउँ मँइ माता रे, गावउँ भवानी, लेउँ सीतला मइया कर नाउँ,
तोहरी सरन देबी मँइ जगि रोपेउँ, मोरि जगि पूरन होइ।

माता का नाम लेकर गा रही हूँ। भवानी का नाम लेकर गा रही हूँ।

सातो बहनो का नाम ले रहा हू । मा, आपकी शरण मे मैने यज्ञ का अनुष्ठान किया है । आपकी कृपा से मेरा यज्ञ पूर्ण हो !

(इसी प्रकार देवी के विभिन्न नामों से उनकी अस्तुति की जाती है।)

चौक का गीत

(६३)

चारि चउक मँइ देखेउँ, चारिउ सोहावनि,
पँचई चउक मँइ देखेउँ, दसरथ आँगन हो,
सेहि चौक बइठे राजा रामचन्द्र, रानी सितल देई,
रनियाँ पूजइ लागी गउरी गनेस अउ लछिमी नरायन।
पूजि पाटि जब लउटी, खुसी भये नरायन,
रनियाँ बाढइ तोरे माँग का सिदूर, जियइ तोर लालन।

चार चौके मैने देखीं। चारो सुन्दर थी। पाँचवी चौक मैने राजा दशरथ के आँगन मे देखी। वहाँ राम और सीता वर-बधू के रूप मे समासीन हैं। रानी (कौशल्या) पार्वती, गणेश और लक्ष्मी नारायण की पूजा कर रही हैं। पूजा समात कर ज्यो ही चलने को हुई, नारायण ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया—"रानी, तुम्हारे माँग का सिन्दूर अमर हो! तुम्हारा पुत्र चिरजीवी हो!"

(६४)

सभवइ बइठे राजा दशरथ, सीता अरज करइँ हो,
ससुर, नइहर नउवा के पठवउ, पियरिया लइके आवइ।
नइहर - नइहर जिनि करउ, नइहर दूरि बसइ,
बिरना बिदेस बसइ।
बहुवा घरही मे पियरी रँगउबइ, पहिरि चौक बइठिउ हो,
तोहरी पियरिया सासु निति कइ, निति उठि पहिरब,
ससुरू, भइया कइ पियरिया अलफ कइ, पहिले चउक कइ हो।

सभा मे राजा दशरथ बैठे थे। सीता ने उनसे प्रार्थना की—"राजन्, मेरे मायके की पियरी लाने के लिये नाई भेजिये।"

दशरथ ने उत्तर दिया—"बहू, तुम अपने नैहर की बात क्यो कर रही हो? वह तो बहुत दूर है। तुम्हारा भाई भी परदेस मे रहता है। मै तुम्हारे लिये घर मे ही पियरी रँगा दूँगा। वही पहन कर तुम चौक मे बैठना।"

सीता बोली—"आपकी रँगाई पियरी तो नित्य ही पहनती हूँ, किन्तु पहली चौक मे तो भाई की ही पियरी पहनी जाती है।"

(९५)

पहिली चउक के अवसर, पियरिया नहि भेजइँ,
बहुवा पथरा कइ तोरि मइया, पथरवा के बीरन रे!
बहुवा बेचतेनि नाक-नक बेसरि, बाबा कर डिहवा,
बिरन तोर अउतइ, पियरिया लियउतइ रे।
नइहर न भेजेउ नउवा, नाही अरे बरिया,
सासु नहि लिखि भेजेउ पतिया, बिरन कइसे आवइ।
सासु सात समुन्दर पार नइहर, बिरन कइसे आवइ हो?
सरग चिरइया अरे भेजतिउ, पवन कइ धेरिया,
बहुवा, भेजि देतिउ कारी बदरिया, बदरिया तोरि साथिनि।
बिरन तोर अउतइ, गठरिया दुइ लउतइ,
बहुवा, देखि के जियरा जुडातइ, पियरिया एक गहबरि हो।
सरग उडन्ती चिरइया, अकसवा उडि जातिउ,
अरे बदरी तउ लागउ मोरि बहिनी, तनिक चलि आवउ रे!
बदरी बरसउ न जाइ मोरे नइहर, भइया के कोछवा रे,
बिरन मोर अउतइ, पियरिया लइ गहबरि हो।
बेचेनि ढाल तरुवरिया, बावा कर डिहवा रे,
बेचेनि आपनि पगडिया, आउर नक - बेसरि रे,
बहिनी पहिरउ हँसि के पियरिया, बिरन तोर लाएउ,
सासु पहिरावइ रे।

हँसि के जे पहिरउ पियरिया, बिहँसि मुख बोलउ,
बहुवा, बाढइ निति तोर नइहर, अमवा जस बउरइ हो।

चौक पूजते समय बहुये नैहर से भाई की लाई हुई पियरी ही पहनती हैं।

पूजा का अवसर निकट आ गया, किन्तु एक बहू का भाई अभी तक पियरी लेकर नही आया। उसकी सास उसे ताना मार रही है—"पहली ही चौक का अवसर है, किन्तु पियरी नहीं भेज रहे हैं। बहू, तुम्हारी माँ पत्थर की है। तुम्हारा भाई पत्थर का है। उसे चाहे अपनी बहू की नकबेसर या पिता की जमीन बेचनी पडती, किन्तु पियरी खरीद कर अवश्य ही ले आना था।"

बहू बोली—"आपने मेरे मायके न तो नाई भेजा और न बारी। एक चिट्ठी भी नही दी। मेरा भाई कैसे आये? सात समुद्र पार मेरा नैहर है। इतनी दूर से वह कैसे पियरी लाकर मुझे पहनाये?"

सास ने उत्तर दिया—"बहू, तुम आकाश मे उडने वाले किसी पक्षी अथवा पवन दूती को भेज देती। काली बदली तो तुम्हारी बहन है। उसी को भेज देती। तुम्हारी माँ गहबर रग की पियरी रगाती। भाई लेकर आता। मै उसे देखकर प्रसन्न होती।"

विवश बहू सबसे प्रार्थना करने लगी—"आकाश मे उडने वाले पक्षी, तुम तनिक और दूर जाओ! काली बदली, तुम तो मेरी बहन हो, मेरे नैहर जाकर मेरे भाई के कोठे पर बरसो। मेरे भाई को सूचना दो कि वह गहबर रग की पियरी लेकर आये!"

भाई ने ढाल-तलवार बेच दी। पिता की जमीन, अपनी पगडी और बहू की नकबेसर बेच दी। पियरी लेकर बहन के पास आया। उससे बोला—"बहन, प्रसन्न होकर पियरी पहनो। तुम्हारा भाई ले आया है न? तुम्हारी सास अपने हाथ से तुम्हे पहनायेगी।"

सास प्रसन्न होकर बोली—"बहू, तुम पुलकित होकर पियरी पहनो। तुम्हारे नैहर का भाग्य उदित हो। आम के वृक्ष की भाति उसका प्रसार और विस्तार हो।"

(९६)

के मोरे नेवतइ अरिगन, राज दुवरिया रे,
के नेवतइ सातउ बीरन, जेन कइ दुलारी मँइ हो।

तोरे पिछवरवा जे नउवा, लागइ तोर बीरन,
हरदी कइ गँठिया जउ देतिउ, नेवति जग आवत हो।
बइठउ बिरन मोरे मँडए, माई कइ हाल बतावउ,
कइसे क भउजी अउ बहिनी, गउवाँ के लोग सब हो ?
कइसे क जीयत बाबा हैं, कइसे क बछरू-बखार रे,
सात समुन्दर पार बियहेउ, खबरिया नहि पूँछउ रे।
माई तउ दिहिनि सात पियरी रे, भउजी जे चुनरि,
बाबा दिहेनि मोहर-कठुला, बेटी के खातिर रे।
हँसि के पहिरउ पियरिया, विहँसि मँइ लउटउँ,
माई जोहत होइहइँ राह, भउज मोहि परखइँ हो।
हँसि के पहिरिनि पियरिया, कठुला हबेल रे,
जुग-जुग जियइ मोर बिरना, लाज मोरि राखेउ हो !
मान कइ पियरिया निति आवइ, भतिजवा का नेग।

बहन अपने भाई का स्मरण करती हुई कह रही है—"कौन मेरे स्वजन सम्बन्धियो और राजद्वार को निमत्रित करे ? कौन मेरे उन सात भाइयों को निमत्रण दे, जिनकी मै बहन हूँ ?"

एक सखी सलाह देती है—"तुम्हारे पिछवाडे नाई का लडका रहता है। वह तुम्हारा भाई लगता है। उसे हल्दी की गाँठ और रगा हुआ चावल दो। वह जाकर सब को निमत्रण दे आयेगा !"

बहन का भाई उसके घर आ गया। मण्डप मे बिठाकर वह उससे अपने मायके की कुशल छेम पूछने लगी—"भाई, माँ का क्या हाल है ? बाबा कैसे जी रहे हैं ? पशुओ और बछडों आदि का क्या हाल है ? तुमने सात समुन्दर पार मेरा ब्याह किया और कभी सन्देश भेजने की भी परवाह नही की !"

भाई उत्तर देता है—'बहन, माँ ने तुम्हारे लिए सात पियरियो भेजी हैं। भाभी ने अनेक चून्दर दिये है, और बाबा ने मुहर का कठुला भेज कर कहा है कि इसे मेरी बेटी को समझा बुझाकर दे देना ! तुम प्रसन्न होकर लाल पियरी पहनो और मै भी हँसता हुआ घर वापस जाऊँ, क्योंकि माँ मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी, भाभी मेरी बाट जोह रही होगी।"

वहन ने पुलकित होकर लाल पियरी पहनी। हर्षित होकर गले मे कठुला धारण किया और गद्गद् कठ से भाई को आशीर्वाद देने लगी—"मेरी लाज रखने वाले भाई, तुम युगो तक जीते रहो। मेरे भतीजे के नेग के रूप मे इसी प्रकार नित्य मान की पियरी लाते रहो।"

नेवता

(९७)

अरे अरे कारी कोइलिया, अँगन मोरे आवउ,
कोइलरि आजु मोरे पहिलइ बियाह, नेवत दइ आवउ।
नेवतेउ अरिगन, नेवतेउ परिगन, माई कर नइहर मोर ननियाउर,
कोइलरि, एक जिनि नेवतेउ बीरन, जेनसे मँइ रूठलि हो।
सासु भेटइँ आपन बीरन, ननद आपन भइया,
कोइलरि मोरि छतिया भहराइ, मँइ केहि धाइ भेटउ हो ?
अरे अरे कारी कोइलिया, अँगन मोरे आवउ,
कोइलरि, फेरि से नेवतउ बीरन, अउर भउज रानी हो !
कोइलरि आजु मेरे पहलइ चउकिया, चउक नहि आवइँ हो।
अँगना बटोरत चेरिया, बाबा कइ लउँडिया,
चेरिया देखि आवउ बिरना डगरिया, कतिक दूरि बाटेनि हो ?
आगे - आगे आवइ ढुँढिया, पियरी गहाबरि,
रानी लिल्ली घोडी आवइ तोर बिरना, डँडिया भउज रानी हो।
अरे - अरे सासु गोसाई, बडी ठकुराइनि,
सासु, कँहवाँ उतारउँ ढुँढिया तउ पियरी गहाबरि हो ?
सासु कँहवाँ बइठावउँ बिरन भइया, अउर भउज रानी हो ?
सासु, कँहवाँ बइठावउँ भतिजवा, बहुत मोर दूलभ रे ?
अँगना उतारउ ढुंढिया, पियरी गहाबरि,
ओबरी बइठावउ भवज रानी, सभवा बिरन आपन हो,
बहुवा कोछवा उठावउ भतिजवा, बहुत तोर दूलभ रे।

हँसि के पहिरउँ पियरिया, बिहँसि मुख बोलउँ,
सासु, भर मुख देउ असीस, सुफल फल पावउँ।
अमवाँ की नइयाँ बाढइ बीरन, अमिलिया जस छिछडइ,
बहुवा, गगा कइ धार बनि असीसउँ, दिनइ दिन बाढइ हो।

एक बहू कोयल को सम्बोधित कर उससे अपने सम्बन्धियो को निमत्रण दे आने का निवेदन करती हुई कहती है—"हे काली कोयल, मेरे आँगन मे आओ, आज मेरी पहली चौक का शुभ अवसर है, तुम जाकर मेरे सभी सम्बन्धियो को निमत्रण दे आओ!"

"प्यारी कोयल, तुम सभी स्वजनो और कुटुम्बियो को, माँ के नैहर और मेरे ननिहाल के समस्त सम्बन्धियो को निमत्रण देना, किन्तु केवल मेरे भाई को मत बुलाना, क्योकि मै उससे रुष्ट हूँ!"

"सास अपने भाई से मिल रही हैं। ननद अपने भाई को भेंट रही है। किन्तु प्यारी कोयल, मेरी छाती फटी जा रही है! मै किसकी अगुवानी करूँ? मै किसे दौडकर भेटूँ?"

"हे काली कोयल, मेरे आँगन मे आओ। पुन. जाकर मेरे भाई और मेरी भाभी को निमत्रण दे आओ। आज मेरी पहली चौक का अवसर है। अगर मेरा भाई नही आयेगा, तो किस प्रकार मेरा अनुष्ठान पूरा होगा?"

आँगन मे झाडू लगाती हुई दासी को सम्बोधित कर बहू कहने लगी—"हे मेरे ससुर की चेरी, जाकर मेरे भाई का रास्ता देख आओ! मेरा भाई आ रहा है!"

दासी उसे बताती है—"रानी, आगे-आगे कँहार बँहगी पर ढूँटी और चटक पियरी लेकर आ रहे हैं। लिल्ली घोड़ी पर बैठ कर तुम्हारा भाई आ रहा है और पीछे पीछे पालकी मे तुम्हारी भाभी आ रही है!"

बहू अपनी सास से पूछती है—"सास रानी, मै कहाँ ढूँढी और चटक पियरी उतारूँ? कहाँ अपने भाई को बिठाऊँ? कहाँ अपनी भाभी को और कहाँ अपने बहुत दिन पर आने वाले भतीजे को स्थान दूँ?"

सास कहती है—"आँगन मे ढूँढी और गहबर पियरी उतारो! ओबरी मे अपनी भाभी को बिठाओ। सभा मे अपने भाई को स्थान दो और लाडले भतीजे को अपने गोद मे उठा लो!"

बहू आगे कहती है—"सास जी, मै पुलकित होकर पियरी पहनूँगी। प्रसन्न होकर तुमसे बाते करूँगी। हृदय खोलकर तुम मेरे भाई को आशीर्वाद दो, ताकि मेरी सारी मनोकामनाएँ भली भाति पूर्ण हो!"

सास अपनी बहू के भाई को आशीर्वाद देती हुई कहती है—"बहू, आम की तरह तुम्हारे भाई की वृद्धि हो, इमली के पेड की तरह उसके यश का विस्तार हो। मै गगा की धारा की भाति आशीर्वाद दे रही हूँ, तुम्हारे भाई की दिन प्रतिदिन उन्नति हो।"

माटी खनाई

(६८)

सोने क फरुहा, रूपेन बेट लाग रे,
सासु धिया मिलि माटी खनइँ रे।
केकरि लितिलनि घोडिया, हरियरि दूब चरइ,
केकर दुलरू दमाद, लगाम लिहे ?
कवन लाल लिल्लिनि घोडिया, हरियरि दूब चरइ,
ओनही कर दुलरू दमाद, लगाम लिहे।
देउ न भोजइतिनि मोर नेग, लेउ मटिया अँचरा पसारि,
आजा बाबा आये है, घोडिया लगाम लेन रे।
दुलहिनि पूत बहुवार, तउँ माटी भरइँ रे।
हँसि-हँसि पूछइँ दुलरू दमाद रे,
सरहज आवउ न मोरि सुख सेज रे!

सोने का फावडा है। चाँदी की उसमे बेट लगी है। सास जी उससे मिट्टी खोद रही हैं।

"किसकी लिल्ली घोडी हरी दूब चरती है? किसका दुलारा दामाद अपने हाथ मे उसकी लगाम थामे है?"

"अमुक लाल की लिल्ली घोडी हरी दूब चर रही है। उन्ही का दुलारा दामाद अपने हाथ मे उसकी लगाम थामे है।"

सहेलियाँ अपना नेग माँगती हुई कह रही हैं—"सखी हमारा नेग चुकाओ।"

सास उत्तर देती है—"लो न! आँचल फैला कर ढेर की ढेर मिट्टी ले लो।"

सभी आजा बाबा घोडी की लगाम लेने आये हैं। सब दुलहिने और पुत्र बधुये मिट्टी भर रही हैं।

दामाद अपने साले की पत्नी से मजाक करता हुआ कह रहा है—"सरहज, मेरी सुख-शैया पर कभी शयन करने के लिये आओ!"

(९९)

लीपि लेउ चौपरिया दुल्हन देई,
पोति लेउ चौपरिया दूल्हन देई।
लीपन बैठी कवनि देई, अँगुरी मे,
गड गई लकडिया दुल्हन देई,
कौनी हरजोतवा की बाटी छोकरिया,
कौन सजन की बाटी दुल्हन देई ?
वही धरिकरवा की बाटी छोकरिया,
वही गरुये सजन की बाटी दुल्हन देई।
बोलावो आपन बपवा, निकाले लकडिया,
नाही तो फँसी रहि जाई दुल्हन देई।

"दूल्हन, तू चौपारी की लिपाई-पुताई कर ले!"

अमुक देवी चौपारी लीप रही थी। उनकी उँगली मे लकडी धँस गई है!

"दूल्हन किस हलवाहे की लडकी है ? कैसे पति की पत्नी है ?"

"वह हरकारे की लडकी है। मूढ पति की पत्नी है ?"

"दूल्हन, अपने स्वामी को बुलाओ, वही लकडी निकालेगा, वरना वह फँसी की फँसी ही रह जायगी!"

कलसा

(१००)

आधे तलवना मे नाग बइठे, आधे मे नागिनि बइठी,
तबहूँ तलवना न रातुल, एक कमल बिनु रे।

आधे अँगनवाँ मे गोत बइठे, आधे मे गोतिनि बइठी,
तबउ न मँडवना रातुल, एक ननद बिनु रे ।
आवउ न ननद गोसाईं, बडी ठकुराइनि,
ननदी बइठउ न मोरे अँगनवाँ, कलस मोर गोठउ ।
जउ भउजी कलसा मँइ गोठउँ, गोठि देखावउँ,
भउजी पाँच मोहर मोर नेग, पसेरी दुइ चाउर रे ।
भितरा से बोली भउज रानी, सुनउ मोरि ननदी,
ननदी, एक टका तोर नेग, परइया एक चाउर रे ।
भउजी तुहँइँ, मोरि भउजी, तुहँइँ ठकुराइनि,
भउजी रहिया कर भुखल भयनवाँ, भोजन कुछ देतिउ,
ननदी तुहँइँ मोरि ननदी, बडी ठकुराइनि,
ननदी बइठउ राम रसोइयाँ, भयनवाँ जेवाँवउ,
तुँहउँ कुछु चाखउ रे ।
पहिला बरवा निकारिन, फुफुनिया चोराइनि,
बरवा गिरि गवा माँझ मँडवनाँ, गोतिनि सब देखइँ रे ।
तब तउ कहेउँ सिर साहेब, ननद जिनि नेवतउ,
ननदी अवतइ बरवा चोराइनि, मँडवना मोर भाँडिनि रे,
तब तउ कहेउँ मोरि रनियाँ, जगि जिनि रोपउ,
मोरे पिठिया पर की बहिनिया, मँइ कइसे न नेवतउँ रे ?

तालाब के आधे भाग मे नाग बैठे है। आधे मे नागिने बैठी है। फिर भी वह कमल के अभाव मे सुन्दर नही लगता।

आँगन के आधे भाग मे गोत्र जाति के लोग बैठे है। आधे मे गोतिने बैठी हैं। फिर भी ननद के बिना मण्डप शोभा नही देता।

बहू ननद से कहती है—"ननद रानी, आओ! मेरे मण्डप मे बैठकर कलसा गोठो!"

ननद कहती है—"भाभी, यदि मै कलसा गोठूँगी तो पाँच मुहर और दो पसेरी चावल मेरा नेग होगा!"

भीतर से भाभी बोली--"ननद, तुम पाँच मुहरें क्यों माँगती हो ? एक टका और एक परई चावल ही तो तुम्हारा नेग होता है !"

"भाभी, तुम बडी ठकुरानी समझी जाती हो। तुम्हारे भाजे को रास्ते से ही भूख लगी है। उसे कुछ खाने को दो !"

भाभी उत्तर देती है--"ननद, तुम रसोई मे चलकर बैठो। मै भाजे के साथ तुम्हे भी भोजन कराऊँगी !"

ननद ने पहला बाल लेकर उसे अपनी साडी मे चुरा लिया था। असावधानी से सहसा वह मण्डप मे गिर पडा। सब गोतिनें देखकर हँसने लगी।

बहू अपने पति से शिकायत करने लगी--"प्रियतम, मै पहले से ही कह रही थी कि ननद को मत बुलाओ। उसने आते ही बाल चुरा लिया और मेरा मडप भ्रष्ट कर दिया !"

पति ने उत्तर दिया--"रानी, मै तो तुम्हे कह रहा था कि यज्ञ का अनुष्ठान मत करो किन्तु जब तुमने ऐसा किया ही तो मै अपनी सहोदरा बहन को भला निमत्रण क्यो न देता ?"

सिलपोहना

(१०१)

सिल चटकत है, सिल मटकत है,
समधी के देखि बिरावत है।
पठै देउ सब आजा बाबा हथिनियाँ,
चढि के आवै सब गोतिनियाँ।
दरवजवा मे अटकी है हथिनियाँ,
अँगनवा मे सब गिरी है गोतिनियाँ।
सिल चटकत है, सिल मटकत है,
समधी के देखि बिरावत है।
सिल पोहो दुलहन देई आपनि,
माँझ मँडवना बैठे है कौन रामा,
लोढवा पकडे घूमा-फेरी करै,
तम्बुआ ताने सिल पोहत है,

हेलिन धेरिया सिल पोहत है,
राजा - बेटा सिल पोहत है।

सिल चटक रही है। नखरे दिखा रही है। समधी को देखकर उसका मुँह चिढा रही है।

आजा बाबा को भेज दो। वे हाथियों पर चढकर आये, सब गोतिने आये।

हाथियो का सिर दरवाजे मे अटक गया। आँगन मे सब गोतिनें गिर पडी।

दूल्हन देवी, तुम सिलपोहना करो।

अमुक राम मडप के बीच मे बैठे है। लोटा पकड कर वे उसे घुमा-फिरा रहे है। आँगन मे तम्बू तान कर वे सिलपोहना कर रहे है।

हेलिन की लडकी (पत्नी) सिलपोहना कर रही है। राजा-बेटा (पति) सिलपोहना कर रहा है।

नहान

(१०२)

कवन राम सगरा खोदावइँ, घाट बँन्हावइँ,
कवन राम सगरा नहाइँ, सब जग देखइ हो,
बाबा राम सगरा खोदावइँ, बाप घाट बँन्हावइँ,
दुलहे राम सगरा नहाइँ, सब जग देखइ हो।
के छोडइ छल्ला मुनरिया, के छोडइ मोहर,
के छोडइ रतन-पदारथ, सूप भरि जाइ हो,
बुआ छोडइँ छल्ला मुनरिया, दादी छोडइँ मोहर,
मामा छोडइँ रतन-पदारथ, सूप भरि जाइ हो।
हँसि बोलइ कँहरा कइ धेरिया, बिहँसि बोलइ कँहरा,
जुग-जुग जीवे दुलहे राम, दुलहिनि सुहागिनि हो।

किसने तालाब खुदाया ? किसने घाट बँधाया ? कौन तालाब मे सब के सामने स्नान कर रहा है ?

अमुक पितामह ने तालाब खुदाया। अमुक पिता ने घाट बँधाया। अमुक दूल्हा सब के सामने स्नान कर रहा है।

न्योछावर के समय सूप में कौन छल्ला और मुँदरी छोड रही है? कौन मुहर डाल रही है, और कौन रत्न पदार्थ दे रही है?

बुआ छल्ला और मुँदरी छोड रही है। दादी मुहर और माँ रत्न पदार्थ डाल रही है। पूरा सूप भर गया है।

कँहार की लडकी (पत्नी) हँसती हुई कह रही है। कँहार (पति) बिहँसता हुआ बोल रहा है—"दूल्हा युगों तक जीता रहे, दूल्हन सदा सुहागिन बनी रहे!"

नेछू-नहान

(१०३)

तोरी चुटकी कटावै नउनिया रे,
जौ मोरा टेढा महाउर रे।

तोरी नथुनी उतारौ भोजइती रे,
जौ मोरा खोटा रुपइया रे।

तोरी चुटकी कटावौ नउनिया रे,
जौ मोरा टेढा महाउर रे।

तोरी झुलनी लेबइ दादी रे,
जौ मोरा खोटा रुपइया रे।

बहू महावर लगवाते समय नाइन से परिहास कर रही है—"नाइन, यदि मेरा महावर टेढा होगा तो मै तुम्हारी उँगलियाँ कटवा लूँगी।"

नाइन उत्तर देती है—"मालिकिन, मेरा रुपया अगर खोटा होगा तो मै तुम्हारी नथ उतरवा लूँगी!"

(अन्य नामों के साथ भी यही पंक्तियाँ बार-बार दुहराई जाती हैं।)

(१०४)

राम दुवारे एक हरियर पीपर, अछल-बिछल होइ गइ डार,
तेहि तर राम जी हथिया सजावइँ, लछिमन सजावइँ आपन घोड।
बेरिया की बेर तोहइँ बरजउ लछिमन, हमरी बरतिया जिनि जाउ,
हमरी बरतिया बहुत दिन लागइ, मरि जाबेउ भूख-पियास।
भुखिया सहबेउँ, पियसिया सहबेउँ, सहबेउँ भुभुरी अउ घाम,
सीता भउज के बियहि लइ अउबेउँ, देखबेउँ जनक - दरबार।
हँथिया सजि गये, घोडवा सजि गये, सजि गये नगरिया के लोग,
हमरे राम जी कर ब्याह जनकपुर, हम जगि देखन जाब।

राम के दरवाजे पर हरे पीपल का पेड है। उसकी डाले इधर-उधर फैली हैं। राम उसके नीचे अपना हाथी सजा रहे हैं। लक्ष्मण अपना घोडा सजा रहे है। लक्ष्मण को बरजते हुए राम कहते हैं—"भाई लक्ष्मण, तुम मेरी बारात मे मत चलो। बहुत दिन लगेंगे। तुम्हे बडी भूख प्यास सहनी पडेगी।"

लक्ष्मण उत्तर देते हैं—"मै भूख सहूँगा, प्यास सहूँगा। रास्ते की गरम धूल और धूप सहूँगा। और इस तरह सीता भाभी को ब्याह लाऊँगा। राजा जनक का राजद्वार भी देख लूँगा।"

हाथी सज गये। घोडे सज गये। नगर के सब लोग सज कर तैयार हो गये। सब के मन मे लालसा और उछाह है—"जनकपुर मे हमारे राम जी का ब्याह है। हम सब देखने चलेगे।"

(१०५)

पतिया लिखि एक भेजइँ जनक जी, दिहेउ रामा जी के हाँथ रे,
धरती क भरवा हरउ मोरे राम, धनुषा करउ दुई खण्ड रे।
पतिया बाँचत रामा हँथिया सजावइँ, घोडा सजावइँ चारिउ बीर,
रथ चढि पहुँचे हइँ राजा रे दशरथ, नगर उडावत धूरि रे।

तोरउँ धनुहियाँ, हरउँ गरुअइया रे, लेउँ सीतल देई का दान,
हमरी पगिया ऊँची रे करतेउ, सीता क लेतेउ बियाहि।
धनुपा उठाइ राम देखइउ न पायेंनि, नउ खण्ड कइ दिहेनि डारि,
सीता देई सकुचत पग भुइँ डारत, सखियन लिहे जयमाल।
दशरथ गरवा मिलत हैं जनक जी, सुनउ समधी बात हमारि,
सीतल धेरिया अलफ सुकुँवारी रे, राखेउ जिअरा के बीच।

राजा जनक ने पत्र लिख कर भेजा—"इसे राम के हाथ मे देना। कहना राम, धनुष तोडकर धरती का बोझ हल्का करो!"

पत्र बाँचते ही राम ने हाथी सजाया। चारों भाइयो ने घोडे सजाये। रथ मे बैठकर राजा दशरथ भी नगर मे पहुँच गये। आसमान मे धूल उडने लगी। दशरथ ने राम से कहा—"धनुष तोडकर धरती का भार उतारो और बदले मे सीता का दान ग्रहण करो। सीता से ब्याह कर मेरी भी पाग ऊँची करो।"

धनुष उठा कर राम ने देखा भी नही कि उसके नौ टुकडे हो गये। सीता सकुचाती हुई आगे बढती है। सखियाँ हाथ मे जयमाल लिये हे। जनक जी दशरथ को गले लगाते हुए कहते हैं—"हे समधी, मेरी बात सुनिये। सीता बेटी बडी सुकुमार है। उसे अपने कलेजे के बीच मे ही रखियेगा!"

(१०६)

मचियेइ बैठी ह रानी कौसिल्या देई, मोतियन चुवै नैना आँसु रे,
धिक् मोरे जनम रे एकहू न सारथ, जेहि घर राम कुँवार रे।
बाउर हौ तुम बाउर रनियाँ, केहि तोरा हरले है ज्ञान रे,
एक दिन झखेउ रानी राम जनम के, अब झखेउ राम बियाह रे।
झीना-झीना कपडा पहिने राजा दशरथ, घोड पीठ भये है सवार रे,
जाइ के उतरे जनक जी के द्वारे, रिखि आगे खबर जनाउ रे।
पाँउ पखारत राजा जनक जी, कहऊ अजोध्या के हाल रे,
हमरी नगरिया कुशल है राजन, अपनी कहउ कुशलात रे।
राजपाट सब कुछु बाटइ मोरे रे, औ है कन्या मोरी चारि रे,
जेहि घर कन्या कुँवारी बिराजइँ, तेहि किन पूँछवु हाल रे।

चारि बेटवने हैं मोरे जनक जी, हैं चारिउँ बार कुँवार रे,
हँसि खेलि धेरिया बियाह् रचावउ, हम लेवइ चारिउ बियाहि रे।

रानी कौशल्या मचिया पर बैठी हैं। आँखो से मोतियों जैसे आँसू टपक रहे है—"धिक्कार है! मेरे जीवन मे कुछ भी सार्थक नही हुआ। राम अभी तक क्वारे पडे है।"

सहेलियाँ समझाती है—"रानी, तुम तो बावली हो गई हो। एक दिन राम के जन्म के लिये तरस रही थी, अब राम के ब्याह के लिये चिन्तित हो!"

झीने-झीने कपडे पहन कर राजा दशरथ घोडे की पीठ पर सवार हो गये। जाकर राजा जनक के दरवाजे पर उतरे। ऋषि ने जाकर खबर दी। पाँव धोते हुए राजा जनक कहते हैं—"कहिये, अयोध्या का क्या हाल है?"

"राजन्, हमारी नगरी मे सब कुशल है। आप अपनी कुशलता कहे।"

राजा जनक बोले—"राज-पाट मेरे सब कुछ है। चार कन्याये भी हैं। लेकिन जिस घर मे कन्याएँ क्वाँरी हों, उसका आप भला क्या हाल पूछते हैं?"

दशरथ ने उत्तर दिया—"जनक जी, मरे चार बेटे हैं। चारो अभी क्वारे हैं, आप हँसी खुशी अपनी कन्याओ का ब्याह रचाये। हम चारों को ब्याह लेगे।"

(१०७)

ऊँची बखरिया कइ ऊँची अटरिया, खिरकी लगी है दुइ चारि रे,
तहवइँ बैठी है माया कौसल्या देई, को करे राम के बियाह रे।
सोने के खरउवाँ आये है दशरथ, सुनउ रनिया बचन हमारि रे,
राजा जनक जी की सीता कुँवारी, हम रचबइ उनही से ब्याह रे।
हासिल घोड चले राजा दशरथ, पहुँचे जनकपुर जाइ रे,
लाल परेउँना द्वारे पर टाँगा रे, लेत है सीता राम नाम रे।
पनिया पिये पर बैठे राजा दशरथ, कहउ अजोध्या के हाल रे,
हमरी नगरिया कुशल सब बाटइ, कुशल चाही हमका तुम्हारि रे।
काज परे हम आये है द्वार रे, सुनउ ठाकुर बात हमारि रे,
तुम घर बाटी बारी सीतल देई, हम घर है राम कुँवार रे।
ना घर नुनवा रे, ना घर तेलवा, ना घर कोठिलवा मोरे धान रे,

चुल्हवा धरन नहि आवै समधिन देई कैसे क रचउ बियाह रे।
हम देबइ नुनवा रे, हम देबइ तेलवा रे, भरि देबइ कोठिला मे धान रे,
हँसि खेलि सीता का व्याह रचउ रे, हँसत अयोध्या क जाउँ रे।

ऊँची बखरी की ऊँची अटारी है। दो चार खिडकियाँ लगी हैं। वहीं बैठी हुई माता कौशल्या सोच रही हैं—"राम का कौन ब्याह करेगा!"

सोने का खडाऊँ पहने राजा दशरथ आये—"रानी, मेरी बात सुनो। राजा जनक की सीता क्वाँरी है। हम उसी से ब्याह रचायेंगे।"

लाल घोडे पर सवार होकर राजा दशरथ जनकपुर पहुँचे। दरवाजे पर लाल चिडिया टँगी है। वह सीता राम का नाम ले रही है। पानी पीने के लिये राजा दशरथ बैठे तो जनक जी ने पूछा—"कहिये, अयोध्या का क्या हाल है?"

दशरथ बोले—"हमारी नगरी मे सब कुशल है। हमे तो आपकी कुशलता चाहिये। काम पडने पर हम आपके दरवाजे पर आये हैं। आप मेरी बात सुने। आपके घर मे सीता क्वाँरी है। हमारे घर मे राम क्वारे हैं।" (दोनों का ब्याह रचा दो)।

जनक बोले—"घर मे न नमक है, न तेल। कोठिले मे धान भी नही है। समधिन चूल्हा रखने भी नहीं आतीं। मै भला कैसे ब्याह रचाऊँ?"

दशरथ ने उत्तर दिया—"मैं नमक दूँगा। तेल दूँगा। कोठियों मे धान भरा दूँगा। आप हँसी खुशी सीता का ब्याह रचाये। जिससे मै हँसता हुआ अयोध्या जाऊँ।"

(१०८)

बरिया की बेर तोहि बरजउँ दुलहे राम, बिन्द्रहिबन जिनि जाउ,
बिन्द्रहि बन मे मेघ गरजत है, भिजिहइँ कटक तोहारि रे।
भिजिहइँ हाथी, भिजिहइँ घोडा रे, भिजिहइँ दुलहे क चन्दन घेवार रे,
भिजिहइँ डँडिया, भिजिहइँ डोलिया रे, भिजिहइँ चारिउ कँहार।
भिजिहइँ जमवा रे, भिजिहइँ जोडा रे, भिजिहइँ पटुका तोहारि रे,
भिजिहइँ दुलहिनि देइ के लहँगा चुनरिया, भिजिहइँ सेन्दुर भरि लिलार

भिजिहइँ जनिया, भिजिहइँ बजनिया, भिजिहइँ सगरी बरात रे,
भीजि जइहइँ दुलहे राम माई कइ कोखिया, जेन तोहइँ दिहेनि अवतार।

"दूल्हे, तुम्हे बार-बार बरजती हूँ। वृन्दावन मत जाना। वृन्दावन मे मेघ गरजते है। तुम्हारी सेना भीग जायेगी। हाथी भीगेगे, घोडे भीगेगे। घयौरा हुआ चन्दन भीगेगा। डाँडी और डोली भीगेगी। चारो कँहार भीगेगे। जामा भीगेगा, जोडा भीगेगा। तुम्हारी पटुका भीगेगी। दूल्हन की लहँगा-चुनरी भीगेगी और माथे का सिन्दूर भी भीग जायगा। नौकर और बाजेवाले भीगेगे। सारी बारात भीग जायगी, दूल्हे, तुम्हारी उस माँ की कोख भी भीग जायगी, जिसने तुम्हे जन्म दिया।"

(१०६)

धनुष उठाइ अरे लीपत सीतल देई, परि गइ जनक जी केइ दीठि रे,
जे मोरे धनुका कइ हरइ गरुवइया, सेहि सग बेटी क बियाह रे।
पतिया लिखि-लिखि भेजइँ नगर मे, सुनहु न राज दुआर रे,
टुटत धनुष मोरी बेटी क ब्याह रे, हरहु न सकट हमार रे।
सभवइ बैठे है गुरु बशिष्ठ जी, बगल मे लछिमन राम रे,
नैनन सैन से दिहेनि असिसिया, सुनहु न बचन हमारि रे।
लेहु धनुहिया खण्ड दुइ करउ रे, हरहु जनक जी के भार रे,
ब्याहि सीतल जी जाहू अवधपुर, जग मे करउ उपकार रे।
तुम्हरी बचन गुरु सिर मोरे माँथे, मै हरउँ सकट भार रे,
हरहु न धनुका की अरे गरुवइया, मै करउँ खण्ड दुई डारि रे।

धनुष उठाकर सीता जी लीप रही थी। राजा जनक की दृष्टि पड गई। (उन्होने उसी क्षण प्रतिज्ञा की)—"जो मेरा धनुष उठा लेगा, वही मेरी बेटी के साथ ब्याह करेगा।"

नगर-नगर उन्होने पत्र लिख कर भेज दिया—"राजाओ, सुनो! धनुष टूटने से ही मेरी बेटी का ब्याह होगा। तुम सब मेरा सकट दूर करो!"

गुरु वशिष्ट सभा मे बैठे है। बगल मे राम और लक्ष्मण है। नेत्रों के संकेत से आशीर्वाद देते हुए वशिष्ट बोले—"मेरी बात सुनो! धनुष

उठाकर टुकडे-टुकडे कर डालो और जनक जी का बोझ हल्का कर दो। सीता को ब्याह कर अयोध्या ले आओ और ससार का उपकार करो।"

राम ने उत्तर दिया—"गुरुदेव, आपका वचन मेरे सिर माथे है। मै संकट-भार दूर करूँगा। आप धनुष का भारीपन दूर करे। मै उसके दो टुकडे कर डालूँगा।"

(११०)

बरहइ बरिस के है हमरे राम जी, सीता बियाहन जाइँ रे,
दुलकत घोडवा चढे हे लछिमन, कलगी सँवारत चारिउ बीरा।
जाइ के पहुँचे जनकपुर नगरी, गगन उडावत धूरि रे,
नगर अयोध्या से आयी बरतिया, सौ-साठ आवत हजार रे।
कहँवाँ उतारउँ आदल-बादल, कहँवाँ बधावउँ हाँथी-घोड,
कहँवाँ बइठावउँ मँइ समधी सजन के, कहँवाँ मँइ दुलरू दमाद रे।
बगिया उतारउ आदल-बादल, खेतवा बँधावउँ हाँथी-घोड रे,
अँगना बइठावउ समधी सजन के, कोहबर दुलरू दमाद रे।
रतन-पदारथ समधी क देबई, धिया का दुलरू दमाद रे,
हाँथ जोडि के बिनती करब हम, सुनउ समधी अरज हमारि रे।

हमारे राम बारह वर्ष के हैं। वे सीता से ब्याह करने जा रहे हैं। लक्ष्मण दुलकते घोडे पर सवार हुए। लटे सँवार कर भाई लोग तैयार हो गये। आसमान मे धूल उडाते हुए सब लोग जाकर जनकपुर नगरी मे पहुँच गये।

जनक जी सोच मे पड गये—अयोध्या नगर से बारात आई है। साठ सौ हजार (असख्य) बराती आ रहे हैं। यह आदल-बादल मै कहाँ उतारूँ? हाथी घोडे कहाँ बँधवाऊँ? स्वजन समधी और दुलारे दामाद को कहाँ बिठाऊँ।

"बाग मे आदल-बादल उतारो। खेतो मे हाथी घोडे बँधाओ। आँगन मे स्वजन समधी को और कोहबर मे दुलारे दामाद को बिठाओ।"

समधी को रत्न पदारथ दूँगा। दुलारे दामाद को अपनी कन्या दूँगा और हाथ जोड़कर उनसे बिनती करूँगा कि, "हे समधी, आप मेरी अरज सुने।"

(१११)

चारिउ भइया घोडवा कुदावइँ, मलिनी अहेरेक जाइँ रे,
जाइ के पहुँचे जनकपुर नगरी, सीता रखावइँ फुलवारि रे।

केकरि हौ तुम बारी कुँवारी, अरे केकरि रखावउ फूलवारि रे,
राजा जनक जी की बारी कुँवारी, रिषी कइ रखावउँ फूलवारि रे।

जौ तुम राजा जनक की धेरिया रे, बैठउ न बगल हमारि रे,
कइसे क बइठउँ रामा तुम्हरी बगलिया, अबही मँइ कन्या कुँवारि रे।

सोने के थाल कलस भरि पानी, कुस लइ देइहइँ दान रे,
सोने के मुँदरिया लइ बाप सकलपइँ, तब बइठउँ बगल तुम्हारि रे।

चारो भाई घोडे कुदाते हुए जनकपुर नगरी मे पहुँचे। सीता फुलवारी की रखवाली कर रही थी। राम ने पूछा—"तुम किसकी क्वाँरी बेटी हो? किसकी फुलवारी की रखवाली कर रही हो?"

सीता ने उत्तर दिया—"राजा जनक की क्वारी बेटी हूँ। ऋषि की फुलवारी की रखवाली कर रही हूँ।"

"अगर तुम राजा जनक की बेटी हो, तो मेरी बगल मे बैठो न!"

"राम, तुम्हारी बगल मे कैसे बैठूँ? अभी तो मै क्वाँरी कन्या हूँ! सोने की थाल होगी। कलसा भर पानी होगा। कुश लेकर दान करेंगे। सोने की अँगूठी लेकर पिता जी सकल्प पढेगे। तब मै तुम्हारी बगल बैठूँगी।"

(११२)

एक कियरिया मे धनुका-मँडुवा, एक कियरिया धनियाँइ दूब रे,
एक कियरिया दुलहे गोपाल राम, घडिया घडी चढइ रूप।

की रे दुलहे राम बिधि के सँवारे, की तोहइँ गढलेउ सोनार,
की रे दुलहे तुहुँ सँचवा के ढारे, घडिया घडी चढइ रूप।

ना मँइ दुलहिन देई बिधि कर सँवारा, नहि मोहि गढलेउ सोनार,
माया जसोदा देई अस कइ सँवारइँ, घडिया घडी चढइ रूप।

एक क्यारी मे वनुका मॅडवा है। एक क्यारी मे वनिया और दूब है। एक क्यारी मे दूल्हे गोपाल जी हैं। घडी-घडी उनका रूप चढ रहा है।

"दूल्हे, क्या तुम्हे राम ने सॅवारा है। या किसी सुनार ने गढा है। या तुम सॉचे मे ढले हो, जिससे घडी-घडी तुम्हारा रूप चट रहा है?"

"दूल्हन जी, न तो मुझे राम ने सॅवारा है, न किसी सुनार ने गटा है। मात' यशोदा देवी ने इस तरह सॅवारा है कि घडी-घडी मेरा रूप चढ रहा है।"

(११३)

नगर अजोधिया कइ सॉकरि गलिया, दुबिया छिछिड गइ बाट,
हरियरि दुबिया मॅइ दुधवा सिचावउॅ, सेहि बाट जाइ बरात।
दुबिया कचरि राम चले ससुररिया, नयना चुवत दूनउॅ ऑसु,
अचरा पसारि माया दुबिया सिचावउ, मोरे बूते चलि नहि जाइ।
सेहि बाट नगरी बहिनी कवनि देई, बिरना जोहत ठाढ बाट,
घमवा नेवारि भइया जाउ ससुररिया, भुभुरी जरत तोर पॉउ।
कइसे क घमॅवा नेवारउॅ मोरि बहिनी, जानो अहइ बडी दूरि,
हरियरि दुबिया कचरि मॅइ आयेउॅ, भुभुरी जरत नहि पाउँ,
की तोरी दूलभ बहिनी रे दुलहे, की दूलभ तोरि ससुरारि,
कवने दुखन दुलहे चलेउ दुवरिया, भुभुरी जरत दूनउॅ पॉउ।
नाही दुलभ मोरि बहिनी कवनि देई, नाही दूलभ मोरि ससुरारि,
दूलभ अहइ मोरि माया कइ कोखिया, जे न मोहि दिहेनि अवतार।

अयोध्या नगर की सॅकरी गली है। उस राह पर हरी-हरी दूब फैली हुई है। रानी कौशल्या कहती हैं—"हरी दूब का मै दूध से सिंचन कराऊँगी। उसी रास्ते से मेरे राम की बारात जायेगी।"

दूब कुचलते हुए राम अपनी ससुराल चले। उनके दोनो नेत्रो से ऑसू टपक रहे हैं। माता कौशल्या से वे निवेदन करते हैं—"मॉ, अचल फैलाकर दूब का सिंचन कराओ। इस पर चलने मे मुझे कष्ट हो रहा है।"

उसी रास्ते मे अमुक बहन का घर है। भाई को जाता हुआ देखकर वह

कहती है—"हे भाई, धूप निवार कर ससुराल जाना। गरम-गरम धूल से तुम्हारे पैर के तलुवे जल रहे हैं।"

भाई उत्तर देता है—"बहन, मै धूप निवारने के लिये किस प्रकार रुकूँ। रास्ता बहुत लम्बा है, बहुत दूर जाना है। मै तो हरी हरी दूब पर चल कर आ रहा हूँ, मेरा पैर किस प्रकार जलेगा ?"

दूल्हे से मार्ग की कोई स्त्री पूछती है—"हे भाई दूल्हे, क्या तुम्हारी बहन दुर्लभ है, अथवा ससुराल ? किस विपत्ति के कारण तुम ग्रीष्म की दोपहरी मे चल पडे हो ? गरम धूल से तुम्हारे पैर जल रहे होगे ?"

दूल्हा उत्तर देता है—"न तो मेरी अमुक बहन ही दुर्लभ है और न मेरी ससुराल ही। मेरे लिये अलभ्य तो वस्तुत• मेरी उस माँ की गोद है जिसने मुझे जन्म दिया है।"

तिलक

(११४)

बहरे से आये है राम जी, मुनुन-मुनुन करइँ,
माया अँगने मे चउक पुरावउ, ससुर मोर आवत हो।
हँसि के बोली है माया, बिहँहि के बहिनिया,
वेटा, चन्द्र-सुरुज मँइ उरेहउँ, तिलक चढवावउ हो।
आधे अँगने ससुर - गोत, आधे मे बाप - गोत,
बिचवा मे बइठे बेटा राम, तिलक चढवावइँ हो।
पाँच गाँठि लीहेनि हरदी, पाँचइ सोपरिया,
राम, लेउ न आखत-नरियर, तिलक चढवावउ हो।
हँसि के लिहेनि तिलकिया, बिहँसि मुख बोलइँ,
सारे लेबइ तोरि बहिनिया, बहिनि तोरि सुन्दरि हो।

रामचन्द्र बाहर से लौटे। मुन-मुनाते हुए बोले—"माँ, आँगन मे चौक रचाओ। मेरे ससुर जी आ रहे है।" माँ हँसती हुई, बहन बिहँसती हुई बोली—"बेटा, चौक मे मै चन्द्रमा और सूर्य का चित्र बनाऊँगी। तुम तिलक कराओ।"

आँगन के आधे भाग मे श्वसुर-गोत्र के लोग बैठे है। आधे मे पिता के

पक्ष के लोग बैठे है। बीच मे प्रिय पुत्र विराजमान है। उसका तिलक हो रहा है।

हल्दी की पाँच गाठे ली गयी। पाँच ही सुपारियाँ भी ली गयी। पुरोहित जी बोले—"राम, हाथ मे अक्षत और नारियल लो। बढकर माथे पर तिलक कराओ।"

प्रसन्न मुद्रा मे राम ने तिलक कराया। पुलकित भाव से बोले—"साले भाई, तुम्हारी बहन बहुत सुन्दर है। मै उसके साथ ब्याह करूँगा।"

बड़ी घोड़ी

(११५)

घोडी तो एक अलबेली रे बन्ने,
राज दुवारे है ठाढी रे बन्ने,
ना खर खाइ न पानी पियइ रे
ना आसन वह लेवे रे बन्ने,
दादी बलि - बलि जाय रे बन्ने,
दूध कटोरन पियो रे बन्ने,
चाभत नागर पान रे बन्ने,
सर अलबले का सेहरा बन्ने,
कलँगी म अजब बहार रे बन्ने,
माया वलि-वलि जाइ रे बन्ने,
अग केसरिया जामा रे बन्ने,
नागफनी वाके बन्द रे बन्ने,
कान सूरत की मोती रे बन्ने,
कगन मे लाल वनी है बन्ने,
बुआ बलि-बलि जाय रे बन्ने,
पॉव मखमल का जूता रे बन्ने,
मेहदी लाल गुलाल रे बन्ने,
हेठ सोहै काबुल का घोडा,

दूल्हन का डोला सजाव रे बन्ने,
बहिनी बलि-बलि जाय रे बन्ने,

एतना पहिनि दूल्हा सजि चले बन्ने,
चारि जन है परिवार रे बन्ने,

बहिनी, बुआ औ, मौसी रे बन्ने,
चौकी दूल्हे की माई रे बन्ने,

हटिया मे राई मँहग भई बन्ने,
द्वारे सजन हैं ठाढे रे बन्ने,

बहिनी तुम्हारी राज दुलारी,
राई - नोन उतारेगी बन्ने,

बलैया लेइँ मिथिला की नारी रे बन्ने।

एक अलबेली घोड़ी है। राजद्वार पर खडी है। न तृण खाती है, न जल पीती है और न आसन ही लेती है। प्यारे बन्ने दादी तुम्हारी बलैया लेती है।

बन्ने ने कटोरो दूध पिया है। नागर पान चबा रहा है। सिर पर अलबेला सेहरा है। कलँगी की निराली शोभा है। प्यारे बन्ने, माँ तुम्हारी बलैया लेती है।

देह पर केसरिया रग का जामा है। नागफनी के उसके बन्द हैं। कान मे सूरत का मोती है, कगन मे लाल कनी लगी है। प्यारे बन्ने, बुआ तुम्हारी बलैया लेती है।

पैर मे मखमल का जूता है। मेहदी और लाल गुलाल रचे गये हैं। नीचे काबुल का घोडा फब रहा है। दूल्हन का डोला सजा हुआ है। प्यारे बन्ने, बहन तुम्हारी बलैया लेती है।

इतना पहन कर दूल्हा चला है। चार प्राणी उसके परिवार मे हैं—बहन, बुआ, मौसी और चौथी दूल्हे की माँ।

हाट मे सरसो महँगी हो गई है। द्वार पर सगे-सम्बन्धी खडे हैं। तुम्हारी राजदुलारी बहन राई-नोन उतारेगी। प्यारे बन्ने, मिथिला की नारियाँ तुम्हारी बलैया लेती हैं।

(११६)

ठुमुकि घोडी नाचै महराजा,
दूल्हे के घर नाचै हो महराजा,
घोडिया ने खाया खाँड चिरौजी,
पान कूँचे नागर ओ महाराजा ।
जामा भी पहने, जोडा भी पहने,
रेशम पटुका डारे महराजा ।
घोडी के कान सूरत की मोती,
कगन मे लाल लगाये महाराजा ।
आँखो मे काजल, माथे पै चदन,
कलँगी सँवारे हो महाराजा ।
घोडिया के सर पर सेहरा सोहै,
पावो मे लाली लगावे महाराजा ।
घोडिया के सग मे नाजो का डोला,
परदा जरी का ओ महाराजा ।
चूँदर सजी है ओ महाराजा ।
माँग सेदुरा भरी ओ महाराजा ।

घोडी ठुमुक कर नाचती है। दूल्हे के घर मे नाचती है। घोडी खाँड-चिरौंजी खाती है। नागर पान कूचती है। जामा और जोडा भी पहनती है। ऊपर रेशम का पल्लू डालती है। कान मे सूरत का मोती है। कगन मे लाल जडे हैं। आँखों मे काजल और माथे पर चन्दन है। सुन्दर कलँगी सँवारती है। घोडी के सिर पर सेहरा सुशोभित हो रहा है। पैरों मे लाली लगी है।

घोडी के साथ नाजो (दूल्हन) का डोला है। जरी का परदा लगा है। सुन्दर चूँदर सज रही है और माँग मे सिन्दूर भरा है।

(११७)

आँगन मे नाचै घोडी हमारी,
घोडिया के गले मे हैकल सोहै,

कठा बनी तोरी घोडी है चारी।
घोडिया के अँग पर मखमल का परदा,
सितारो जडी आज घोडी हमारी।
घोडिया के अग पर दूल्हा सोहै,
दूल्हन का डोला ले आवो मेरी सखिया।
जब घोडिया नाचै दूल्हन के अँगना।
फुलो की वर्षा करे बनवारी।

हमारी घोड़ी ऑगन मे नाच रही है। उसके गले मे हैकल शोभा दे रही है। गले मे खूबसूरत कण्ठा है।

घोडी के अग पर मखमल का परदा है। सितारो से जडी आज वह हमारे ऑगन मे नाच रही है।

घोड़ी के अग पर दूल्हा सुशोभित हो रहा है। हे सखियो, दूल्हन का भी डोला ले आओ। हमारी घोडी आज ऑगन मे नाच रही है।

घोडी जब दूल्हन के ऑगन मे नाचती है तो फूलो की वर्षा करती है।

(११८)

घोडी मोरी ठाढी जमुनिया बाग।
बन्ना के अँग केसरिया जामा,
बन्ना तेरे पटुका मे अजब बहार।
बन्ना के हाँथो मे कगन सोहै,
बन्ना तेरी अँगूठी मे अजब बहार।
बन्ना तेरे पाँवो मे मोजा सोहै,
बन्ना तेरे मेहन मे अजब बहार।
बन्ना के सर पर सेहरा सोहै,
बन्ना तेरे झालर मे अजब बहार,
बन्ना के माथे चन्दन भल सोहै,

बन्ना तेरे काजल मे अजब बहार ।
बन्ना के सग मे नाजो का डोला
बन्ना वाके परदे मे अजब बहार,

मेरी घोडी जामुन के वाग मे खडी है ।

बन्ना के अग पर केसरिया रग का जामा है । बन्ना, तेरे पटुका की निराली ही शोभा है ।

बन्ना के हाथ मे कगन शोभा दे रहा है । तेरी अँगूठी की बडी अनूठी सुन्दरता है ।

बन्ने के पैरो मे मोजे है । मेहन की निराली वहार है ।

बन्ना के सिर पर मौर सजा है । झालर की शान के क्या कहने ?

बन्ने के माथे पर धवल चन्दन चार चाँद लगा रहा है । काजल की खूबसूरती का क्या बखान किया जाय !

बन्ने के साथ मे जानो (दूल्हन) का डोला है । उसके परदे की छटा बड़ी निराली है ।

मेरी घोडी जामुन के बाग मे खड़ी है ।

(११९)

लाल लाल घोडी आई है।
बाहर घोडी आई है।
फागुन तेरे मौसम मे।
क्या सेहरा सोहै तुमको,
कलगी लाल लगायी है।
क्या जामा सोहै तुमको,
बन्दो मे लाल लगायी है।
क्या सेहरा सोहै तुमको
चुन्ने मे लाल लगायी है।
क्या कँगना सोहै तुमको,

पहुँची मे लाल लगायी है।
क्या घोडा सोहै तुमको,
चाबुक मे लाल लगायी है।
क्या डोला सोहै तुमको,
परदे मे लाल लगायी है।

लाल-लाल रग की सुन्दर घोडी आयी है। बाहर घोडी खडी है। तुम्हारे मौसम मे फागुन के महीने की श्री सुषमा है।

कैसा मौर तुम्हारी शोभा बटा रहा है। तुमने लाल रग की कितनी सुन्दर कलॅगी लगायी है।

तुम्हारी देह पर चित्ताकर्षक जामा शोभा दे रहा है। उसके बन्दों मे लाल जडे हैं।

सुन्दर सेहरा है। चुन्ने मे भी लाल जडे है।

हाथ मे कगन पहन रखा है। पहुँची मे लाल जडे हैं।

कितने बढिया घोडे पर तुम सवार हो। चाबुक मे लाल लगी है।

बहुत सुन्दर डोला तुम्हारे साथ सजा है। डोले के परदे मे लाल लगी है।

तुम्हारे मौसम मे फागुन के महीने की श्री सुषमा है।

(१२०)

घोडी मेरी लाल भरी,
हॉ गुलाल भरी,
बॅछेडी घोडी रग मे भरी,
हॉ री सखी रग मे भरी।
घोडिया तुम्हारे बाबा सजावे,
आरत लिए है दादी खडी,
हॉ माता खडी ओ बुआ खडी,
बुआ तुम्हारी कोहबर सजावे,

झालर लगाने फूफा खडे,
हाँ रे जीजा खडे औ नाना खडे।
अग तेरे केसरिया जामा,
सर पै मौरा सजे,
हाँ रे सेहरा सजे,
नैना काजर माथे चन्दन लगे।
घोडिया तुम्हारी दूल्हन खडी,
हाँ नाजो खडी वो तो हीरा जडी,
वो तो खूब सजी हाँ नाजो खडी।

मेरी घोडी लाल रंग मे रँगी-चुँगी है! उसकी देह पर गुलाल भी लगी है। हाँ री सखी, बचकानी घोडी मन मधुर रगों से रजित है।

यह घोडी तुम्हारे दादा सजा रहे हैं। दादी आरती लेकर खडी हैं। माँ और बुआ भी खडी हैं।

तुम्हारी बुआ कोहबर सजा रही है। झालरें लगाने के लिये फूफा जी खडे हैं। पास मे जीजा और नाना भी खडे हैं।

सुन्दर दूल्हे, तुम्हारे शरीर पर केसरिया रंग का जामा है। सिर पर मौर सजा है। देखो न, सेहरा भी सजा है। आँखों मे काजल लगा है और माथे पर चन्दन।

अरी प्यारी घोड़ी, देख, तेरी बगल मे दूल्हे की दूल्हन भी तो खडी है! कितनी सुन्दर है, जैसे अग-अग मे हीरे जडे हों! खूब सजी-सँवरी दूल्हन खड़ी है।

मेरी घोड़ी लाल और गुलाल से रजित है।

(१२१)

अलबेली घोडी जनकपुर ठाढि,
रँगराती घोडी जनकपुर ठाढि।
घोडिया मेरी खाए दूध - जलेबी,
कूँचे मुँह मे नागर पान।

अग सोहै तरकस की जोडी,
मौरा लगे वाके मोती हजार ।
हेठ सोहे काबुल का घोडा,
मेहदी ओहके लाल गुलाल ।
सग सोहै तेरे नाजो का डोला,
जनकपुर दुलारी के नैन बिसाल ।

सुन्दर और रग-रजित घोडी जनकपुर नगरी मे खडी है ।

मेरी घोडी दूध और जलेबी खाती है । मुँह मे नागर पान चबाती है ।

उसके शरीर पर तरकश की जोडी सुशोभित है । माथे पर जो मौर है, उसमे हजारो मोती गुथे हैं ।

उसकी बगल मे काबुली घोडा खडा है । वह मेहदी और लाल गुलाल से रँगा और सजाया गया है ।

तुम्हारे साथ लाडली दूल्हन की पालकी है । जनक दुलारी बहू की बडी-बडी आँखे हैं । हाँ री सखियो, उनकी आँखें बहुत बडी-बड़ी है ।

(१२२)

घोडिया का चढने वाला बन्ना जुग-जुग जिये ।
सिर सोहै अलबेले का सेहरा,
कलँगी सँवारन वाला जुग-जुग जिये ।
अग सोहै केसरिया बाना,
बन्द सँवारन वाला जुग - जुग जिये ।
कान सोहै सूरत का मोती,
चुन्नी सँवारन वाला जुग - जुग जिये ।
हाँथो मे सोहै जडाऊ कगन,
पहुँची सँवारन वाला जुग - जुग जिये ।
पाँव सोहै मखमल का जूता,
मेहन्दी सँवारन वाला जुग - जुग जिये ।
हेठ सोहै काबुल का घोडा,

चाबुक सॅवारन वाला जुग - जुग जिये।
सग सोहै हरियाला डोला,
जोडी को बिहँसन वाला जुग - जुग जिये।

घोडा की सवारी करने वाले मेरे बन्ने (दूल्हे) की बडी लम्बी उम्र हो।

उसके सिर पर सुन्दर सेहरा शोभा दे रहा है। जुल्फे सॅवारने वाले मेरे बन्ने की बडी लम्बी उम्र हो।

शरीर पर वह केसरिया रग का जामा पहने है। बन्द सॅवारने वाले मेरे बन्ने की बडी लम्बी उम्र हो।

वह कानो मे सूरत के मोती पहने है। दुपट्टा सॅवारने वाले मेरे बन्ने की बडी लम्बी उम्र हो।

हाथो मे वह जडाऊ कगन धारण किये हुए है। पहुँची सॅवारने वाले मेरे बन्ने की बडी लम्बी उम्र हो।

[इसी प्रकार दूल्हे के पूरे साज-सिंगार का वर्णन करते हुए उसे दीर्घायु होने के शुभ आशीर्वाद दिये जाते हैं।]

(१२३)

बनो के बीच घूमै घोडिया रे,
द्वारे पै नाचै घोडिया रे।
बन्ना के बाबा लखपतिया रे,
वही खरीदे घोडिया रे।
एक लख माँगे, सवा लख देवे,
दादी खरीदे घोडिया रे।
आरती उतारे माता तुम्हारी,
बुआ बलैया लेवे घोडिया रे।
जामा तुम्हारे जीजा पहनावे,
सेहरा बॅधावै घोडिया रे।
राई औ नोन तेरी बहिनी उतारै,
भाभी बलैया लेवे घोडिया रे।

नेग चार सब दादा दिया है,
नानी गवावै घोडिया रे।
मामी तुम्हारी बलि-बलि जावै,
भैना नचावै घोडिया रे।

एक घोडी जगल-जगल घूम रही है। दरवाजे पर आकर नाच रही है। (बडी क़ीमती है। है कोई उसे ख़रीदने वाला? क्यो नही!) बन्ने (दूल्हे) के पितामह लखपती आदमी हैं। वे ही यह घोडी खरीदेंगे।

घोडी बेचने वाला एक लाख माँगता है। वे सवा लाख रुपये दे रहे है। दादी घोडी ख़रीद रही हैं।

माँ घोडी की आरती उतार रही है। बुआ बलैया ले रही हैं। तुम्हारे जीजा जामा पहना रहे हैं। सिर पर पाग बाँध रहे हैं। बहन राई-नमक उतार रही है। भाभी बलैया ले रही हैं।

दादी परिजनों को पुरस्कार बाँट रही हैं। नानी घोड़ी गवाती हैं।

तुम्हारी मामी बलैया लेती हैं। भाजा घोडी की सवारी कर उसे शान से नचा रहा है।

(१२४)

बन्ने प्यारे की घोडिया उदास खडी,
उदास खडी, हाँ गुमान भरी,
बन्ने प्यारे की घोडिया उदास खडी।
ना घोडिया पहिने जामा रे जोडा,
ना घोडिया सिर पै सेहरा धरी।
ना घोडिया पहिने कानो मे कुण्डल,
ना घोडिया कगन हाँथ धरी।
ना घोडिया आँखो मे काजल डाले,
ना घोडिया मुख मे तमोल भरी।
ना घोडिया लेवे काबुल का घोड़ा,

ना घोडिया चाबुक हाँथ धरी।
ना घोडिया लेवे नाजो का डोला,
ना घोडिया जावे ससुर की गली।
दादी औ बाबा घोडिया मनावें,
घोडिया पै माता बलि बलि गयी।

प्यारे बन्ने की घोडी उदास मुद्रा मे खड़ी है। हॉ, अहंकार मे भरी, उदास मुद्रा मे खड़ी है।

न तो वह जोडा-जामा पहनती है। न सिर पर सेहरा रखती है। कानों मे कुण्डल और हाथों मे कगन भी नही पहन रही है।

न तो ऑखों मे काजल लगाती है। न मुँह मे पान लेती है।

काबुल का घोड़ा भी वह नही ले रही है। हाथ मे चाबुक नही थाम रही है।

देखो तो, घोड़ी दूल्हन की पालकी भी नही ले रही है। ससुराल भी नही जा रही है।

दादी, बाबा, मॉ सब घोड़ी की मनुहार कर रहे हैं। तब भी प्यारे बन्ने की घोडी उदास खड़ी है।

बन्ना

(१२५)

बन्ने पर जदुवा न कोइ डालो,
ललले पर नैना न कोई डालो।
लाओ सखी काजल की डिबिया,
राम जी का नैना सँवारूँ।
मिथिलापुर की नारी सयानी,
आपन नना आपै सम्हालो।
चढे विमान जनकपुर आये,
अवध बरतिया साथ है लाये।

बेटा ब्याहन दशरथ जी आये,
बर की गगरिया साथ मे लाये।
चारो भैया मडप मे आये,
सीता बन्नी ब्याहन को आये।

मेरा बन्ना (दूल्हा) इस समय सजा-सॅवारा बहुत सुन्दर लग रहा है। कोई उस पर जादू टोना न करे। कोई उसे नजर न लगाये।

हे सखी, काबुल की डिबिया लाओ। मै जरा अपने राम की आँखे सॅवार दूँ। जनकपुर की स्त्रियाँ बहुत चतुर है। तुम सब स्वय ही अपनी-अपनी आँखे सॅभालो।

विमान मे बैठकर सब लोग जनकपुर पहुँचे। अयोध्यावासियो की बारात भी साथ ले गये। वहाँ शोर हो गया—"राजा दशरथ अपने पुत्रो का ब्याह कराने आये हैं। साथ मे वर का कलसा भी ले आये है।"

चारो भाई विवाह मडप मे पहुँचे। वे सीता बहू से ब्याह करने आये हैं।

(१२६)

बन्ना बन्ना मत करो सासु,
अब तो बन्ना मेरा है।
बन्ना बन्ना मत करो ननदी,
अब तो साजन मेरा है।
ओदे से जब सूखे करना,
तब तो बन्ना तेरा था।
सेज ऊपर ऊधम मचाये,
अब तो बन्ना मेरा है।
रोवे कलेवा माँगे बन्ना,
तब तो बन्ना तेरा था।
दोने पर वह दोना लेवे,
अब तो बन्ना मेरा है।

तख्ती ले जब पढने जावे,
तब तो बन्ना तेरा था।
बैठ कचहरी हुकुम चलावे,
अब तो बन्ना मेरा है।

सहेलियाँ हास्य-विनोद मे सास से बधू के पक्ष की बातें कह रही हैं—"सास जी, बन्ने (दूल्हे) को अब आप अपना मत समझे। अब तो वह मेरा (बहू का) हो गया। ननद जी, तुम भी उसे अब अपना भाई मत समझो। अब तो वह मेरा साजन बन गया है।"

(बचपन मे जब वह बिस्तर पर टट्टी पेशाब कर देता था, तब) गीले स्थान से हटाकर सूखे स्थान पर सुला देने के लिये तो तुम्हारा (माँ का) था, किन्तु अब तो वह मेरा बन गया है और मेरे साथ शैया पर आनन्द-केलि करेगा।

जब वह रो-रोकर कलेऊ माँगता था, तब तो तुम्हारा था, किन्तु अब वह मेरा हो गया है और मै उसे पत्ते के दोनो मे मिठाइयाँ भर-भरकर खिलाऊँगी।

बन्ना जब (छोटा था और) बगल मे तख्ती दवाकर पढ़ने जाता था, तब तो तुम्हारा था, किन्तु अब वह मेरा बन गया है और सभा मे बैठकर सरदार की तरह नौकरो-चाकरों पर शासन चलायेगा।

(१२७)

सखी कैसे सजे है आज हरी बन्ना।
सिर पर उनके मुकुट बिराजे,
कॅलगी मे लागे लाल रोचना।
कानो मे कुण्डल, सूरत का मोती,
लरिया लगी श्याम है जडी मणियाँ।
अग प्रभू के केसरिया जामा,
बन्दा लगे सखी नागफनियाँ।
पावो मे उनके नूपुर सजे है,
घूँघुर लगी वहके लाल कनियाँ।

सग मे उनके राधे का डोला,
परदा लगे ओहमे मखमलिया ।
गोपी गोपाल सब नाचन लागे,
सखी हरी जी की देखो चतुरइया ।

[कृष्ण विवाह के समय विविध आभूषणो से सुसज्जित है। उनके साथ राधा की पालकी भी सजी है। इस समय उनकी शोभा देखते ही बनती है। उसी का वर्णन है—]

हे सखी, देखो, इस समय कृष्ण ने कैसा शृङ्गार किया है! वे कितने सुन्दर लग रहे हैं। उनके सिर पर मुकुट सुशोभित है। कलॅगी मे लाल रोचना लगा है। कानों मे कुण्डल और सूरत के मोती धारण किये हैं। बालो की लटों मे मणियाॅ जडी हैं।

कृष्ण के शरीर पर केसरिया रग का जामा है। उसमे नागफनी के बन्दे लगे हैं। उनके पैरों मे नूपुर हैं। लाल कनी के घूॅघुर है।

उनके साथ मे राधिका रानी की पालकी है। पालकी मे मखमली पर्दे लगे हैं। गोप-गोपियाॅ आनन्दोत्सव मना रहे हैं। हे सखी, देखो कृष्ण कितने चतुर हैं!

(१२८)

कौने बन ऊगे हो मौरी के गोफवा,
कौने दिसि ऊगे चाॅद सुरुजवा?
गोकुल बन ऊगे हो मौरी के गोफवा,
पुरुब दिसि ऊगे चाॅद सुरुजवा।
गोफवा तोरन जसुमति गई फुलवरिया,
नीर बहत माई बिछुडत कन्हैया।
मौरा बँधावे हरि गये फुलवरिया,
रोवत-रोवत जसुदा के फटे छतिया।
अँचरा पकडि परभू दुधवा पियत है,
कबहूँ न बिसारिउ मोहि महतरिया।

"किस जगल मे मौरी के कोपल उत्पन्न होते हैं ? किस दिशा से चन्द्रमा और सूर्य उदित होते हैं ?"

"पूर्व दिशा से चन्द्रमा और सूर्य उदित होते हैं। और गोकुल के वन मे मौरी के कोपल उत्पन्न होते हैं।"

यशोदा माता मौरी के कोपल तोडने बाग मे जाती हैं। कृष्ण मथुरा जाते है। अत उनके वियोग-दु ख से उनकी आँखों से आँसू टपक रहे हैं।

कृष्ण मौर बँधवाने के लिये बाग मे गये। रोते रोते यशोदा माता की छाती फट रही है।

यशोदा माता का अचल पकड कर दूध पीते हुए कृष्ण निवेदन करते हैं—"माँ, मुझे कभी विस्मृत मत कर देना!"

(१२६)

आज मेरे लालन बन्ना बनेगे।
ससुरू तुम्हार बन्ना है लखपतिया,
सासु गगा जी की धारा बन्ना।
साला तुम्हारा बन्ना अहड तीरबजवा,
सरहज तुम्हारी बाँकी गुजरिया।
बैन बोलन को सखियाँ मिलेगी,
पखा झलन को दासी रे बन्ना!
लाली पलँगिया साजेगी साली,
गलवा लगन को बन्नी रे बन्ना!

आज मेरा प्यारा बेटा बन्ना बनेगा। हाँ, सखी, आज मेरा लाडला बेटा दूल्हा बनेगा।

बन्ने, तुम्हारे ससुर बहुत बडे धनी है। सास गगा की धारा के समान (निर्मल और उदार) है।

तुम्हारा साला बडा बहादुर तीरबाज है। सरहज (साले की पत्नी) गुजरिया की तरह बाँकी और नवेली है। तुम्हारे विनोद के लिये सहेलियाँ मिलेगी। पखा डुलाने के लिये दासियाँ मिलेगी। साली तुम्हारे लिये पलँग सजायेगी और कण्ठ से आलिंगन करने के लिये तुम्हे दूल्हन मिलेगी।

(१३०)

बन्ना मैं तो नाम सुन कर आई।

बन्ना तेरे बाबा की ऊँची महलिया,
बन्ना मै तो नीचे - नीचे आई।

बन्ना तेरे दादी का नखरा भारी,
बन्ना मै तो उनसे बढ कर आई।

बन्ना तेरे बाबू की ऊँची महलिया,
बन्ना मै तो नीचे-नीचे आई।

बन्ना तेरे अम्मा का नखरा भारी,
बन्ना मै तो उन से बढ कर आई।

बन्ना तेर भाई की ऊँची महलिया,
बन्ना मै तो नीच - नीचे आई।

बन्ना तेरे भाभी का नखरा भारी,
बन्ना मै तो उनसे बढ कर आई।

प्रस्तुत गीत मे दूल्हे की ससुराल और उसके अपने परिवार के वैभव का वर्णन किया गया है। कहा गया है कि उसके ससुर का बडा ऊँचा महल है। उसकी दादी बहुत नखरेबाज है। बाप, भाई आदि की भी ऊँची-ऊँची कोठियाँ हैं और माँ, भाभी आदि बहुत नखरेबाज हैं।

(१३१)

मेरा छोटा - सा बन्ना बन्नी को लेने जाय रे,
जरा देखना, हो जरा देखना।

जब बन्ना पहुँचा ससुरू दुवरिया,
ससुरू लिए है अगवानी।

जब बन्ना पहुँचा मण्डप के नीचे,
साला लिए है जै माला।

जब बन्ना पहुँचा कोहबर के भीतर,
साली खेलावे उनको पासा ।
जब बन्ना पहुँचा लाली पलँगिया,
बन्नी लिए हाथ बिरवा ।

मेरा छोटा सा बन्ना (दूल्हा) बन्नी (दूल्हन) लेने जायगा । उस वक्त जरा देखना क्या-क्या होगा ?

बन्ना जिस समय अपने ससुर के दरवाजे पर पहुँचेगा, वे उसका स्वागत करेगे । जब विवाह मडप मे जायगा तो साला उसे जयमाल पहनायेगा । कोहबर मे साली उसके साथ पासा खेलेगी ।

बन्ना जब आमोद कक्ष मे लाल पलग पर पहुँचेगा, तो बनी हाथ मे पान का बीडा लिये खडी होगी ।

(१३२)

घबडाना मत बन्ने, शरमाना मत बन्ने,
मै तो न्याय करूँगी, हाँ न्याय करूँगी ।
तेरे बाबा का खाट मै द्वारे करूँगी,
तेरी दादी से दो दो बाते करूँगी ।
वो तो एक कहे मै तो चार कहूँगी,
उनकी धोती के मै दो टूक करूँगी,
उनकी धोती की मै तो रूमाल करूँगी ।
तेरे बाबू का खाट मै तो द्वारे करूँगी,
तेरी अम्मा की बात मै तो नही सहूँगी ।
वह एक कहे मै तो चार कहूँगी,
उनके लहँगे कामै तो नेफा खोलूँगी,
गर ज्यादा बोले तो झाडू मारूँगी ।
तेरे बीरन का खाट तेरे बाग रहेगा,
तेरी भाभी का नखरा कौन सहेगा ?

सैया वो तो घरफुकनी बडी कुटनी ह,
देवर रखनी है, बडी जिभचटनी है।

सैया उनके साथ मै कैसे रहूँगी ?
सैया तेरा खाट मेरे महलो रहेगा।

बन्ना पॉव दबाऊॅ मै तो सेज सजूँगी,
जरा पखा झलो सर तेल मलो।

मै राज रजूँ तुम सेज सजो,
बन्ना घूँघट खुले मै तो गरवा लगूँगी।

दूल्हन अपने दूल्हे से विनोद कर रही है--"बन्ने, तुम्हे घबडाने और शरमाने की जरूरत नही। मै जो कुछ करूँगी, वह अच्छा ही करूँगी। तुम्हारे दादा की चारपाई मै दरवाजे पर फेंक दूँगी और दादी से मेरी खूब नोक-झोक होगी। वे मुझे एक बात कहेगी तो मै उन्हे चार बाते सुनाऊँगी। उनकी साडी फाडकर मै उससे अपने लिये रूमाल बना लूँगी।

"तुम्हारे बाप की चारपाई भी मै बाहर कर दूँगी और तुम्हारी अम्मा की एक भी बात नही सुनूँगी। एक की चार सुनाऊँगी। उनके लहँगे की बन्द तोड डालूँगी और अगर ज्यादा बड-बड करेगी तो झाडू मार कर दूर कर दूँगी।

'तुम्हारा भाई भी घर मे नही सोने पायेगा। उसकी चारपाई बाग मे चली जायगी और तुम्हारी भाभी का भी नखरा मुझसे नही सँभाला जायगा। वे घर मे फूट पैदा करती हैं। बहुत चुगली करना आता है उन्हे। देवर से गुप्त सम्बन्ध रखती हैं और जबान की बडी चटोरबाज हैं। प्रियतम, भला उनके साथ मेरा कैसे निर्वाह होगा।

"प्रियतम, तुम्हारी पलँग मेरे महल मे होगी। मै तुम्हारा पैर दबाऊँगी। शैया पर तुम्हारे साथ शयन करूँगी। तुम्हे पखा डुलाऊँगी। सिर मे तेल की मालिश करूँगी। मै राजसुख का भोग करूँगी। तुम मेरी शैया के श्रृङ्गार बनोगे। ज्योंही तुम मेरा घूँघट खोलोगे, मै तुम्हारे गले से लग जाऊँगी।"

(१३३)

बन्ने पर नजरा न कोई डारो।
मिथिलापुर की नारी सयानी,
अपने नैना आप सँभालो!
लाओ री कोई काजर की डिबिया,
राम के दोनो नैना सँवारो।
माता उनकी आरती साजे,
बहना राई-नोन उतारे।
चढि के विमान जनकपुर आये,
सिय बनरी को ब्याहन आये।
धनि जननी धनि माता कौसल्या,
राम सिया बर पायो।
जो यह राम का बनरा गावे,
तन, मन, धन सब वारे।

बन्ना इस समय बहुत सुन्दर लग रहा है। कोई उसे नजर मत लगाओ। जनकपुर की चतुर स्त्रियों, अपने-अपने नेत्रों की तुम सब स्वय ही रक्षा करो।

अरे, कोई काजल की डिबिया तो ले आओ। मै राम के नेत्र ऑजन दूँ। उनकी माता आरती सजा रही हैं। बहन राई-नमक उतार रही है।

राम विमान मे बैठकर सीता से ब्याह करने जनकपुर गये। धन्य है माता कौशल्या की कोख कि उन्हे राम जैसा पुत्र और सीता जैसी बहू मिली। राम के ब्याह से सम्बन्धित इस गीत को जो गाते हैं, वे धन्य हैं। मै उन पर अपना तन-मन और धन निछावर कर दूँगी।

मौरी

(१३४)

मलिया बुलाओ, मलिया बुलाओ
मेरे लाल की मौरी गूँथे, मेरे ललन का सेहरा गूँथे,

ना मलिया घर मे, ना मलिया बाग मे,
ना मलिया बन्ने के द्वार।
मलिया तो माँगे सखी महला-दुमहला,
मालिन माँगत है सुहाग।
मौरी तुम्हारी मालिन लाखो मे एक है,
हीरा जडी अरे मौरी बनाव।
मौरी गुथाँय बन्ने सासुर चले है,
नाजो का डोला लै आव।
हँसि - हँसि के पूछे माता तुम्हारी,
कैसी ललन ससुराल।
सासू तो है मेरी सरसुति की धारा,
ससुरू सुरुज की जोत।
पालि - पोसि बेटा बडा किया है,
दुधवा पियायो अनमोल।

दूल्हे की माँ उसकी मौरी गुथाने के लिये उतावली होती हुई कह रही है—"जल्द माली को बुलाओ! वह आकर मेरे बेटे की मौरी गूँथे, मेरे लाल का सेहरा तैयार करे!"

"न माली घर मे है, न बाग मे और न बन्ने के दरवाजे पर, कोई उसे खोज कर ले आये ताकि वह जल्द मौरी तैयार करे!"

"हे सखी, माली तो नेग मे महले-दुमहले माँग रहा है! मालिन सुहाग माँग रही है!"

"मालिन, तुम्हारी मौरी बहुत सुन्दर बनी है। लाखो मे एक है। इसमे चमकते हुए हीरे जवाहरात जडे है!"

"मौरी गुथा कर बन्ना ससुराल जा रहा है। वह अपने साथ दूल्हन की पालकी ले आयेगा!"

ससुराल से लौटने पर दूल्हे की माँ हँसती हुई पूछती है—"बेटा, तुम्हे अपनी ससुराल कैसी लगी?"

दूल्हा अपनी ससुराल की प्रशसा करता हुआ कहता है—"माँ, मेरी सास

सरस्वती की धारा के समान है और ससुर सूर्य की ज्योति की भाति चमकने वाले अत्यन्त प्रतापी और वैभव सम्पन्न हैं।"

माँ कहती है—"बेटा, मैने तुम्हारा पालन-पोषण कर तुम्हे बडा किया। तुम्हे अपनी छाती का अनमोल दूध पिलाया, किन्तु मुझे भुला कर एक दिन मे ही तुम अपनी सास और ससुर की इतनी प्रशसा करने लगे!"

दूध का मोल

(१३५)

मोरे दुधवा का लालन मोल करो।
तुम तो चले बेटा ससुरू दुवरिया,
मइया की कोखिया का मान करो।
नौ रे महीना बेटा कोखिया मे राखेउँ,
दसये महिनवा दिहेउँ अवतार।
सात सोत बेटा दुधवा पियायेउँ,
कबहूँ न दुलछेउँ तुहै मेरे लाल।
ना देखेउँ लालन भुखिया पियसिया,
ना देखेउँ लालन नयनवा की नीद।
सासू का अँचरा पकरि पूता माँगेउ,
आपनि धेरिया देइहइँ बियाहि।

पुत्र दूल्हा बनकर बारात के साथ ससुराल जा रहा है। माँ की असीम ममता सावन के बादलों की तरह उमड आती है। वह बेटे से अपने दूध का मूल्य माँगती हुई कहती है—"बेटा, मेरे दूध का मूल्य चुकाते जाओ, मेरे दूध की कीमत अदा करते जाओ! अब तो तुम अपने ससुर के द्वार पर जा रहे हो। अपनी माँ की कोख का मान कर लो, अपनी माँ का ऋण चुकता कर दो! नौ महीने मैने तुम्हे अपने पेट मे रखा! दसवे महीने मे तुम्हारा जन्म हुआ। सात स्रोतों का तुम्हे दूध पिलाया। कभी भी तुम्हारा निरादर नही किया। मैने अपनी भूख और प्यास की परवाह नहीं की। अपनी नीद की

चिन्ता नही की। आज तुम चले जा रहे हो, मुझसे दूर हो रहे हो, मेरे दूध का मोल चुकाते जाओ।"

"बेटा, अपनी सास का आँचल पकड कर यह बाते कहना। वे तुम्हारे साथ अपनी बेटी का ब्याह कर देंगी।"

(१३६)

तूँ तउ चलेउ पूता सीता बियाहन
कइ लेतेउ दुधवा क मोल।

आठ मास नउ कोखिया मे राखेउँ
दसवे महिनवा दिहेउँ अवतार,
सात सोत पूता दुधवा पियाएउँ,
दुधवा उरिन कइसे होउ?

सरग तरइया केन गिनिहइँ माता,
दुधवा उरिन कइसे होउँ
सीता बियहि लइ अउबइ माता,
चरन पखारइँ दूनउ जून।

दूल्हे को बिदा करती हुई उसकी माँ कह रही है—"बेटा, तुम तो सीता के साथ अपना ब्याह करने जा रहे हो, मेरे दूध का मूल्य चुकाते जाओ, मेरा अकूत ऋण अदा करते जाओ।"

"आठ-नौ महीने तुम मेरे गर्भ मे रहे। दसवें महीने मे तुम पैदा हुए। सात स्रोतों का मैने तुम्हे दूध पिलाया। मरे दूध का ऋण तुम कैसे चुकता करोगे?"

पुत्र उत्तर देता है—"माँ, आकाश के तारो को भला कौन गिन सकता है? माँ के दूध से भला कौन उऋण हो सकता है?

"मै सीता को ब्याह लाऊँगा। वह सुबह और शाम दोनों समय तुम्हारा पैर धोया करेगी, दिन-रात तुम्हारी सेवा किया करेगी।"

(१३७)

अनमोल है दुधवा रस से भरे।
मेरी मइया बचन है रस से भरे,
सात समुन्दर मइया दूध पिऊँ रे,
तबहूँ न मइया बुझइ पियास।
गगा तोर आँचल, जमुना गङरहया,
सरसुति धार मइया बैन भरे।
सात सोत मइया जो पिऊँ दुधवा,
तबहूँ उरिन नहि होत बने।
सरग तरइया मइँ गिनउँ रे माता,
तबहूँ न दुधवा क मोल चुके।
जननी दुधवा पिये रामचन्द्र राजा,
पुरुषोत्तम होइ के उरिन ना भये।

माता द्वारा दूव का मूल्य मॉगने पर पुत्र उत्तर दे रहा है—"मॉ, तुम्हारा मीठा दूव अनमोल है। तुम्हारी मधुर मीठी बाते अनमोल है।"

"मॉ, सात समुद्रों का जल पीने पर भी, बिना तुम्हारा दूव पिये, मे प्यासे का प्यासा ही रह जाता हूँ।"

"मॉ, तुम्हारे ऑचल मे गगा की शुभ्रता है, यमुना की गहराई है। तुम्हारी बाते सरस्वती की धारा के समान निर्मल और पुनीत हैं। सात स्रोतो का दूध पीने पर भी तुम्हारे दूव से मैं उऋण नही हो सकता। आकाश के तारो की गणना कर लेने पर भी मै तुम्हारे दूव का दाम नही चुका सकता।"

"राम ने भी मॉ का दूध पिया। वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाते हैं, फिर भी अपनी मॉ के दूध से उऋण नही हो सके।"

(१३८)

अँचरा ओढावत माया कवनि देइ, नयना चुवत ढुरहरि ऑसु,
दुधवा तउ बखसउ हो मोरि माता, तोर पूत चलइ ससुरारि।

कइसे क दुधवा बखसउँ बेटा, नयना चुवइ आँसू धार,
आठ महीना नउ कोखिया मे राखेउँ, दसये दिहेउँ अवतार।
बखसत दुधवा जिया घबराइ रे, तुहुँ पूत होबेउ फराक,
हाँथ जोरि पइयाँ लागउँ रे माई, नहि हम होबइ फराक,
चन्द्र सुरुज अस छिटकउ जगत मे, अब मोरि कोखिया जुडानि,
चाखउ अनन्द फल निति मोरे बेटा, बहुवा कइ भरी रहइ माँग।

पुत्र को दूल्हा बना कर विदा करते समय माँ अपना आँचल उसके सिर पर डाल रही है। उसकी आँखो से मोह और ममता के अविरल आँसू बह रहे हैं। पुत्र निवेदन करता है—"माँ, तुम्हारा पुत्र आज ससुराल जा रहा है। अपने दूध के ऋण से उसे मुक्त कर दो!"

माँ उत्तर देती है—"बेटा, अपने दूध के ऋण से तुम्हे किस प्रकार मुक्त करूँ? मेरे नेत्रों से अश्रुधार बरस रही है। नौ महीने मैने तुम्हे अपने गर्भ मे रखा। दसवें महीने मे मैने तुम्हे जन्म दिया। दूध से उऋण करते समय मेरे प्राण काँप रहे हैं। तुम मुझसे दूर हो जाओगे। आज से तुम पराई कन्या के वश मे हो जाओगे!"

पुत्र क्षमा माँगता है—"माँ, मै हाथ जोड कर तुम्हारे चरणो का स्पर्श कर रहा हूँ। मै पराई कन्या के वशीभूत नही बनूँगा!"

माँ आशीर्वाद देती है—"बेटा, चन्द्रमा और सूर्य की भाति तुम्हारे यश की किरणों का ससार मे विस्तार हो। मेरी कोख आज शीतल हो गई। तुम्हारी बहू की माँग का सिन्दूर अमर हो, वह सदा सुहागिन बनी रहे और तुम नित्य आनन्द के फल का आस्वादन करो।"

बेटी का ब्याह

(१३९)

काहे क मोर बाबा, पुतरी उरेहेउ, काहे क खोजउ दमाद,
काहे क मोरे बाबा पोखरा खनाएउ, काहे क निरधन दमाद?
भीति लागि बेटी पुतरी उरेहेउँ, तोहई के निरधन दमाद,
चउवा के खातिर बेटी पोखरा खनायेउँ, भागहीन निरधन दमाद।

अगिया लगावउँ बाबा पण्डित के बेदवा रे, फँसिया लगउबइ फन्दा डारि,
जनमत्त बाबा मोहि पथरा दबउतेउ, काहे क जियरा बिरोग ?
काहे क मोरि बेटी फँसिया लगावउँ, काहे क जियरा बिरोग,
सात समुन्दर रतन हम देबइ, बिलसइ राज दमाद ।

पिता और पुत्री का सम्वाद है। पुत्री पूछती है—"पिता जी, आपने पुतली क्यों चित्रित कराई ? दामाद क्यों खोजा ? तालाब किस लिये बनवाया ? और निर्धन दामाद लेकर क्या होगा ?"

पिता उत्तर देता है—"बेटी, दीवार की शोभा के लिये पुतली चित्रित कराई गई। तुम्हारे लिये दामाद खोजा। पशुओं के पानी पीने के लिये तालाब बनवाया। और भाग्यहीनता थी, इसीलिये निर्धन जामाता मिला।"

"पिता जी, पंडित का मैं सब पोथी-पत्रा जला दूँगी और स्वयं गले में फन्दा डाल कर फाँसी लगा लूँगी। जन्म के समय ही आप पत्थर से दबा कर मुझे मार डालते। आप क्यों मुझे इतना दुःख दे रहे हैं ?"

"बेटी, तुम फाँसी क्यों लगाओगी ? तुम्हारा हृदय इतना दुखी क्यों है ? मैं (दहेज में) सात समुद्र (अपार) का रत्न दूँगा और मेरा दामाद राज-सुख का भोग करेगा।"

(१४०)

एक ओरि गंगा, दुसर ओरि जमुना, बिचवा में सरसुति धार,
ओहवइँ रुकुमिनि कोहबर सजावइँ, परि गइ क्रिस्न जी कइ दीठि।

तँहवइँ दुलहे राम सेजिया बिछावइँ, कुचइँ महोबे क पान,
काहे क धन तूँ पलँग चढि बइठिउ, काहे क भरलिउ गुमान ?

आजु की रतिया सोहाग की रतिया, मिलउ न अन्तर खोलि,
हम तउ अही धन जग कर नायक, दूजे दिन रहबिउ अकेलि।

अंग लगावउँ स्वामी रखिया-भभुतिया, मन में बसेउ बयराग,
नयना बसेउ स्वामी तोहरी सुरतिया, मुखवा में हरि जिउ क नाउँ।

एतनी बचन जब सुनेनि क्रिस्न जी, कोछवाँ में लिहेनि उठाइ,
काहे क धन तूँ बिरोग करउ रे, हम अही कन्त तोहार।

एक ओर से गगा बह रही हैं। दूसरी ओर से यमुना। बीच मे सरस्व
की धारा है। उसी स्थान पर रुक्मिणी कोहवर सजा कर बैठी हैं। अचान
कृष्ण जी की दृष्टि उधर पड गई।

दूल्हे कृष्ण ने वही सेज बिछा दी। मुँह मे महोबे का पान कूँचते हु
रुक्मिणी से बोले—"प्रिये, तुम क्यों पलँग पर उदास बैठी हो? क्यो तुम
इतना मान कर रखा है? आज हमारी सुहाग-रात है। अन्तःकरण खोलक
मुझसे मिलो। मै सम्पूर्ण ससार का पालन करने वाला हूँ। दूसरे दिन तु
अकेली ही रह जाओगी।"

रुक्मिणी ने प्रीति पूर्ण उत्तर दिया—"प्रियतम, तुम्हारे लिये मैंने अप
अग मे राख-भभूत लगा रक्खी है। मन मे वैराग्य धारण किये हूँ। नेत्रो
तुम्हारा रूप बसा हुआ है और मुख से तुम्हारे नाम का उच्चारण क
रही हूँ।"

कृष्ण ने इतना सुनते ही रुक्मिणी को गोद मे उठा लिया—"प्राण, तु
क्यों इतना दुःख मान रही हो। मै ही तुम्हारा स्वामी हूँ।"

(१४१)

ऊँची बखरिया राजा जनक की, झालरि लगी है दुवार
सेइ चढि बोलइ एक लाल परेवना, लेत राम कर नाउँ।
बखरी की आरी आरी फिरइँ दुलहे राम, परि गइ परेवना प दीठि
ना हम लेबइ बाबा अँचहड पँचहड, ना हम लेबइ राज,
हम तउ लेबइ बाबा लाल परेवना, लेत राम जी क नाउँ।
देबइ मॅइ अँचहड, देबइ मॅइ पँचहड, देबइ सोरहउ भण्डार,
एक नहि देबइ लाल परेवना, लेत राम जी क नाउँ,
छोडि देबइ अँचहड, छोडि देबइ पँचहड, छोडि देबइ सोरहउ भण्डार,
छोडि देबइ बाबा तोहरी दुलारी रे, जाबइ झारिखण्ड देस।
भितरा से निसरे हइँ सरवा कवन राम, बोलत बचन सँभारि,
पान अस पातरि बहिनि सँकलपेउँ, परेवना कइ कवनि बिसाति?

राजा जनक का ऊँचा महल है। द्वार पर बन्दनबार लगे है। महल
(के छज्जे) पर बैठा हुआ एक लाल पक्षी (राम-राम) बोल रहा है।

दूल्हे राम महल के निकट घूम रहे थे। पक्षी पर उनकी दृष्टि पड़ गयी। मचल कर ससुर से बोले—"बाबा, मै इधर-उधर की चीजे नही लूँगा। राज-पाट की भी मुझे अभिलाषा नही है। अन्न, धन और स्वर्ण भी नहीं लूँगा। सोलहो भडार लेने की भी मेरी इच्छा नही है। मै तो बस यही लाल पक्षी लूँगा जो 'राम-राम' बोल रहा है।"

ससुर ने उत्तर दिया—"मै इधर उधर की सारी वस्तुयें दूँगा। सोलहो भडार दूँगा, किन्तु 'राम-राम' बोलने वाला लाल पक्षी नहीं दूँगा।"

दूल्हा रुष्ट हो उठा—'मै इधर-उधर की वस्तुयें नही ग्रहण करूँगा। सोलहो भडारो पर भी आँख नहो उठाऊँगा, और बाबा, तुम्हारी दुलारी बेटी को भी छोड कर मै झारखड वन मे चला जाऊँगा।"

घर के भीतर से अमुक नाम का बधू का भाई निकला। विनीत वाणी मे बोला—"भाई, मैने जब तुम्हे पान जैसी अपनी तन्वगी बहन सौप दी तो उसके सामने भला इस पक्षी की कौन-सी बिसात है?"

(१४२)

अँगना मे ठाढि हें माया कवनि देई, नयना चुवत दुइनउ आँसु,
के मोरे रोपइ अब रे बरतिया, के मोरे पूजइ दुवार ?
पियवा तउ गये मोर पुरबू बनिजिया, पुतवा खेलइ अहेर,
गउवाँ के लोगवा दुवरवा न अइहइँ, एक पुरुख बिनु मोर।
बन बीच बोले हैं बनदेउ बाबा, सुनउ तिरिया बचन हमारि,
हम तोरे द्वारे पूजन करउबइ, हम रोपबइ अगवानी जाइ।
तोहरी जे धेरिया धरम की धेरिया, जिनि करउ जियरा बिरोग,
कुस-करिना लइ दान करब हम, सब फल लेबइ छीनि।
गाँउ कइ धेरिया कुँवारी न रइहइँ, बिनु धन अरु बिनु बाप।
मँडए बइठि हम बहिनी बियाहब, धरम कइ बहिनि हमारि।

द्वार पर दामाद की बारात आते समय, बेटी की माँ की मार्मिक और कातर मन.स्थिति का चित्रण है—

आँगन मे अमुक नाम की माँ खड़ी है। उनके दोनों नेत्रो मे आँसू बह

रहे हैं। मन मे चिन्ता हो रही है--"मेरा कौन अपना है जो कि बारात का स्वागत करे, जो कि द्वार पूजा का उत्सव सम्पन्न करे? मेरे स्वामी पूर्व दिशा मे व्यापार करने गये हैं। पुत्र शिकार खेलने गया है। गाँव के लोग मेरे दरवाजे पर आयेगे नहीं। हाय! मेरे स्वामी के बिना कितना अकाज हो रहा है!"

गृहिणी की व्यथा से द्रवित होकर जगल के बीच से वनदेवता सहानुभूति पूर्ण स्वर मे बोले--"स्त्री, तुम मेरी बात सुनो। मै स्वय तुम्हारे द्वार पर आकर द्वार पूजा कराऊँगा। मै जाकर बारात की अगवानी करूँगा। तुम्हारी बेटी मेरी धर्मपुत्री है। तुम अपना मन छोटा मत करो। हाथ मे कुश लेकर मै कन्यादान करूँगा और इस पुण्य का सम्पूर्ण फल तुमसे बाँट लूँगा। गाँव की यह बेटी पिता और धन न रहने के कारण क्वाँरी नही रहने पायेगी। मडप के मध्य मै बहन का ब्याह रचाऊँगा। वह मेरी धर्म की बहन लगती है।

(१४३)

जबर बरतिया दुवरवइ आयी, चेरिया कलस लिहे ठाढि,
हाँथे क कलसा भुइयाँ धरत भई, धाइ के कोहबर भइ ठाढि।
सुनउ सीतल देई वर तोर लरिका, का विधि लिखेउ लिलार,
जनमत काहे न मुइ गइउ बेटी, छोटइ कन्त तोहार।
सुनउ रे चेरिया, सुनउ लउँडिया, सुनउ नगरवा के लोग,
हमरे करम बर इहइ लिख्यो है, का करइँ बाप हमार?
छोटइ बर जिनि जानउ मोरि चेरिया, है जग पालनहार,
इहइ बर सग लइ बन-बन घुमिहउँ, देइहइँ रवनवा मारि।
राम की खातिर जनम भयेउ मोर, रामहि अग लगि खियाउँ,
जनम सुफल मोर भयउ रे चेरिया, रामहि सीता परेउ नाउँ।

एक परिचारिका वस्तुतः सीता जी से विनोद कर रही है--

जिस समय बारात दरवाजे पर आई, एक परिचारिका मगल-कलश लेकर खडी थी। हाथ का कलसा जमीन पर रख कर वह दौडती हुई कोहबर घर मे पहुँची। सीता जी से (वास्तव मे उन्हे चिढाने के लिये) बोली--"रानी, तनिक मेरी बात सुनो! क्या ब्रह्मा ने तुम्हारे भाग्य मे यही लिखा है? जन्म

होते ही तुमने क्यो नही प्राण त्याग कर दिया ? भला देखो, तुम्हारा दूल्हा कितना छोटा है !"

सीता जी ने उत्तर दिया—"चेरी तू मेरी बात सुन ! नगर के सारे लोग भी मेरी बात सुनें। मेरे भाग्य मे विधाता ने यही वर लिखा था। इसमें मेरे पिता का क्या दोष है !"

"चेरी, तू मेरे दूल्हे को छोटा मत समझ ! मेरे राम सम्पूर्ण जगत के पालनकर्त्ता हैं। इन्हीं के साथ मै वन-वन घूमूँगी। यही रावण का बध करेंगे।"

"राम के लिए ही तो मेरा जन्म हुआ है। उनकी देह के साथ ही मेरी देह क्षीण होगी। मेरा जन्म सफल हो गया। अब ससार मे एक साथ राम और सीता का नाम प्रसिद्ध होगा।"

(१४४)

डगरा चलत एक राही पुकारइ, सुनउ पचउ बात हमारि,
कुस-करिना मोसे लेउ मोरे साहेब, मँइ देबेउँ चरन पखारि।
एक बन गइले, दुसर बन गइले, तिसरे मे किहेउ हाहाकार,
की मोरि बेटी के बर नाही जोग रे, की हम धनहीन बाप।
एतनी बचन जब सुनेनि हइ बेटी, भई हइँ ओसरवा मे ठाढि,
काहे क मोरे बाबा भीजइ पटुकवा, काहे क चुवइ नैन आँस ?
काहे क मोरे बाबा मुख तोर धूमिल, काहे क जियरा बिरोग।
चुटकी भर सेन्हुरा नाही लेबइ बाबा, हम बरु रहबइ कुवाँरि ?
माई के कोछवा सीस धइ सोउब, भउजी गोहनवाँ रहबइ लागि,
बिरना कइ छतरी तरे नाही होइहइ, नाही धूमिल पगिया तोहारि।

एक निर्धन पिता की मनोव्यथा का चित्र है—

रास्ता चलता हुआ एक राही पुकार-पुकार कर कह रहा है—पँचो, मेरी बात सुनो ! (मेरे पास दहेज मे देने के लिये कुछ भी नही है।) केवल कुश और कन्या के साथ मै वर का चरण प्रक्षालित कर देना चाहता हूँ। क्या इस दशा मे कोई मेरी बेटी का ब्याह करने के लिये तैयार हो जायगा ?"

उसने एक जंगल पार किया। दूसरा जगल पार किया। तीसरे मे पहुँच

कर हाहाकार कर उठा—"क्या मेरी बेटी किसी वर के योग्य नही है अथवा मै निर्धन पिता हूँ, इसीलिये कोई वर नही मिल रहा है ?"

इतनी बात सुन कर बेटी ओसारे मे आकर खडी हो गयी। बोली—"बाबा, तुम्हारा अगौछा क्यो भीग रहा है ? तुम क्यो आँसू बहा रहे हो ? तुम्हारा मुख धूमिल क्यो है ? हृदय मे इतना दुःख क्यो मान रहे हो ? मै अपनी माँग मे चुटकी भर सिन्दूर नही भराऊँगी। अब मै क्वाँरी ही रहूँगी। चुटकी भर सिन्दूर के लिये तुम पचो के चरण पखारोगे ? इससे तो अच्छा है कि मै क्वाँरी ही रहूँगी अथवा जोग रमा लूँगी। अपने भाई की गोद मे सिर रख कर सोऊँगी। भाभी की सेवा-टहल करूँगी। न तो अपने भाई का छत्र नीचा होने दूँगी और न तुम्हारी पगडी को ही धूमिल होती देख सकूँगी।"

(१४५)

माया जे दीहेनि सोने क घइलवा, बाबा तरेरेनि आँख,
सागर पनियाँ न जाउ मोरि बेटी, मसत हथिया है उहा ठाढ।
घइला धरेनि बेटी घाट किनारे, चीर छोरि बइठी नहाइ,
केकर हौ तुहुँ उलरू रे दुलरू, कवनी बहिनिया के भाइ ?
आपनि हथिया पाछे बहोरउ, हम पहिरी चीर सँभारि,
अपने बवा कर उलरू रे दुलरू, अपनी बहिनिया क भाइ,
आपन हँथिया मँइ सौहे धँसउबइ, तोहऊँ क लेबइ बइठाइ।
भइया भइया जिनि करउ धनिया, तूँ लागउ धनिया हमारि।
धोबिया त धोवत झीना कपडवा, अहिरा चरावत गाय,
अइसी नगरिया के गभरू है लोगवा, केउनहि लागइँ गोहारि।
काउ करइँ भइया रे काउ करइँ बाबा, का करइँ गवना के लोग,
जेकरि बेटी तुहुँ बारी - बियाही, सेइ लियाये जाइ।

माँ ने बेटी के हाथ मे सोने का घड़ा देकर उसे तालाब से पानी लाने की आज्ञा दी। ज्योही वह चलने को हुई, पिता ने आँख टेढी की—"मेरी बेटी, तालाब पर पानी भरने मत जाओ। वहाँ एक मस्त हाथी खड़ा है।"

बेटी ने कलसा घाट पर रख दिया। वस्त्र उतार कर (सरोवर मे) नहाने लगी। तट पर खडे एक युवक को देख कर बोली—"तुम किस माँ के दुलारे

बेटे हो ? किस बहन के भाई हो ? अपना हाथी पीछे हटा लो, ताकि मै कपड़े पहन लूॅ।"

युवक ने उत्तर दिया—"अपने पिता का मै दुलारा बेटा हूॅ। अपनी बहन का भाई हूॅ। अपना हाथी मै सामने बैठा दूॅगा और तुम्हे भी उस पर बिठा लूॅगा। प्रिये, तुम मुझे अपना भाई मत कहो। तुम मेरी पत्नी लगती हो।"

लडकी इधर-उधर ताकती हुई बोली—"धोबी झीने कपडे धो रहा है। अहीर गाये चरा रहा है। इस नगर के निवासी बडे मूर्ख हैं। कोई मेरी पुकार नही सुन रहा है।"

लडकी को जवाब मिला—"भाई क्या करे ? पिता क्या करे ? गॉव के लोगो का भी कोई वश नही। बेटी, जिसके साथ तुम्हारा ब्याह हुआ है, वही तो तुम्हे लिये जा रहा है।"

(१४६)

मोरे पिछवरवा लवॅगिया क पेडवा, लवॅग चुवइ आधी राति,
लवॅग कटाइ बाबा पलॅग बिनायनि, रेसम डोर लगाइ।
सेहि पौढि सोवत दुलही रे दुलहा, कसमस सहि नहि जाइ,
ओतइ चलु, ओतइ चलु, ससुरु की धेरिया, जोडवा धुमिल होइ जाइ।
एतनी बचन जब सुनेनि दुलहिना देई, उठी है पिछौरा छरिहाइ,
अब सुख सोवउ ससूरु के पुतवा, हम धन नइहर जाब।
कोटवा धरे कोतवाल पुकारइ, घाट धरे घटवार,
नदिया किनारे एक तिरिया पुकारइ, केवटा नेवरिया लइ आउ।
आजु की रतिया बसउ मोरी नगरी, भोर उतारउॅ पार।
भउजी भउजी जिनि करउ केवटा, तुहॅ लागउ भइया हमार,
सोवत पियवा सेजरिया प छोडेउॅ, एक बचन, एक बोल।
नदिया के तीरे एक गुलरी क पेडवा, डरिया छिछिडि गइ पार,
डरिया पकरि गोरी पार उतरि गई, केवटा मलइ दुनउ हॉथ।

मेरे पिछवाडे लौग का पेड है। आधी रात लौग के फूल झडते है। लौग का पेड कटा कर बाबा ने पलॅग बनवाया। उसमे रेशम की डोर लगवाई।

दूल्हा-दूल्हन एक साथ उसी पर शयन कर रहे हैं। गरम के मारे रहा नही जाता। दूल्हा बोला—"मेरे ससुर जी की बेटी, तनिक खिसककर सोओ। मेरा जोड़ा मैला हो जायगा।"

इतनी बात सुनते ही बेटी रानी पल्ला झिटकती हुई खडी हो गई—"अब तुम सुख की नीद सोओ। मै नैहर चली जाऊँगी।"

कोट से कोतवाल बोला। घाट से घटवार बोला—'नदी के किनारे कोई स्त्री पुकार रही है। हे केवट, तू नाव इधर ले आ।"

केवट स्त्री से बोला—"तुम आज रात मेरी बस्ती मे ही निवास करो। सुबह तुम्हे पार उतार दूँगा।"

"केवट, तुम मुझे भौजी कह कर मत सम्बोधित करो। तुम मेरे भाई लगते हो। केवल एक कड़ी बात के कारण मैने अपने साथ शयन करते हुए प्रियतम का परित्याग कर दिया।"

नदी के किनारे गूलर का एक पेड था। उसकी डाल नदी के पार तक फैली थी। वही डाल पकड कर गोरी पार उतर गई। केवट अपने दोनों हाथ मलता रह गया।

(१४७)

चुटकी भइ सेन्हुरा के कारन बाबा, बटी क दिहउ बिदस,
माई कइ कोखिया छोडायउ बाबा, बिरना कइ सूनि ओसार।

की बाबा तोरि रे पगिया झुकायउँ, की मँइ डॉकेउँ बेद बात,
की बाबा तोहसे किहेउँ बरजोरी, कवने गुन किहेउ बिछोह?

एतनी बचन जब सुनेनि हइँ बाबा, अँसुवन चुवइ भुइयाँ धार,
पगिया के छोरे नहि आवउ मोरी बेटी, देखत लागइ पहाड।

राम रमइया की आई है बेरिया, केका थमावउँ हाँथ,
जग कइ रितिया निवाहउ मोरी बेटी, काहे मन किहिउ उदास?

सोने रूप डँडिया फनावउ मोरे कँहरा, ओहरा तनावउ रतनार
साज - समान करउ मोरे बेटा, आजु बेटी जइहइँ ससुरारि।

मँडए के ओट होइ बोली है माया देई, सुनउ स्वामी बात हमारि।

गुडिया खेलन्ती है मेरी बेटी, वजरे कइ छतिया तोहारि ।
केहि दइ अँचरा सोवउबइ मोरे स्वामी, केहि देखि जियरा जुडाइ,
अँगना नओसरवा नागिनि बनि डँसिहइँ, मरि जइहइँ बछरू - बछेर।
निमिया की डरिया चिरइया न बसिहइँ, सून होइ जइहइँ हिडोर।
थर - थर काँपइ माई क हँथवा, देत कुँवारी क दान,
नैनन अँसुवा चुवइ जग मण्डप, जे देखन आये वियाह ।

"बाबा, चुटकी भर सिन्दूर की खातिर तुमने अपनी बेटी को दूसरे देश मे भेज दिया । माँ की गोद छुडा दी । भाई का चौबारा सूना करा दिया ।"

'बाबा, क्या मैने तुम्हारी पगडी नीची की थी, अथवा वेदवाक्य का उल्लघन किया था ? अथवा, क्या मैने तुमसे कोई बरजोरी की थी ? किस गुनाह की खातिर तुमने मेरा विछोह कर दिया ?"

बेटी की इतनी बात सुन कर पिता के आँसुओ की धारा जमीन पर गिरने लगी—"बेटी, पगडी उतार देने पर भी तुम्हे लौटा नही सकूँगा । मेरे सामने दुःख का पहाड नजर आ रहा है । मेरी चलाचली की बेला आ गई है । मै किसके हाथ मे तुम्हारा हाथ दूँ ? मेरी बेटी, ससार की रीति का निर्वाह करो । तुम क्यों उदास हो रही हो ?"

पिता कहारों को आदेश देते हुए बोले--"कहारो, सोने की पालकी सजाओ । पालकी मे रत्न जडित परदा लगाओ । सब साज-सामान ठीक करो । आज मेरी बेटी ससुराल जायेगी ।"

मडप की ओट से माता बोली—"स्वामी, मेरी बात सुनो । मेरी बेटी अभी तक तो गुडियो का खेल खेल रही थी । (अभी उसका बहुत बचपना था) तुम्हारा हृदय बहुत कठोर है । स्वामी, मै किसे अपने आँचल की ओट देकर सुलाऊँगी ? किसे देख कर मेरा हृदय शीतल होगा ? आँगन और ओसारा (बेटी के न रहने से) नागिन बन कर डसेंगे । (इनके सूनेपन से हृदय को बहुत पीडा होगी), पशु और बछडे (बेटी के वियोग के कारण) प्राण त्याग देगे । नीम की डाल पर चिडियाँ नही बैठेगी । मेरा झूला भी सूना हो जायगा ।"

क्वाँरी बेटी का दान करते समय माँ का हाथ थर-थर काँप रहा है । मंडप मे जो लोग ब्याह देखने आये हैं, उनके नेत्रो से आँसू बह रहे हैं ।

ऐपन निगुरी लाइ बेटी सीतल देई, भई है मँडवना बिच ठाढि,
सुरुज किरनियाँ बाबा मोरे मुख लागइ, गोरा बदन कुम्हिलाइ।

कहउ त मोरी बेटी तमुवा तनावउँ, कहउ त छत्र - बितान,
कहउ त मोरी बेटी सुरुज अलोपउँ, गोरा बदन रहि जाइ।

काहे क मोरे बाबा सुरुज अलोपउ, काहे क छत्र - बितान,
आजु रइनिया बाबा तोहरे मँडवना, भोर होत जाबइ बिदेस।

मँडए के ओट होइके बोली है माया रानी, सुनउ बेटी बात हमारि,
आठ महीना नउ कोखिया मे राखेउँ, दसये दिहेउँ अवतार।

सात स्रोत बेटी दुधवा पियाएउँ, दहिया खियाएउँ साढीदार,
एकउ गुन नाही मानिउ मोरी बेटी, चलिउ हइ बिदेसिया के साथ।

सीता देवी मडप के मध्य मे खडी हैं। उनके अग पर निगुरी का ऐपन लगा है। पिता से कहती है—"बाबा, मेरे मुँह पर सूर्य की किरणे पड रही हैं। मेरा गोरा मुँह धूमिल हुआ जा रहा है।"

पिता बोले—"बेटी, कहो तो तम्बू तनवा दूँ! कहो तो छत्र लगवा दूँ। कहो तो सूर्य को ही ओझल कर दूँ, ताकि तुम्हारा गोरा मुँह कुम्हलाने न पाये।"

"बाबा, सूर्य को क्यो ओझल करोगे? क्यो छत्र तनाओगे? बस आज की ही रात तुम्हारे मडप मे हूँ, भोर होते ही दूसरे देश चली जाऊँगी।"

मडप की ओट से माँ बोली—"बेटी, मेरी बात सुन। मैने तुम्हे आठ-नौ महीने कोख मे रक्खा। दसवे महीने तुम्हारा जन्म हुआ। सात स्रोतो का तुम्हे दूध पिलाया। साढीदार दही खिलाया। तुमने एक भी उपकार नही माना। (नाता तोडकर) परदेसी के साथ चली जा रही हो!"

मोती

अरी मोतियन माँग सँवारिए,
मेरी बेटी की माँग सँवारिए।
यह मोती बन्ना अरब से आया,
दादी रानी वाकी मँगाइये।
यह मोती बन्ना सूरत से आया,
अम्मा रानी वाको मँगाइये।
यह मोती हिन्द सागर से आया,
वुवा रानी वाको मँगाइए।
यह मोती महा सागर से आया,
बहन रानी वाको मँगाइए।
यह मोती काला सागर से आया,
नानी रानी ने वाको मँगाइए।
यह मोती लाल सागर से आया,
मामी चाची ने वाको मँगाइए।
यह मोती सात समुन्दर से आया,
भाभी रानी ने वाको मँगाइए,
यह मोती पूरे भारत से आया,
वीरन राजा ने वाको मँगाइए।
मैहर जाके बन्ने सिन्दूर लाओ,
मेरी बेटी की माँग भराइए,
हिमचल जाके बन्ने गंगाजल लाओ,
मेरी वेटी के लट को धुलाइए।
विन्ध्याचल जाके बन्ने सिन्दूर लाओ,
बन्नी रानी की माँग भराइए,
शीतलन जाके बन्ने सिन्दूर लाओ,
अपने नाजो की माँग भराइए।

कढे जाके बन्ने सिन्दूर लाओ,
अपनी दूल्हन की माँग भराइए,
सातो बहिनी का बन्ने सिन्दूर लाओ,
अपनी नाजो की माँग भराइए।

माँ अपनी बेटी का शृङ्गार करती, उसे दूल्हन के रूप मे सजाती हुई कह रही है—'अरी सखियो, मेरी बेटी की माँग सजाओ, मेरी लाडली बन्नी की माँग मे मोती गूँथो!"

इसकी माँग मे गूँथा जाने वाला मोती जानती हो कहाँ से आया है? इसकी दादी ने उसे अरब से मँगाया है। इसकी माँ ने उसे सूरत से मँगाया है।

यह मोती बेटी की बुआ द्वारा हिन्दसागर मे मँगाया गया है। बेटी की बहन द्वारा महासागर से मँगाया गया है।

नही, नही, यह मोती काला सागर से आया है। बेटी की नानी द्वारा मँगाया गया है। यह मोती लाल सागर से आया है। बेटी की मामी द्वारा वहाँ से मँगाया गया है!

अजी नही, यह मोती सात समुन्दर से लाया गया है, पूरे भारत से लाया गया है। जानती हो, किसके द्वारा? बेटी की भाभी और भाई के द्वारा!

अरे बन्ने, तुम मैहर जाकर वहाँ का सिन्दूर ले आओ। मेरी बेटी की माँग मे मैहर का सिन्दूर भरा जायगा। हिमालय से गगाजल ले आओ! मेरी बेटी अपने केश गगा जल मे धोयेगी!

बन्ने, तुम विन्ध्याचल और शीतलन का मागलिक सिन्दूर ले आओ! वही मेरी बेटी की माँग मे भरा जायगा!

बन्ने, इतना ही नही, तू कडे का सिन्दूर ले आ, दुर्गा की सातों बहनों के माथे मे लगाया जाने वाला सिन्दूर ले आ और उससे अपनी दूल्हन की माँग पूरित कर!

जोग

(१५०)

सखी सैयाँ पै जोग चलाऊँ मै,
सखी कैसे चलाऊँ?

काले काग का डखना मँगाऊँ,
काली बिलरिया के सीस पै दिया जलाऊँ
उरहुर चिडिया की चोंच मँगाऊँ,
कोरे कागज भेडे का खून कैसे लिखाऊँ?
मुल्ला बेटवना शहर से बुलाऊँ,
पाँच मुहर दे जन्तर लिखाऊँ,
पहला जन्तर बन्ने के बाँधू,
दूसरा बाँधूँ पूरे घर के गले।

हे सखी, मै अपने प्रियतम पर जोग चला कर उन्हे अपने वश मे करना चाहती हूँ ! तू ही बता, मै किस उपाय से यह प्रयोग सम्पन्न करूँ ?

काले कौवे का मै पख मँगाऊँगी और काली बिल्ली के सिर पर दीप जलाऊँगी ! उदहुद पक्षी की चोंच मँगाऊँगी। उसी की कलम बना कर भेंडे के खून से कोरे कागज पर यंत्र लिखवाऊँगी। किससे ? शहर से मुल्ले के लड़के को बुलाऊँगी। पाँच मुहर देकर उसी से यत्र लिखाऊँगी।

पहला यंत्र मैं बन्ने के गले में बाँधूँगी। दूसरा यत्र पूरे घर के लोगों के गले मे बाँधूँगी !

(१५१)

जोग न जानइ, जुगुतिया न जानइ,
आजु मेरी बेटी सासुर चली।
सिखि लेउ जोग बेटी, सिखि लेउ जुगुतिया,
सिखि लेउ सब जोग-मरम की बात,
सासु पैयाँ लागेउ, ननद के रिझायौ,
देवरा के लियो अपनाइ,
जेठ जेठानी का आदर करिके,
लियो देवरानी अपनाइ।

पर पूरुख कबहूँ जिनि देखेउ,
सैयाँ के नित उठि लागेउ पाँय ।
लौंडी चेरी बहिन जस मानेउ,
उनहूँ कर करिहउ आदर मान !

आज मेरी बेटी ससुराल जा रही है। किन्तु वह कोई योग-युक्ति नहीं जानती ।

बेटी, सारी योग-युक्तियाँ सीख लो । शिष्टाचार की सारी बातें समझ लो !

नित्य सबेरे उठकर अपनी सास के पैर छूना । अपनी ननद को हमेशा खुश रखना । देवर से अत्यन्त ममत्व और स्नेह का व्यवहार करना । जेठ और जेठानी का सदैव आदर करना । देवरानी को अपनी बहन बना लेना । पराये पुरुष की ओर कभी भी अपनी आँख मत उठाना और अपने स्वामी के चरणों की सेवा करना । घर की परिचारिकाओं और दासियों को अपनी बहन की भाँति मानना, उनका भी उचित आदर और सम्मान करना !

(१५२)

जोग जुगुतिया न जानेउँ,
सैयाँ मैं तो असली जोगिनिया रे ।
काले कौवा का डखना मँगायौं,
भुवरी बिलरिया की अँखिया रे,
उरहुर चिड़िया की जिभिया मँगायौं,
काले भेड़वा की मँसुइया रे।
इन चारिउ से तबीज बनायो,
दुलहे राम बँहियाँ बाँध्यौं रे।
आँख बाँधे पर तिरिया न देखिहैं,
मुँहना बाँधे पर भोजन न करिहैं,
पाँव बाँधे पर डेहरी न डँकिहैं,
पीठ बाँधे पर सेज न सोइहैं।

बाँध - बूंध   डेहरी   बैठायो,
झुकि - झुकि दूल्हा करे सलाम।

पहिला सलाम मेरे मनही न भावे,
दुसरा सलाम मेरे बाबा के गुलाम।

तिसरा सलाम मेरे मनही न भावे,
चौथे सलाम मेरी दादी के गुलाम।

पँचवे सलाम मेरे बीरन के चाकर,
छठवे सलाम मेरी भाभी के गुलाम।

सतवे सलाम बन्ना मेरा गुलाम है,
धोतिया   पखारे, सँवारे   सीस।

सेजिया   लगावे,   हार   मँगावे,
बिरवा जुडावे, लगावे   फुलेल।

प्रियतम, मै कोई योग युक्ति नहीं जानती। फिर भी मै बडी पक्की जोगन हूँ।

काले कौवे का पख, भूरी बिल्ली की आँख, उरहुर चिडिया की जीभ और काले भेडे का मास मँगा कर मैंने एक तावीज तैयार की। उसे अपने दूल्हे की बाँह मे बाँध दिया।

आँख बाँध देने से मेरा प्रियतम पर नारी की ओर नही देख सकेगा। मुँह बाँध देने पर वह भोजन नहीं कर सकेगा। पाँव बाँध देने पर वह ड्योटी नही पार कर सकेगा। और पीठ बाँध देने पर मेरी शैया पर नही सो सकेगा।

अपने प्रियतम को बाँध कर मैने ड्योढी पर बिठा दिया। मेरा दूल्हा झुक-झुककर मुझे सलाम करने लगा। उसकी पहली बन्दगी मुझे जरा भी अच्छी नही लगी। दूसरी बन्दगी करने पर वह मेरे बाप का गुलाम बन गया। तीसरा सलाम भी मुझे अच्छा नही लगा। चौथे सलाम पर वह मेरी दादी का गुलाम बन गया। पाँचवे सलाम पर मेरे भाई का, छठे सलाम पर मेरी भाभी का और सातवे सलाम पर वह खुद मेरा ही गुलाम बन गया। वह मेरी धोती साफ करने लगा। मेरे सिर का सिंगार करने लगा। अपने हाथ से मेरी सेज लगाने लगा। मुझे पान खिलाने लगा और मेरे अगों मे इत्र लगाने लगा।

(१५३)

जोग न जानेउँ, जुगुति नहि जानेउँ,
जोग सिखाएसि, मैया, जोग सिखाएसि रे।

गोइडे आवत मोहि बैल बनाएसि
नाथ नथाएसि अरी मैया नाथ नथाएसि रे।

द्वारे आवत मोहि मुरगा बनाएसि,
चउरा चुनवाएसि रे, अरी मैया चउरा चुनवाएसि।

मँडए आवत मोहि पण्डित बनाएसि,
बेद पढाएसि रे, अरी मैया बेद पढाएसि।

अँगना आवत मोहि जोगिया बनाएसि,
दान लेवाएसि रे, अरी मैया दान लेवाएसि।

चौके आवत मोहि बनरा बनाएसि,
नाच नचाएसि रे, अरी मैया नाच नचाएमि।

कोहबर आवत मोहि बिल्ली बनाएसि,
दहिया चटाएसि रे, अरी मैया दहिया चटाएसि।

महल आवत मोहि भेडा बनाएसि,
गरवा लगाएसि रे, अरी मैया गरवा लगाएसि।

माँ, मै कोई योग-युक्ति नही जानता था। उसने मुझे जोग सिखा दिया, मेरे ऊपर जादू-टोना कर दिया।

घर के निकट पहुँचते ही, उसने मुझे बैल बना कर मेरी नाक मे नथ पहना दी। दरवाजे पर पहुँचने पर बुझे मुर्गा बना दिया और दाने चुगाने लगी। मण्डप मे पहुँचने पर मुझे पण्डित बना कर वेद पढाने लगी। आँगन मे पहुँचने पर मुझे जोगी बनाया और दान ग्रहण करने के लिये विवश किया। चौके मे पहुँचने पर मुझे बन्दर बना कर नाच नचाया। कोहबर मे जाने पर मुझे बिल्ली बना दिया और मुझे दही चटाया। जब मै महल मे गया तो मुझे भेंडा बना दिया और मुझे अपने गले से लिपटा लिया।

(१५४)

काबुल का टोना मोरी बारी बुआ जान,
चलो बुआ जी बनिजा के घर जाना,
वहिके बेटौना से कोरा कागज लाना।
चलो बुआ जी मुल्ला के घर जाना,
मुल्ला के बेटवना से ताबीज लिखवाना।
चलो बुआ जी सोनरा के घर जाना,
सोनरा बेटवना से ताबीज भरवाना।
चलो बुआ जी पटहार-घर जाना,
पटहरवा बेटवना से ताबीज गुहवाना।
चलो बुआ जी ससरू के घर जाना
ससुरु के बेटवना को ताबीज बँधवाना।

मेरी बुआ जी काबुल का टोना जानती हैं।

बुआ जी, चलिये, कागज वाले के घर चलें। उसके लडके से कागज ले आयें। मुल्ला के घर जाकर उसके बेटे से ताबीज ले आयें। सोनार के लडके के पास से ताबीज ले आयें। पटहार के घर से ताबीज गुथा लें। ससुर जी के घर जाकर उनके लडके से ताबीज बँधवा लें।

(१५५)

हमारे हाथ अनगिन टोना।
बन्नी हमारी नहाएगी जब,
बन्ना धोती पखारेगा।
बन्नी चूँदर पहनेगी जब,
बन्ना चूँदर पहनाएगा।

बन्नी शीश गुँथाएगी जब,
बन्ना शीशा दिखाएगा ।
बन्नी जेवर पहनेगी जब,
बन्ना जेवर पिन्हाएगा ।
बन्नी लेड्ुवा फोडेगी जब,
बन्ना लेड्ुवा खिलाएगा ।
बन्नी गेड्ुवा घूँटेगी जब,
बन्ना गेड्ुवा घुँटाएगा ।
बन्नी बीडा चाभेगी जब,
बन्ना बीडा खिलाएगा ।
बन्नी सेज सजाएगी जब,
बन्ना गरवा लगाएगा ।

हमारे हाथ मे अगणित टोने हैं ।

हमारी बन्नी स्नान करेगी और साँवला सलोना बन्ना उसकी धोती साफ करेगा !

बन्नी चूँदर पहनेगी । सुन्दर सलोना बन्ना उसे चूँदर पहनायेगा ।

बन्नी जब चोटी गुथाने लगेगी तो बन्ना उसे शीशा दिखायेगा । गहने पहनते समय बन्ना उसे गहने पहनायेगा । बन्नी लड्डू फोडेगी और बन्ना उसे लड्डू खिलायेगा । बन्ना हमारी बन्नी को गेड्ुवा घुटायेगा । वह उसे पान के बीड़े खिलायेगा । सेज पर बन्नी के साथ शयन करते समय उसका आलिगन करेगा ।

(१५६)

अरी मया तेलिया बेटवना बोलाइए,
पीली सरसो का तेल पेराओ,
वा तेलवा से मशाल जलवाइए,
दादी, अम्मा, बुआ ने टोना चलाइए ।
सौ साठ बराती है द्वारे खड़े,

टोनवा के माते मूंड झुकाए खडे।
बिनती करत हैं बन्नी के ससुर जी,
बहुवा आपन टोना उतारिए।
तुम्हरी दुहाई मोरे ससुर जी,
हम टोनवा के मरम नहि जानिए,
हमरी दादी बुआ ने टोनवा सिखाइए।

अरी माँ, तेली के लड़के को बुलाओ! पीली सरसो का तेल मँगाओ। उस तेल की मशाल जलाओ। मेरी दादी ने टोना चला दिया है। मेरी अम्मा और बुआ ने टोना चला दिया है।

दरवाजे पर टोने से सम्मोहित साठ सौ बराती खडे हैं। सब सर झुकाये और गूँगे बने खडे हुए हैं।

बन्ना के ससुर निवेदन कर रहे हैं—"बहू, अपना टोना उतार लो। मेरे लडके और बरातियो पर जादू-टोना मत डालो।"

बहू सविनय कहती है—"ससुर जी, आपकी दुहाई देकर कह रही हूँ, मै टोने का मर्म नही जानती। वास्तव मे मेरी दादी और बुआ ने टोना चलाया है।"

सुहाग

(१५७)

ऊँची महलिया सोना धोबिनिया, ओही के अँगना सोहाग के बिरवा,
गयी है बिटिया देई धोबिनिया की बगिया, सोहाग की रतिया।
देउ न धोबिनिया सोहाग का बिरवा, हमके जे चाही सोहाग क बिरवा,
कइसे क देउँ बेटी आपन सुहगवा, धोबिया न देइ सोहाग क बिरवा।
पूजउ न मोरी बेटी गउरी गनेस हो, पूजउ न मोरी बेटी कातिक की चउथि हो,
होइ अमर तोर सोहाग का बिरवा, पावउ नीक सोहाग क बिरवा।
घाटे के पाट बेटी गगा जुड पानी, अँचरा चोराइ बेटी मँगिया से देबेउँ,
परदा कराइ बेटी फुफुती से देबेउँ, लेउ न लेउ सोहाग क बिरवा।

सोना धोबिन के ऊँची महल के आँगन मे सोहाग का बिरवा है। अमुक बेटी उसके बाग मे सुहाग की रात मे जाकर कह रही है—"धोबिन, मुझे सुहाग बिरवा दे दो।"

धोबिन उत्तर देती है—"बेटी, मै कैसे तुम्हे अपना सुहाग दूँ? सुहाग-बिरवा दे देने से मेरा धोबी नही रह जायगा।"

धोबिन उसे समझाती हुई आगे कहती है—"मेरी बेटी, तुम पार्वती और गणेश की पूजा करो। कार्तिक मास की चौथ का व्रत रहो। तुम्हारा सुहाग-बिरवा अमर हो जायगा।"

"घाट के पाटे के निकट गगा जी का शीतल पानी है। मै आँचल मे छिपा कर अपनी माँग का सुहाग तुम्हे दे दूँगी। परदे के भीतर लँहगे से निकाल कर तुम्हे अपना सुहाग दे दूँगी।"

(१५८)

कवन सगुन लइ आइउ धोबिन रानी,
झालर पडा है सुहाग।
घाटे के पाट बेटी गगा जुड पानी,
गौरी का लाई हूँ सिधौरा।
आवउ धोबिनि रानी, बइठउ मोरे अँगना,
भरि मुख देउ असीस।
सब का तउ देउँ बेटी सात-पाँच चुटकी,
तोहके तउ देऊँ छकडा लदाइ।
पहिनि थोढि जब ठाढि धोबिनि रानी,
भरि मुख देत असीस।
बाढइ बिटिया तोर घर परिवरवा,
अचल होइ तोहरा सोहाग।

"धोबिन रानी, तुम कौन-सा शकुन लेकर आई हो? ... .."

धोबिन उत्तर देती है—"बेटी, घाट के पाटे के निकट गगा जल बहता है। मै पार्वती का सिधोरा तुम्हारे पास ले आई हूँ।"

"धोबिन रानी, मेरे आँगन मे आकर बैठो। मुझे मुक्त कण्ठ से आशीर्वाद दो।"

धोबिन कहती है—"बेटी, और सब को तो मैं पाँच-सात चुटकियाँ ही सुहाग का सिन्दूर देती हूँ, किन्तु तुम्हे छकडो पर लदा कर ढेर का ढेर सिन्दूर दूँगी।"

पहन-ओट कर धोबिन चलने के लिये तैयार हुई और मुक्त कण्ठ से आशीर्वाद देने लगी—"बेटी, तुम्हारा सुहाग अचल हो, अमर हो।"

(१५९)

कौने बन ऊगे सोहाग क बिरवा, कौनी दिसि ऊगे चाँद सुरुजवा ?
तुलसी बन ऊगे सोहाग के बिरवा, पुरुब दिसि ऊगे चाँद सुरुजवा ।
पहिला सुहगवा गौरा ने दीन्हा, दुसरा सुहगवा धोबिनि रानी हँथवा ।
तिसरा सुहगवा बुवा ने दीन्हा, चौथा सुहगवा बहिनी के हँथवा ।
पँचवाँ सुहगवा भाभी ने दीन्हा, छठवाँ सुहगवा, कुल के हँथवा ।
सतवाँ सुगहवा दूल्हे ने दीन्हा, बेटी भई है पराए के हँथवा ।

"किस वन मे सुहाग का बिरवा उत्पन्न होता है ? किस दिशा मे चन्द्रमा और सूर्य उदित होते हैं ?"

"पूर्व दिशा मे चन्द्रमा और सूर्य उदित होते हैं। तुलसी वन मे सुहाग का बिरवा उत्पन्न होता है।"

पहला सुहाग पार्वती ने दिया। दूसरा सुहाग धोबिन ने दिया। तीसरा बुआ ने, चौथा बहन ने, पाँचवाँ भाभी ने, छठा अपने कुल के लोगो ने और सातवाँ सुहाग दूल्हे ने दिया। अब बेटी पराये पुरुष के हाथ मे चली गई।

(१६०)

हँथवा जोरि के पइयाँ मँइ लागउँ,
देउ देउ महादेउ गौरा क सुहगवा ।
बोली है गौरा देई, लिहले सुहगवा,
लेउ न बेटी रानी अँचरा पसारि के ।

कइसे क लेउँ माता अँचरा पसारि के,
झीना अँचर मोर झरिहै सुहगवा ।
लेउ न दुलहे राम जमवा पसारि के,
अचल, अमर तोर होइ है सुहगवा ।
कइसे क लेउँ माता जमवा पसारि के,
झीना मोरा जमवा झरिहै सुहगवा ।
देइहउँ सुहगवा मँइ बैला लदाइ के,
देइहउँ सुहगवा मँइ हथिया लदाइ के ।
गगा के सुहगवा, जमुना के सुहगवा,
देउँ मँइ बेटी के सुहाग का बिरवा ।

"हाथ जोड कर आपके चरणों मे शीश झुका रही हूँ। हे शकर जी, आप पार्वती का सुहाग मुझे भी दे दे !"

हाथ मे सुहाग लिए हुए पार्वती जी बोली--"बेटी रानी, आँचल फैला कर तुम सुहाग ले लो !"

बहू अपनी नम्रता व्यक्त करती हुई कहती है--"माँ, मै किस प्रकार सुहाग ग्रहण करूँ ? मेरा आँचल बहुत झीना है। सुहाग उसमे थामा नही जा सकेगा !"

पार्वती जी दूल्हे से कहती हैं--"दूल्हे, अपना जामा पसार कर तुम सुहाग ग्रहण करो। तुम्हारा सुहाग अचल और अमर हो जायगा !"

दूल्हा भी वैसा ही उत्तर देता है--"माँ, मेरा जामा बहुत झीना है। सुहाग इसमे से गिर पड़ेगा।"

पार्वती जी पुन. दूल्हन से कहती हैं--"दूल्हन, माँग फैला कर तुम सुहाग लो ! मै बैलो और हाथियों पर लदा कर तुम्हे गगा और यमुना का सुहाग दूँगी। तुम प्रीतिपूर्वक सुहाग का बिरवा ग्रहण करो।"

(१६१)

घुमडत आवे सुहाग मोरे अँगने,
गरजत आवे सुहाग मोरे अँगने,

बाबा के अँगने सुहाग क बिरवा,
दादी ने भरी मोरी माँग मोतिन से।
नाना की बगिया सुहाग क बिरवा,
नानी ने भरी माँग लाल कनी से।
फूफा के द्वारे सुहाग का बिरवा,
बुवा ने भरी माँग हीर - कनी से।
बीरन के आँगन सुहाग क बिरवा,
भाभी ने भरी माँग फूल कली से।
जीजा की सेजो सुहाग क बिरवा,
बहन भरी माँग गुलाब - कली से।
महादेव अँगने सुहाग क बिरवा,
गौरा भरी माँग लाल सिन्दूर से।
धोबिया के घरवा सुहाग क बिरवा,
धोबिन ने भरी माँग लाल सिन्दूर से।

मेरे आँगन मे सुहाग घुमडता और गरजता हुआ आ रहा है।

बाबा के आँगन मे सुहाग का बिरवा है। दादी ने मोतियो से मेरी माँग भर दी है।

नाना के बाग मे सुहाग का बिरवा है। नानी ने लाल कनी से मेरी माँग भर दी है।

फूफा के दरवाजे पर सुहाग का बिरवा है। बुआ ने हीरे से मेरी माँग भर दी है।

भाई के आँगन मे सुहाग का बिरवा है। भाभी ने फूलों की कलियों से मेरी माँग सँवार दी है।

जीजा जी की सेजो पर सुहाग का बिरवा है। बहन ने गुलाब की कली से मेरी माँग सजा दी है।

महादेव के आँगन मे सुहाग का बिरवा है। पार्वती जी ने लाल सिन्दूर से मेरी माँग भर दी है।

धोबी के घाट पर सुहाग का बिरवा है। धोबिन ने लाल सिन्दूर से मेरी माँग भर दी है।

(१६२)

बरसो दइया सुहाग की बगिया,
बरसो मेहा सुहाग की बगिया,
दूल्हन की माँग मे, दूल्हे के पाग मे,
दूल्हन के बिछुवा सजे करधनिया।
दूल्हन की चूँदर मे, दूल्हे के जोडे मे,
माथे पै बिदिया सजी रे नथुनिया।
दूल्हन के जेवर मे, दूल्हे के सिर मे
अँगुरी मे चमके हीरे की मुँदरिया,
दूल्हे के अग सँग, दूल्हे की सेज पै,
बसेगी रैन मेरी गुजरिया।

भगवान् इन्द्र, सुहाग के बाग मे जल की वर्षा करो ! काले बादलो, सुहाग की फुलवारी मे पानी बरसो !

दूल्हन की माँग, दूल्हे की पगिया, दूल्हन के बिछुवे और उसकी करधनी पर पानी बरसो !

दूल्हन की चूँदर, दूल्हे के जोडे, दूल्हन के माथे की बिन्दी और उसकी नथुनी पर पानी बरसो !

दूल्हन के जेवरो, दूल्हे के सिर और उसकी उँगली की हीरे की अँगूठी पर पानी बरसो !

बाँकी दूल्हन रात्रि के समय दूल्हे की सेज पर, उसके अगों से लग कर शयन करेगा।

अगवानी

(१६३)

मँडए के बिच होइ ठाढी है माया देई, सुनउ साहेब अरज हमारि,
बगिया के बीच ठाढी धिया कइ बरतिया, लेउ अगुवानी जाइ।

हँथवा मे लेउ कचन की थरिया, पान फूल लेउ सजाइ,
पाँउ पखारि माथे तिलक सँवारेउ, गरवा मिलेउ खोलि बाँह ।

खाँड चिरौजी क भोजन साहेब, घुँटइ के गगा जुड नीर,
मघई पनवा क बिरवा कुँचाएउ, गजरा दिहेउ गरे डारि ।

आगे-आगे आवइँ समधी सजन मोरे, पछवाँ दुलरू दमाद,
सेहि पाछे आवइ धिया कइ बरतिया, सोरहउ बाजन बाजइ साथ ।

समधी के देउँ मोहर की माला, दुलरू दमाद देबइ राज,
मोतियन माल देबइ सब रे बरतिहन, सुनउ साहेब अरज हमारि ।

मण्डप के बीच मे खडी होकर माँ अपने पति से कह रही है—"स्वामी, मेरी बात सुनो ! बेटी की बारात बाग के बीच मे खडी है । जाकर उसकी अगवानी करो !"

"हाथ मे सोने की थाली लो । उसमे पान और फूल सजाओ । सब के पैर धोकर उनके माथे मे तिलक लगाना और दोनों हाथ फैला कर सब का आलिंगन करना !"

"खाँड और चिरौजी का सब को जलपान कराना । पीन के लिये उन्हे शुद्ध और शीतल गगा जल देना । सब को मघई पान के बीडे देना और सब के गले मे एक-एक हार पहना देना !"

आगे-आगे समधी और उनके स्वजन आ रहे हैं । पीछे-पीछे दुलारा दामाद आ रहा है । उसके पीछे बेटी की बारात आ रही है । साथ मे सोलहों प्रकार के बाजे बज रहे ।

"प्रियतम, दुलारे दामाद को मै अपना सारा राजपाट अर्पित कर दूँगी ! सभी बरातियों के गले मे मोतियों की माला पहनाऊँगी !"

(१६४)

बाजत आवइ करइली क बाजा, हुमकत आवइ निसान रे,
बिहँसत आवइ पतरग समधी, कुलकत दुलरू दमाद ।

कँहवाँ बैठावउँ अजनिया-बजनिया, कँहवाँ गडावउँ निसान,
कँहवाँ बैठावउँ पतरग समधी, कँहवइँ दुलरू दमाद रे ?

बगिया वैठावउ अजनिया - बजनिया, दुवारे गडावउ निसान रे,
सभवइ बैठावउ पतरग समधी, मँडए मे दुलरू दमाद।
का दै समझावउँ अजनिया-बजनियाँ, का दै हनावउँ निसान रे,
का दै समझावउँ पतरग समधी, का दै दुलरू दमाद ?
भात दै समझावउ अजनिया-बजनिया, घिउ गुर हनावउ निसान,
दैजा दइ समझावउ पतरग समधी, धिया दै दुलरू दमाद।

करइली का बाजा बजता हुआ आ रहा है। हुमकता हुआ निशान आ रहा है। हँसता हुआ छरहरा समधी और किलकारियाँ मारता हुआ दुलारा दामाद आ रहा है।

"कहाँ बाजे वालो को बिठाऊँ ? कहाँ निशान गडवाऊँ ? कहाँ छरहरे समधी और कहाँ प्रिय दामाद को बिठाऊँ ?"

"बाग मे बाजे वालो को स्थान दो! दरवाजे पर निशान गडवाओ। सभा मे पतले समधी और मडप मे प्रिय दामाद को बिठाओ!"

"क्या देकर बाजे वालो को प्रसन्न करूँ ? क्या देकर निशान बजवाऊँ ? क्या देकर पतले समधी को और क्या देकर दुलारे दामाद को प्रसन्न करूँ ?"

"भात खिला कर बाजे वालो को प्रसन्न करो। घी और गुड देकर निशान बजवाओ। दहेज देकर पतले समधी को और कन्या देकर दुलारे दामाद को प्रसन्न करो।"

(१६५)

पछिउँ देस से आयी बरतिया,
बाबा दुवारे ठाढि बरतिया,
बीरन दुवारे ठाढि बरतिया,
चाचा दुवारे ठाढि बरतिया।
कचन थार, थार भरि मोती,
रनिया कपूर क दियना बराउ,
आरति उतारउँ अपने दमाद कइ,
मइया कपूर क दियना बराउ।

सभवा से आये हइँ बेटी के भइया,
बहिनी बोलाइ बगल बइठावइँ,
बहिनी, ऊँचि किहिउ तुहुँ मोरि छतरी,
निति तोरि बलइया लेउँ।
सभवा से आये है बेटी के बाबा,
बेटी बइठावइँ लइ गोद,
दुनउ कुल की लजिया कइ रे गठरिया,
बेटी धरी तोरे सीस।
अँगना मे बइठी है बेटी की माया,
बेटी समुझावइँ बोलाइ,
सासु कइ बोलिया, ननद कर ताना,
लिहिउ बेटी अँचरा पसारि।
ओबरी से निसरी है बेटी की भउजी,
ननद समुझावइँ छोहाइ,
निति हँसि डासेउ सजन कइ सेजिया,
हँसि - हँसि बोलिउ बात।
अँगना से बोलइँ बेटी कइ बहिनी,
कसि बहिनी बान्हेउ कुफुत कइ गठरिया,
कबहुँ न खोलेउ कबहुँ जिनि छोरेउ,
नहि माया रोवइँ, भउजी देइँ बाँटि।

पश्चिम देश से बारात आई है। बाबा के दरवाजे पर, भाई के दरवाजे पर, चाचा के दरवाजे पर बारात खडी है।

सखियो, सोने की थाली मे मोती भर कर कपूर का दीपक जलाओ! मै अपने दामाद की आरती उतारूँगी!

सभा से बेटी का भाई आया। बहन को बगल मे बिठाकर निवेदन करने लगा—"बहन, अपने शिष्ट और सुन्दर आचरण से मेरा नाम ऊँचा करना। मै तुम्हारी बलाये ले रहा हूँ!"

सभा से उठ कर कन्या का पिता आया। बेटी को गोद मे बिठा कर उसे

समझाने लगा—"बेटी, दोनो कुलों के सम्मान की गठरी तुम्हारे ही सिर पर है। आशा है, दोनो कुलो की मर्यादा की तुम भलीभाति रक्षा करोगी !"

आँगन मे बैठ कर बेटी की माँ साश्रु नेत्रों से उसे समझा रही है—"बेटी, आँचल फैला कर सास की बातो को और ननद के तानो को ग्रहण कर लेना। कभी भी उन्हे उत्तर मत देना, कभी भी उनका अपमान मत होने देना !"

ओबरी से निकलकर कन्या की भाभी उसे शिक्षा देने लगी—"ननद, हँसकर अपने स्वामी की सेज बिछाना। कभी भी अपने मुँह पर उदासी मत आने देना। हमेशा हँस-हँस कर अपने प्रियतम से मीठी-मीठी बाते करना !"

आँगन से कन्या की बहन कह रही है—"बहन, अपने दुखों और कष्टों की गठरी को हमेशा मजबूती के साथ बाँध रखना। अपनी पीडा और क्लेश के समाचार कभी अपने नैहर मे मत भेजना, नही तो माँ रोने लगेगी और भाभी बहुत खुश होकर उसे चारो ओर फैला देगी !"

(१६६)

खोरिया बटोरउ कवन राम, आवत जेकरे दुवारे बरात,
पनिया छिरकउ कवने लाल, आवत जेकरे दुवारे बरात।
घोडवा सजावउ बिरन भइया, आवत तोर बहनोइ,
हथिया सजावउ बपवा कवने राम, आवत समधी तोहरे दुवार।
हँकरउ न नगर के लोगवा रे, द्वारे आवत पाहुन आजु,
दल बादर लइ आवइ बरतिया, तिलक सँजोवइ धिया कर बाप।

हे अमुक लाल, गली मे झाडू लगाओ, तुम्हारे दरवाजे पर बारात आ रही है। हे अमुक लाल, रास्ते पर पानी का छिडकाव करो, तुम्हारे दरवाजे पर बारात आ रही है। हे कन्या के अमुक भाई, तुम्हारा जीजा आ रहा है। उसकी अगवानी करने के लिये अपना घोडा तैयार करो।

हे कन्या के अमुक पिता, तुम्हारा समधी आ रहा है। उसके स्वागत के लिये अपना हाथी तैयार करो।

नगर वासियो, आओ, एक साथ मिल कर अगवानी करो। तुम्हारे द्वार पर आज एक नये अतिथि का आगमन हो रहा है।

दल-बादल से सजी बारात आ रही है। कन्या का पिता तिलक की सामग्री सँजो रहा है।

(१६७)

गोबर गोठि के चउक पुरावउ, तोहरे आवइ दुलरू दमाद।
पण्डित बोलाइ के बेद पढावउ, तोहरे आवइ दुलरू दमाद।
सोने क कलस, कलस भरि पानी, अमवा कइ पतिया मँगाउ,
पान फूल अच्छत अउ रोरी लइ, मानिक दियना जराउ।
आरति उतारइँ आजा-बाबा, द्वारे आयेउ दुलरु दमाद,
हाँथ जोरत बीरन भइया, मोर बहनोइया बड नीक।

गोबर से गोंठ कर चौक पुराओ। तुम्हारे द्वार पर सुन्दर दामाद आया है।

पडित बुलाकर वेद-मत्रों का उच्चारण कराओ। तुम्हारे द्वार पर सुन्दर दामाद आया है।

सोने के घडे मे पानी भरो। उसमे आम के पल्लव डालो। पान, फूल, अक्षत और रोरी के साथ माणिक दीप जलाओ।

आजा और बाबा द्वार पर आए हुए अपने प्रिय दामाद की आरती उतार रहे हैं। कन्या का भाई सब से हाथ जोडकर कह रहा है—"मेरा बहनोई सच-मुच बहुत सुन्दर है, बहुत रूपवान् है।

बन्नी

आज तेरी बन्ने मै बन्नी बनूँगी।
आज तेरी नौशे मै दूल्हन बनूंगी।

हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
मेरे लिये क्या-क्या लाया रे बन्ने?

माथे का टीका, कानो का झुमका,
माथे की बिंदिया लाया रे बन्नी।

हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
खाने को क्या लाया रे बन्ने ?
मोतीचूर लड्डू, गरी की बरफी,
पिस्ते की कतरी लाया रे बन्नी !
हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
घूँटन को क्या तू लाया रे बन्ने ?
झाझर गेडुवा गंगा जल पानी,
केवडे का शरबत लाया रे बन्नी !
हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
रचने को क्या तू लाया रे बन्ने ?
लौंग इलाइची, तम्बोल का बीडा,
नागर का पान मैं लाया रे बन्नी !
हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
चढने को क्या तू लाया रे बन्ने ?
सोलह घोडा की बग्घी मैं लाया,
चँवर डुलाने को दासी रे बन्नी !

दूल्हा-दूल्हन के पारस्परिक हास्य-विनोद का वर्णन है। बन्नी (दूल्हन) कहती है—"बन्ने, आज मै तेरी बहू बनूँगी। नौशे, आज मै तेरी दूल्हन बनूँगी।"

हमारी बन्नी, हस-हस कर पूछ रही है—"बन्न, तू मेरे पहनने के लिये क्या-क्या (आभूषण) ले आया है ?"

"बन्नी, मै तेरे माथे के लिये टीका, कानो के लिये झुमका और ललाट के लिए बिंदिया लाया हूँ।"

हमारी बन्नी हस-हस कर पूछ रही है—"बन्ने, तू खाने लिए कौन-कौन सा सामान ले आया है ?"

"बन्नी, तेरे लिए मोतीचूर का लड्डू, गरी की बर्फी और पिस्ते की कतरी ले आया हूँ।"

"बन्ने, अच्छा बता, स्नान मजन के लिए क्या ले आया है ?"

"बन्ने, स्नान मजन के लिए शीतल कलश में गंगा जल और केवड़े का शरबत ले आया हूँ।"

"बन्ने, मुख-शृङ्गार के लिए क्या लाया है ?"

"मेरी प्यारी बन्नी, तेरी मुख रचना के लिए लौंग, इलायची, ताम्बूल का बीडा और नागर पान ले आया हूँ।"

"प्यारे बन्ने, अच्छा बता, मेरी सवारी के लिये क्या है ?"

"ओह ! तू नहीं जानती ? तेरी सवारी के लिए सोलह घोड़ों की बग्घी लाया हूँ। तुझे चँवर डुलाने के लिए दासियाँ लाया हूँ।"

(१६६)

आँगन सजी आज बन्नी हमारी ।
चमन मे खिली आज बन्नी हमारी ।
बन्नी के अग पर अतलस का लँहगा,
आबेरवाँ की चूँदर है डाली ।
हाँथो मे कगन, माथे पर टीका,
नूपुर की झनकारी है भारी ।
आँखो मे काजल, माथे पै बिंदिया,
इँगुर भरी माँग सोहे तुम्हारी ।
पाँवो मे बिछुवा, नाक मे नथिया,
फूलो सजी आज बन्नी हमारी ।
बन्नी का डोला द्वारे पै आया,
झटपट चढ़ गई बन्नी हमारी ।

दूल्हन के आभूषणों और उसके सम्पूर्ण शृङ्गार का वर्णन किया गया है—

मेरी बन्नी आज सज-बज कर आँगन मे खड़ी है। बाग मे आज वह फूल की तरह खिल रही है।

उसके शरीर पर अतलस का घाँघरा है। आबेरवाँ की चूँदर पहने है। हाथों मे कगन है। माथे पर टीका। पैरों मे नूपुरों का मधुर ध्वनि हो रही

है। उसकी आँखें काजल से अँजी हैं। माथे पर बिंदिया है। माँग मे सिन्द भरा है। पैरों में बिछुवे हैं और नाक मे नथिया। जूडे मे फूल गुथे हैं। ज्यु ही बन्नी की पालकी दरवाजे पर आई, वह उसमे तुरन्त बैठ गई।

(१७०)

बन्नी का डोला सजाओ मरे बन्न ।
नाजो का डोला सजाओ मेरे बन्ने ।

सुन रे बन्ने तू बन्नी को लेगा,
बन्नी का नखरा सँभालो मेरे बन्ने ।

एक लाख लहँगा, सवा लाख चूँदर,
माँथे का टीका लाना मेरे बन्ने ।

सुन रे बन्ने, तू बन्नी को देखेगा,
शीशा जडे डोला लाओ रे बन्ने ।

सुन रे दूल्हे तू दूल्हन को लेगा,
साज बराती घर लाओ मेरे बन्ने ।

सुन रे बन्ने तू बँदरा बनेगा,
बन्नी को बँदरी बनाओ मेरे बन्ने ।

मेरे बन्ने, तू बन्नी की पालकी सजा, नाजो का डोला सजा।

अरे बन्ने, अगर तू बन्नी को लेना चाहता है, तो तुझे उसके नखरे सँभालने पडेंगे।

एक लाख का लँहगा, सवा लाख की चूँदर और माथे का टीका तुझे लाना होगा।

बन्ने, अगर तू बन्नी को देखना चाहता है तो उसके लिए तुझे शीशा से जड़ा हुआ डोला लाना होगा।

बन्ने, अगर तू दूल्हन लेना चाहता है तो तुझे दरवाजे पर बारात सजा कर लानी होगी।

बन्ने, अगर तू बँदरा बनना चाहता है तो पहले बन्नी को बँदरी बना।

(१७१)

खेलेगी गुडिया बन्नी हमारी।

बन्नी के द्वारे आये बराती,
सेदुर सोपारी, बजे शहनाई।

घोडे पै देवर, हाथी पर दूल्हा,
खच्चर चढे वह तो है ननदोई।

नौबत के पीछे ससुर जी आवे,
जेवर की थाली लिये है नाई।

मण्डप के बीच मेरी बन्नी खडी है,
साजन भरे मॉग सेन्दुर तुम्हारी।

हमारी बन्नी गुड्डी खेलेगी।

बन्नी के दरवाजे पर बराती आये हैं। सिन्दूर और सुपारी आ गई है। दरवाजे पर शहनाई बज रही है।

बन्नी का देवर घोडे पर सवार है। दूल्हा हाथी पर बैठा है। लेकिन उसका गभड् ननदोई खच्चर पर बैठा है।

नौबत के पीछे ससुर जी आ रहे हैं। नाई जेवरों की थाली लिये है।

मडप के बीच मेरी बन्नी खडी है। साजन उसकी मॉग मे सिन्दूर भर रहा है।

(१७२)

रखूंगी नैनो के बीच तुम्हे,
बन्नी जाने न दूंगी।

बेना भी दूंगी, टीका भी दूंगी,
झूमर भी दूंगी जडाऊ तुम्हे।

झुमका भी दूंगी, कुण्डल भी दूंगी,
दूंगी अँगूठी जडाऊ तुम्हे।

झाँझ भी दूंगी, पायल भी दूंगी,
छागल भी दूंगी बजाऊ तुम्हे ।

हार भी दूंगी, माला भी दूंगी,
तिलरी भी दूंगी गुंथाई तुम्हे ।

लँहगा भी दूंगी, चूंदर भी दूंगी,
अँगिया भी दूंगी जडाऊ तुम्हे ।

सैर करन को पीनस दूंगी,
परदा भी दूंगी जडाऊ तुम्हे ।

देवर भी दूंगी, दूल्हा भी दूंगी,
ननदी भी दूंगी बुलाई तुम्हे ।

बन्नी, तुझे अपनी आँखों मे बसा कर रक्खूँगी । कही जाने नहीं दूँगी ।
तुम्हें बेना, टीका और जडाऊ झूमर दूँगी ।
झुमका, कुण्डल और जडाऊ अगूठी भी दूँगी ।
झाँझ दूँगी । पायल दूँगी । बजने वाली छागल भी दूँगी ।
हार दूँगी । माला दूँगी । तिलरी भी गुथवा कर दूँगी ।
लँहगा, चूँदर और जड़ाऊ अँगिया दूँगी ।
सैर करने के लिये पालकी दूँगी । जड़ाऊ परदा भी दूँगी ।
देवर दूँगी । दूल्हा दूँगी और तुम्हारे लिए ननद भी बुला दूँगी ।

पाणिग्रहण

(१७३)

खोलउ पटुक गाँठि जोरि बइठउ, लेउ बहिनि कर दान,
नगर पइठि बहनोइया मँइ खोजेउँ, देन बहिनि कर दान।

कुस, करिना अउ गगा जुड पानी, दोनवा मे करबइ दान,
दुइजि कइ चाँद असि बहिनि हम देबइ, जोडबइ दुइनउँ हाँथ।

भंवरी फिरत मोरा छतिया फाटइ, बहिनि पराई होइ।
जग कइ रितिया निमाहउ मोरि बहिनी, पथरा से छतिया दवाइ।

पाणिग्रहण के समय कन्या का भाई अपने जीजा को सबोधित कर कहता है--"भाई दूल्हे, पटुका खोलो, गाँठ जोडकर बैठो और मेरी बहन का दान स्वीकार करो। बहन का दान देने के लिये मैंने नगर मे प्रविष्ट होकर बहनोई की खोज की।

"कुश, कन्या और गगा जल लेकर मै पत्तल के दोने मे दान करूँगा। दूज के चन्द्रमा जैसी अपनी बहन समर्पित करूँगा और हाथ जोड कर त्रुटियो के लिये क्षमा माँगूँगा।

"भाँवर होते समय मेरा हृदय विदीर्ण होता जा रहा है। आज मेरी बहन पराई हो रही है। बहिन मेरे कुल से अलग होकर दूसरे कुल से अपना सबंध स्थापित कर रही है।"

भाई अपनी बहन से निवेदन करता है—"बहन, अपना हृदय कठोर बना कर ससार की रीति का निर्वाह करो।"

(१७४)

गेंडुवा उठावत भइया हॅथवा न काँपइ, टुटइ न पनिया कइ धार,
दान करत बीरन छतिया न काँपइ, जून धरम कइ लागि।
काँपत झारी तोरि, काँपत गेडुवा, काँपत कुस कइ डोभ,
धार न टूटइ गेडुवा कइ बीरन, देत कुँवारी क दान।
चाँद सुरुज गहन जग पर लागइ, बहिनि गहन अब लाग,
दान करत बहिनी छतिया जे फाटइ, कइसे करउँ तोर दान ?
गुलरी क फुलवा बहिनि मोरि होइहँइँ, लेत आजु मोसे दान,
सोरह बरिस रहिउ हमरे भवन मे, अब छूटत साथ तोहार।

पाणिग्रहण के समय सहेलियाँ कन्या के भाई को सम्बोधित कर गाती हैं—"भाई, जल का पात्र उठाते समय तुम्हारे हाथ काँपने न पाये, जल की धारा टूटने न पाये। बहन का दान करते समय तुम्हारा हृदय विचलित न होने पाये। यह धर्म की बेला है, पुण्य की घडी है।

"तुम्हारी झारी काँप रही है, पात्र काँप रहा है। कुश की डोभ काँप रही

है। भाई, झारी के पानी की धार टूटने न पाये, तुम अपनी बहन का दान दे रहे हो।"

भाई कहता है—"चन्द्र और सूर्य ग्रहण सारे ससार पर लगता है, किन्तु इस समय मडप मे मेरी बहन के ऊपर विवाह का ग्रहण लगा है। बहन, तुम्हारा दान करते समय, मेरा हृदय विदीर्ण होता जा रहा है। मै किस प्रकार तुम्हारा दान करूँ?

"आज से मेरी बहन गूलर का फूल बन जायगी। उसका दर्शन दुर्लभ हो जायगा। बहन मुझसे अपना दान करा रही है।

"बहन, तुम सोलह साल तक मेरे घर मे रही। किन्तु अब तुम मुझसे अलग हो रही हो। अब मुझसे तुम्हारा साथ छूटा जा रहा है।"

(१७५)

कवन गहन दिन दुपहर लागइ, कवन गहन आधी रात,
कवन गहन बेटी मँडये मे लागइ, धन बिनु धिया कर बाप?

सुरुज गहन दिन दुपहर लागइ, चन्द्र गहन आधी राति,
बेटी गहन लागइ माँझ मँडवना, धन बिनु धिया कर बाप।

सुरुज गहन परइ घरी एक पहरिया, चन्द्र गहन दुइ चारि,
धिया गहन लागइ जउनी समय रे, ब्याह बिना नहि जाइ।

धिया क ससुर माँगइ भात भतइला, दुलरु दमाद हासिल घोड,
कचन थार हम पाँउ पखारब, मोरे बूते दिहा नहि जाइ।

"कौन-सा ग्रहण दिन मे दोपहर के समय लगता है? कौन-सा ग्रहण आधी रात के समय लगता है? कौन-सा ग्रहण मडप मे लगता है और बेटी का पिता निर्धन हो जाता है?"

सूर्य-ग्रहण दिन मे दोपहर के समय लगता है। चन्द्र ग्रहण आधी रात के समय लगता है। पिता निर्धन होता है तो मण्डप मे बैठी कन्या को ग्रहण लगता है।

सूर्य-ग्रहण एकाध घडी-पहर के लिये ही लगता है। चन्द्र ग्रहण भी दो चार घडी के लिये ही लगता है। किन्तु जब कन्या-ग्रहण लगता है, तो बिना बेटी का ब्याह हुए उसका उग्रह नही होता।

कन्या का पिता कहता है—"बेटी का ससुर भात माँग रहा है। दामाद हासिल घोडा मॉग रहा है। किन्तु मैं इतना देने मे असमर्थ हूँ। मैं तो केवल सोने की थाली मे अपने दामाद का पैर धोकर उसे अपनी लडकी समर्पित कर दूँगा।"

(१७६)

हरियर बँसवा कइ हरियरि डँडिया, कास-कुस माँडउ छवाउ,
नउवा बोलाइ के अँगना लिपावउ, आजु मोरी बेटी क बियाह।
मँडए के बीचे बइठे बपवा कवन राम, बगले मे माया महरानि,
कोछवा मे बइठी बेटी कवनि देई, चउके मे दुलरू दमाद।
पण्डित बोलाइ के बेद पढावउ, समधी क अँगने लियाउ,
अगिनि पवन कइ साखी देवावउ, करउ बेटी कर दान।
सोने कइ थार, थार भरि पानी, कुस पल्लउ लेउ हॉथ,
ऐपन गदोरिया, तिलक सँवारउ, आजु धरम कइ जून।
नील गगन पर कॉपत सुरुज रे, तरे कॉपत धरती मातु,
बिचवा मे कॉपत थर थर पवन देउ, काँपत सभवा के लोग।
थर थर कॉपत माई कइ कोखिया, कॉपइ बाप कर हॉथ,
थर - थर कॉपइ झारी क पानी, भैया क काँपइ हॉथ।

हरे बॉस की हरी बल्लियाँ ले आओ। कास और कुश का मडप छवाओ। नाई बुला कर ऑगन लिपाओ। ब्राह्मण बुला कर चौक पुराओ। आज मेरी बेटी का विवाह होने जा रहा है।

मडप के बीच मे अमुक पिता बैठा है। बगल मे अमुक मॉ बैठी है। गोद में अमुक बेटी बैठी है। चौके पर दुलारा दामाद बैठा है। आज मेरी बेटी का ब्याह होने जा रहा है।

पुरोहित बुलाकर वेद मन्त्रों का उच्चारण कराओ। समधी को बुलाकर उसे मडप में बिठाओ। अग्नि और पवन को साक्षी देकर कन्या-दान करो।

सोने की थाली मे पानी भरो। हाथ मे जौ की लोई और कुश का पल्लव लो। हथेली में ऐपन लेकर दूल्हे के माथे मे तिलक लगाओ। आज मेरी बेटी का विवाह होने जा रहा है।

ऊपर आकाश में भगवान् सूर्य नारायण काँप रहे हैं। नीचे धरती माता थर-थर काँप रही हैं। बीच में पवन देवता काँप रहे हैं और सारी सभा के लोग भी थर-थर काँप रहे हैं।

माँ की कोख काँप रही है। पिता का हाथ काँप रहा है। कलसे का पानी थर-थर काँप रहा है और क्वाँरी बहिन का दान देते समय भाई का हाथ भी काँप रहा है।

सिन्दूर दान

(१७७)

मचियइ बइठी बेटी कइ माया, सुनउ स्वामी अरज हमारि,
नगर पइठि के सुवर बर खोजउ, बेटी भई है सयानि।
पूरुब खोजेउँ, पच्छिम खोजेउँ, खोजेउँ देस मँइ चारि,
तोहरी बिटियवा के बर नही जोगु रे, अब बेटी रइहइँ कुँवारि।
एतनी बचन जब सुनेनि सितल देई, सुनउ बाबा अरज हमारि,
देस अजोधिया, सरजू के तिरवा, दसरथ राज दुवार,
ओनही के बाटेनि चारि बेटवना, चारिउ बार - कुँवार,
अइसन बर बाबा हमरे जोग रे, काहे न करतेउ बिचार।
हँथवा धनुक, करिहइयाँ मे तरकस, तिलक दिहे चन्द्र भाल,
अइसन बर बाबा हमरे जोग रे, काहे मन करउ उदास ?
एतनी बचन जब सुनेनि जनक जी, लिखि भेजइँ पतिया बिचारि,
हमरी सीतल रानी राम बर जोगु रे, सुनउ समधी अरज हमार।
साजि समाज लइ आवउ बरतिया, हम करबइ कन्या - दान,
पाँच पच तुँहुँ होउ मोरे साच्छी, देत कुँवारी क दान।
मँडए के बीच मे ठाढे है रामचन्द्र, देत सिन्दूर कर दान,
सेधुरा पहिरि सीता भई है पराई, अँखिया चुवइ दूनउँ आँसु।

कन्या की माँ मचिया पर बैठी हुई अपने पति से निवेदन कर रही है—

"स्वामी, मेरी प्रार्थना सुनो! नगर-नगर जाकर बेटी के लिये वर खोजो, वह अब सयानी हो गई है।"

पति कहता है—"मैने पूर्व दिशा की यात्रा की। पश्चिम दिशा मे भी गया। चारों देशो मे मै ढूँढता रहा, किन्तु तुम्हारी बेटी के योग्य कोई वर नही मिला। अब वह क्वाँरी ही रहेगी!"

सीता जी यह बात सुनकर पिता से निवेदन करने लगी—"बाबा, मेरा कहना मानो! सरयू के नदी के किनारे अयोध्या नगर मे राजा दशरथ निवास करते है। उनके चार लडके है। चारो अभी क्वाँरे है। उन्ही का एक पुत्र मेरे योग्य है। तुम इस पर विचार क्यों नहीं करते?"

"जिसके हाथ मे धनुष है। कमर मे तरकस है। माथे पर तिलक है। वही वर मेरे योग्य है। फिर तुम अपने मन मे क्यों उदास हो रहे हो?"

यह बात सुन कर राजा जनक ने महाराज दशरथ को पत्र लिखा—"हे समधी! मेरा निवेदन सुनिये। मेरी सीता तुम्हारे राम जैसे वर के योग्य है।"

राजा जनक घोषणा करते हैं—"हमारे समधी साज-बाज के साथ बारात लेकर आ रहे हैं। मै कन्या-दान करूँगा। नगर के सम्भ्रान्त जन क्वाँरी कन्या के दान के समय हमारे साक्षी बने।"

मडप के बीच मे खडे होकर रामचन्द्र सीता की माँग मे सिन्दूर डाल रहे हैं। सिन्दूर पहन कर सीता पराई हो गई। उनके नेत्रों से आँसुओं की धारा बह रही है।

भाँवर

(१७८)

अगिनि के साखी दइ भाँवरि घूमउँ, बाबा, अब धिया नाहि तोहारि।
पहिली भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत रे, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।
दुसरी भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।
तिसरी भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।

चउथी भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।

पँचईं भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।

छठईं भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।

सतईं भँवरिया के घूमत, बाबा अब मँइ भयउँ पराइ,
बँहिया पकडि बइठावइँ दुलहे राम, धन अब लागउ रनिया हमारि।

दूल्हे के साथ गाँठ जोडकर अग्नि के चारो ओर भाँवर घूमते समय कन्या अपने पिता को सम्बोधित कर कहती है—"बाबा, अब बेटी तुम्हारी नहीं रह जायेगी!"

"बाबा, पहली भाँवर घूमते समय तक अभी मै तुम्हारी ही हूँ।"

सहेलियाँ दूल्हे को सम्बोधित करती हुई गाती हैं—"समधिन के लडके, दूल्हन का अँगूठा मत छुओ, वह तो तुम्हारी पत्नी लगती है।"

इसी प्रकार छठीं भाँवर तक बेटी अपने पिता से कहती रहती है—"बाबा, अभी तक मै तुम्हारी ही हूँ।" सातवी भाँवर पूरी कर लेने पर वह अपने रोम-रोम से रोती हुई कहती है—"बाबा, अब तो मै पराई हो गई, तुमसे हमेशा-हमेशा के लिये अलग हो गई!'

दूल्हा उसकी बाँह पकड कर उसे अपनी बगल मे बिठाता हुआ कहता है—"प्राण, अब तुम मेरी रानी हो गई।"

(१७६)

कइसे क भाँवरि फिरउँ मोरे साजन, माँझ मँडवना बाबुल ठाढ,
नैनन अँसुवा चुवइ मोरे बीरन, माई क जिया कँहराइ।

जमवा क ओट दइ भाँवरि घूमउ, बिरना क देबइ समुझाइ,
सासु के चरन सीस हम धरबइ, बाबुल के लेबइ समुझाइ।

सातउ भँवरिया फिरउँ जब साहेब, दुनउ कुलदवा बोलाइ,
अगिनि क साखी दइ भाँवरि घूमउँ, देखइ सब जग आइ ।

कन्या भॉवर घूमते समय अपनी लज्जा प्रकट करती हुई कहती है—"स्वामी, मै तुम्हारे साथ किस प्रकार भॉवर घूमूॅ ? मडप के बीच मेरे पिता जी खडे हैं । मेरे भाई के नेत्रों से ऑसू गिर रहे हैं । भाई का हृदय विदीर्ण होता जा रहा है ।"

दूल्हा उसे समझाता है—"प्रिये, मेरे जामे की आड मे होकर भॉवर घूमो ! तुम्हारे भाई को मै समझा लूॅगा । सास के चरणो पर अपना सिर रख दूॅगा और ससुर जी को भी राजी कर लूॅगा !"

दूल्हन आगे कहती है—"स्वामी, दोनो कुल के देवताओं को साक्षी देकर मै सातो भॉवर पूरी कर रही हूॅ । अग्नि को साक्षी देकर मै भॉवर घूम रही हूॅ । सब लोग हमे ही देखने के लिये एकत्रित हुए हैं ।"

कोहबर

(१८०)

काँस पितरिया क इहइ नोन कोहबर, सात सोहागिनि उरेहेनि हो,
मानिक धिया कर ब्याह रचाएउँ, बाजन बाजइ घहराइ ।
गग, जमुन, सरसुति धार उरेहेउॅ, चन्द्र, सुरुज धरती खींचेउँ,
तँहवइँ सोवत दुलहे कवन राम, दुलहिनि अँचरा डोलावइँ हो ।
मानिक दियना बरत सारी रतिया, मइया तोहरी जगावइँ हो,
उठउ पूत त्यागउ सुख कइ सेजरिया, भोर भये मुरगा जे बोलइ हो ।
अइसनि मइया के कउन बउराएउ, राति अँधेरिया के भोर बतावइ हो ।

कॉसे और पीतल का यही सुन्दर कोहबर है । सात सुहागिन स्त्रियों ने मिल कर इसे चित्रित किया है । माणिक जैसी उज्ज्वल और रूपवती स्त्री का इस कोहबर मे ब्याह रचाया गया है । बाजे बजते हुए आ रहे हैं ।

इस कोहबर में गगा, यमुना और सरस्वती की धारायें चित्रित की गई हैं । चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी माता को अकित किया गया है । यहॉ अमुक दूल्हा

शयन कर रहा है। दूल्हन अपने आँचल से उसे हवा दे रही है। रात भर कोहबर मे माणिक दीप जलता रहा है।

माँ दूल्हे को जगाती हुई कहती है—"मेरे बेटे, उठो! सुख की सेज का परित्याग करो। मुर्गा बोल रहा है। भोर होने लगी है।"

दूल्हा ऊँघता हुआ जवाब देता है—"मेरी माँ को भला किसने पागल कर दिया? अभी तो अँधेरी रात है, लेकिन वह कहती है कि सुबह हो गई।"

जेवनार

(१८१)

एक सूघरि ग्वालिनि, दधि बेचन जात रही।
ठाढे कन्हइया हुवाँ ठाढे, अँचरा पकरि के रारि करी।
कँहवाँ की तुँहुँ ग्वालिनि, बेचउ कँहवाँ दही रे दही?
मथुरा की मँइ ग्वालिनि, गोकुल बेचउ दही रे दही।
तोरउ पात कदम कर, चाखउ टटकी दही रे दही,
पात लागि गए झाँझा, अँचरन चाखउँ दही रे दही।
अँचरा मोर जूठ, लरिकन लार बही रे बही।
मचियइ बइठी जसोदा, ग्वालिनि ओरहन देन गई,
बरजउ मातु अपने ललन के, गलियन रारि करी रे करी।
ग्वालिनि तोहरे धरम से, घर ही मे नारि नयी रे नयी
ग्वालिनि तोहरे धरम से, घर ही मे दूध दही रे दही।
अइसन ढीठ कन्हइया, मोसे बरजो न जाइ रही रे रही।

एक सुन्दर ग्वालिन दही बेंचने जा रही थी। कृष्ण जी उसी गली मे खडे थे। उसका आँचल पकड कर पूछने लगे—"तुम कहाँ की ग्वालिन हो? कहाँ अपना दही बेंचने जा रही हो?"

उसने उत्तर दिया—"मथुरा की मैं ग्वालिन हूँ और गोकुल मे दही बेंचने जा रही हूँ।"

कृष्ण बोले—"पहले मुझे अपना दही चखा दो !"

"कदम का पत्ता तोड़ लो और उसी में लेकर ताजा दही चख लो !"

कृष्ण ने बहाना किया—"पत्ते में धूल लगी है। मैं तुम्हारे आँचल में ही दही चखना चाहता हूँ।"

"मेरा आँचल जूठा है। उस पर लडकों की लार गिरी है।"

कृष्ण अपनी जिद पर अडे रहे। यशोदा जी मचिया पर बैठी थीं। ग्वालिन उनके पास उलाहना लेकर गई—"माँ, अपने लडके को रोको ! यह मुझसे गलियों में झगडा करता है !"

माँ यशोदा उसे समझाती हुई बोलीं—"ग्वालिन, तुम्हारे धर्म से घर मे ही दूध और दही का भण्डार है। लेकिन क्या करूँ ? कृष्ण बडा नटखट है, मेरा कहना नही मानता।"

(१८२)

राजा जनक एक ब्याह रच्यौ है, जेवन आए चारिउ भाई जी, हाँ जी !
माँझ मँडवना पान पतरिया, ओरियन ओर बिछाई जी, हाँ जी !

साठी कर चाउर नागर कइ मूँग रे, बकसर से घियना मँगाई जी, हाँ जी !
सोठ सोठानी, परवर भाजी, ऊपर से घियना सुबासी जी, हाँ जी !

झुकि-झुकि परसत राजा जनक जी, समधी के देत है गारी जी, हाँ जी।
गेडुवन पनिया परोसइँ सब नारी, बिछुवन की झनकारी जी, हाँ जी !

पाँति-पाँति सब बइठे बराती, अँगन बीच समधी कइ थारी जी, हाँ जी !
हँसि हँसि पूँछइँ मातु जानकी की, काहे न लाल भात जुठारी जी, हाँ जी !

आजु क भात, भात नहि सासु, मान भरी मोरि थारी जी, हाँ जी !
लेउ न लालन अभरन सोनवाँ, रतन जडाऊ फुलवारी जी, हाँ जी !

सात सोहागिनि पूछइँ दुलहे राम, काहे नजर कियो नीची जी, हाँ जी !
की तोहरी बहिनी हमरी नगरिया, की मातु तोहरी भागी जी, हाँ जी !

तिरछे नयन बोलइँ राजा रामचन्द्र, हमरी-तुम्हरी कस गारी जी, हाँ जी !
यहि गारी की माख न मानउ, निति रे भोजन, निति गारी जी, हाँ जी,

सब सरहज है चन्द्र गोन्हइया, सार बडे अभिमानी जी, हाँ जी ।
ससुरु तुमारे पूरे है तपसी, सासु गगा जुड पानी जी, हाँ जी ।
पनवन बीरा लेत राम जी, अँगुरी धरत सब नारी जी, हाँ जी ।
नैनन बिहँसत चारिउ भइया, तुँहु सब लागउ हमरी नारी जी, हाँ जी।

राजा जनक ने एक ब्याह रचाया है। भगवान् राम चारों भाइयों के साथ भोजन करने आये है। मडप में छज्जों के नीचे-नीचे पान की पतरियाँ बिछाई गई हैं। साठी का चावल, नागर की मूँग और बक्सर का घी मँगाया गया है। सोंधी-सोंधी परवल की भाजी बनी है। उसे घी से सुवासित किया गया है। राजा जनक झुक-झुककर परस रहे हैं और समधी को गालियाँ दे रहे हैं। स्त्रियाँ कलसो से पानी परस रही है। उनके नूपुरो की मन्द-मधुर ध्वनि निनादित हो रही है। पक्तियो मे बराती बैठे है। आँगन मे समधी की थाली है।

जानकी की माता हँस-हँस कर राम से पूछ रही हैं—"बेटा, भात का कौर क्यों नहीं उठा रहे हो ?"

"सास जी, आज का भात साधारण ढग का नही है। आपको मेरे भोजन का पुरस्कार देना पडेगा।"

"बेटा, सोने के आभरण लो, रत्न जटित फुलवारी लो और भोजन आरम्भ करो।"

सात सुहागिने पूछ रही हैं—"दूल्हे जी, तुम्हारी निगाह नीची क्यों है ? क्या तुम्हारी बहन मेरी नगरी मे चली आई है, अथवा तुम्हारी माता जी कही भाग गई हैं ?"

तिरछी निगाहो से राम बोले—"भला मेरा और तुम्हारा मजाक कैसा ?"

स्त्रियाँ बोली—"इन गालियो को बुरा मत मानो। यहाँ तुम हमेशा भोजन करोगे और हमेशा गालियाँ सुनोगे।

"तुम्हारी सभी सरहजे चन्द्रमा की चाँदनी के समान हैं। साले बहुत अभिमानी हैं। तुम्हारे ससुर जी तो पूरे तपस्वी हैं और सास गगा जल की भाँति निर्मल और शीतल है।"

भोजन के पश्चात् श्रीराम पान का बीडा लेने लगे तो सभी स्त्रियाँ उनकी उँगली पकडने लगी। चारो भाई आँखों मे हँसते हुए कहने लगे—"तुम सब हमारी पत्नियाँ लगती हो!"

(१८३)

शिव शकर चले ससुरारी जी, भोले बाबा चले ससुरारी जी।
जाइ के पहुँचे हिमाचल नगरी, सासु उतारै आरती जी।
मेवा मिठाई मनही न भावै, भोले बाबा माँगत धतूरा जी।
छप्पन भोजन परसत सखियाँ, गेड़ुवन घियना उडेरी जी।
हँसि-हँसि पूँछत गगा रे जमुना, काहे चले ससुरारी जी ?
की मइया तुमरी घर मोरे आयी, खोरियन बहिनि सिधारी जी ।

भगवान् शकर ससुराल चले। भोले बाबा ससुराल चले।

वे हिमाचल नगरी मे पहुँचे। सास उनकी आरती उतारने लगीं।

मेवा और मिठाई उन्हे अच्छा नही लगता। वे धतूरा माँगते हैं।

सखियाँ उन्हे छप्पनों प्रकार का भोजन परस रही हैं। कलसो मे घी परसा जा रहा है।

गगा और यमुना हस-हँस कर पूछ रही हैं—"तुम क्यों ससुराल जा रहे हो ? क्या तुम्हारी माँ मेरे घर मे आई हैं अथवा तुम्हारी बहन गलियों में घूम रही है ?"

(१८४)

कचन पात की पतरी सजाई, लौगन डोभ डुभाई जी,
जेवन बइठे है क्रिस्न कन्हाई, सग लिए बलदाऊ जी।
छप्पन भाँति कर भोजन परसा, भाँति-भाँति की तरकारी जी।
झाँझर गेड़ुवा गगा जुड पानी, भरि-भरि देत है साली जी।
थारिन हाँथ न देउ रे नटवर, काहे करत अनखानी जी ।
आजु क भोजन खिचडी माँगउँ, काहे न देत हो नारी जी ।
खिचडी खात ननद नेग माँगत, नारि चलेगी सग लागी जी ।

स्वर्ण-पात्रों की पत्तले बनी है। उनमे लौगों की डोभ लगी है।

बलदाऊ को साथ लेकर कृष्ण जी भोजन करने बैठे हैं। छप्पनों प्रकार

का भोजन और भाँति-भाँति की तरकारियाँ परसी गई हैं। सालियाँ झीने कलसों में भर-भर कर गगा जल दे रही हैं।

सखियाँ कृष्ण से परिहास करती हुई कहती हैं—"नटवर कृष्ण, थाली में हाँथ मत लगाओ! तुम इतना गुमान क्यों कर रहे हो?"

कृष्ण कहते हैं—"आज मुझे खाने के लिये खिचडी मिलनी चाहिये। नायिकाओं, तुम मुझे खिचडी क्यों नहीं दे रही हो?"

सखियाँ उत्तर देती हैं—"खिचडी खाते समय ननद तुमसे नेग माँगेगी और यहाँ की सभी स्त्रियाँ तुम्हारे साथ डोलियों पर चलने के लिये तैयार हो जायेंगी!"

(१८५)

षटरस भोजन न खाउँ सखी, मै तो खिचडी खाने आया यहाँ।
हँसि-हँसि पूँछे रुकुमिनि की मइया, खिचडी का नेग क्या लोगे लला?

एक लाख घोडा, सवा लाख हाथी, नाजो का डोला सजाय माँगूँ।
हँसि - हँसि पूँछे साली, सरहज, खिचडी का नेग क्या लोगे लला?

चन्द्र, सुरुज ऐसी सरहज माँगूँ, साले का रथ मै जुताय माँगूँ।
इतनी माँग न तुम माँगो मोहन, सासु की धेरिया उठाय भागो।

कृष्ण जी अपनी ससुराल मे खिचडी के समय कहते है—"सखियो, मै षट्-रस भोजन नही करूँगा। मै तो यहाँ खिचड़ी खाने आया हूँ!"

रुक्मिणी की माँ हँसती हुई पूछती हैं—'बेटा, खिचड़ी खाने का क्या नेग लोगे?"

"एक लाख घोड़ा, सवा लाख हाथी और साथ मे दूल्हन का डोला लूँगा!"

सालियाँ हँसती हुई पूछती है—'लाला, खिचड़ी खाने का क्या नेग लोगे?"

"मै चन्द्रमा और सूर्य जैसी रूपवती साली और साले का रथ लूँगा!"

सालियाँ कहती है—"मोहन, तुम इतनी वस्तुये माँग रहे हो, किन्तु यह सब नही पाओगे। चुपचाप अपनी सास की लड़की को लेकर भाग जाओ!"

बेटी की बिदाई

कइसे क डँडिया चढउँ मोरे बीरन, माई क कोछवा छुटत दुख लागइ,
सोरह बरिस रहेउँ तोहरे भवन मे, माई कइ गोदिया सयन नहि छोडेउँ,

खोरवन दूध पियाएनि मोरे बाबुल, पटुका से निति मुख मोर पोछिनि।
छोटी से बडी भएउँ, घुटुरुवन चलन लागेउँ, मोतियन अग सजै मोरे बीरन।

माई के रोए से छतिया फटत है, बपई के रोए से ओरी चुवत है।

"मेरे भाई, मै किस प्रकार पालकी मे बैठूँ? माँ की गोद छोडते समय मुझे बहुत दुःख हो रहा है। सोलह वर्षों तक मै तुम्हारे घर मे रही। स्वप्न मे भी माँ की गोद नही छूटने पाई।

"मेरे बापू मुझे कटोरे मे भर कर दूध पिलाया करते थे। अपने अगौछे से मेरा मुँह पोछा करते थे। छोटी से मै बडी हुई और घुटनो के बल चलने लगी। अब मोतियो से मेरा शरीर सुसज्जित होगा।

"माँ रोती है तो उसकी छाती फटी जाती है। बापू के रोने से उनके नेत्रों से आँसू बह रहे है वैसे ही, जैसे ओरी से पानी चूता रहता है।"

(१८७)

आजु नगर भयो सून, धिया चली पिय की नगरिया।

दादी हमारी ऐसी पालै, जैसे घी की गगरिया।
बाबा हमारे ऐसे निकालै, जैसे जल की मछरिया।

अम्मा हमारी ऐसी पालै, जैसे खेलन की गुजरिया,
भइया हमारे ऐसे निकालै, जैसे जल की मछरिया।

आज माँ की नगरी सूनी हो रही है। बेटी अपने प्रीतम की नगरी मे जा रही है।

दादी ने घी से भरे हुए घडे की भाति मेरा पालन किया। बाबा पानी ‹
मछली की तरह मुझे बाहर निकाल दे रहे है।"

माँ ने खिलौने की नायिका की भाति मेरा पालन किया। भइया जल व
मछली की भाति मुझे अलग कर दे रहे है।

(१८८)

खोलउ पटुक, गाँठि मोरि जोरउ, अब धिया भई है पराई रे।
कइके सिगरवा सजन सँग चलीहै, बाबुल खडे हाँथ जोरे रे।
बिनती करत बाबुल समधी के आगे, सुनउ न बिनती हमारी रे।
आपनि धेरिया तोहइँ मँइ दीन्हेउँ, किहेउ भली बिधि प्रतिपाल रे।
हाँथ जोरि के बिरन भइया ठाढे, सुनउ जीजा अरज हमारी रे,
आपनि बहिनियाँ तोहइँ मँइ दीन्हेउ, किहेउ भली बिधि प्रतिपाल रे।
माई के रोये अँचर भरि भीजइ, बाबुल के रोए चउपाल रे,
भइया के रोए पटुकवा भीजइ, सखियाँ रोवइँ सब ठाढ रे।

आँचल खोल कर गाँठ जोडो। बेटी अब पराई बन गयी है।

बेटी शृङ्गार करके अपने स्वामी के साथ जा रही है। बापू हाथ बाँधे हुए खडे हैं। वे अपने जामाता से निवेदन कर रहे हैं—"बेटा, मैंने तुम्हें अपनी कन्या समर्पित की है। इसका अच्छी तरह पालन करना।"

हाँथ जोड कर भाई खडा है। अपने जीजा से विनय कर रहा है—"जीजा, मैंने तुम्हारे हाथ मे अपनी बहन सौंपी है। मेरी बहन का अच्छी तरह पालन करना।"

माँ के रोने से आँचल भीग रहा है। बापू के रोने से चौपाल भीग रहा है। भाई के रोने से उसका अँगौछा भींग रहा है। बाहर सभी सखियाँ खडी होकर रो रही हैं।

(१८९)

बारह बरिस कइ बेटी हमारी रे, अबही अलभ सुकुवारि,
बजन बजाइ सजन मोरे आये, लइ गए धेरिया हमारि।

साजेउँ मँइ अँचहँड, साजेउँ मँइ पँचहँड, साजेउँ मँइ धन भण्डार,
बारह बरिस कइ करिना साजेउँ, लइ गए बजना बजाइ।
सूनि भई माया कइ झाँझरि कोखिया, सून भये अँगना - दुवार,
हाँथ जोरि बाबा अरज करत है, राखेउ साजन लाज हमारि।
हाँथ जोरि भइया बिनती करत है, राखेउ जीजा मोरि मरजाद।
हँसि - हँसि बोलइँ समधी कवन राम, सुनउ न बिनती हमारि,
तोहरी धेरिया के अस मँइ रखबेउँ, जस बेलहरि कर पान।

बारह साल की मेरी बेटी है। वह अत्यन्त कोमल और सुकुमारी है। दामाद बाजे बजवाता हुआ आया और मेरी बेटी को अपने साथ ले गया।

मैंने भाति भाति की सामग्री सज्जित की। धन और भण्डार इकट्ठा किया। बारह साल की अपनी कन्या को सान-सँवार कर तैयार किया। जामाता बाजे बजा कर उसे उठा ले गया।

माँ की झीनी कोख रिक्त हो गई। आँगन और द्वार सूने हो गए। बापू हाथ जोड कर निवेदन कर रहे हैं—"बेटा, मेरी लाज तुम्हारे ही हाथ मे है। उसकी रक्षा करना, भली-भाति उसका निर्वाह करना!"

हाथ जोड कर भाई निवेदन कर रहा है—"जीजा, मेरी मर्यादा की रक्षा करना!"

अमुक समधी आश्वासन दे रहा है—"समधी भाई, मेरी प्रार्थना सुनो! तुम्हारी पुत्री का बेलहरी के पान की भाति मै पालन-पोषण करूँगा!"

(१६०)

कँहवाँ कऽ हस कहाँ उडि जाइ रे, कँहवाँ कइ धेरिया कहाँ चलि जाइ रे?
पुरूबू कऽ हसा पछिउँ उडि जाइ रे, नइहर कइ धेरिया सजन घर जाइ रे।

केके बरे करउँ पूरी - पकवान रे, के के बरे जोरउँ बेलहरी क पान रे?
सजना बरे करउँ पूरी - पकवान रे, दुलहे के जोरउँ बेलहरी क पान रे।

उठउ बेटी, उठउ बेटी, करउ सिगार रे, तोहरा चलावा बडे भिनुसार रे,
खाइ लेउ खाइ बेटी, आजु दूध-भात रे, आजु से कलेवना दुलभ होइ जाइ रे।

भइया मोर खइहइँ दुधवा अउ भात रे, हमरा कलेवना दिहिउ बिसराइ
पालि-पोखि बेटी किहेउँ सयानि रे, चलत की बेरिया दिहिउ समुझाइ रे
लइ जाइउ बेटी दउरी, चँगेरी रे, जातइ दिहिउ गुनवा पसारि
जतिया के बेटी नीच चमार रे, उनहूँ से बोलिउ मथवा नवाइ रे

कहाँ का हस कहाँ उड जाता है ? कहाँ की कन्या कहाँ बस जाती है ?

पूरब का हस पश्चिम चला जाता है। नैहर की कन्या अपने स्वामी के घर चली जाती है।

किसके लिये मै मिठाई और पकवान तैयार करूँ ? किसके लिए मै बेलहरी का पान साजूँ ?

समधी के लिए मै मिठाई और पकवान तैयार करूँगी। दूल्हे के लिए बेलहरी का पान साजूँगी !

माँ अपनी पुत्री से कह रही है—"मेरी बेटी, उठो ! अपना साज-सिगार करो। बडे भोर मे ही तुम्हे चला जाना होगा ! दूध, भात और रोटी खा लो। आज से मेरे घर का कलेवा तुम्हारे लिये दुर्लभ हो जायगा !"

पुत्री कहती है—"माँ, मेरा भाई दूध-भात खायेगा। मेरा कलेवा तुम भुला दिया करना।"

"बेटी, मैने पाल-पोस कर तुम्हे सज्ञान किया। चलते समय तुमने मुझे सभी बातो का बोध करा दिया ! तुम दौरी और चँगेरी लेकर जाना और ससुराल मे पहुँचते ही अपने सारे गुण फैला देना। जो जाति के निम्न चमार हो, उनसे भी सिर झुका कर बाते करना !"

(१६१)

लागे है मास अगहनवाँ मोरी बेटी, आयो है सुदिन तोहार,
सुदिन देखत बेटी मन पछितायी, छुटि जइहै नइहर हमार।
एतना जिनि पछिताउ मोरी बेटी, तोहइँ आनब होत भिनुसार,
भइया तोहरे बोलावन जइहइँ, लइ अइहइँ डोलिया फँदाइ।
भइया-बहिनि दूनउ एकइ कोखी जनमेउ, एकइ सँग पिएउँ दूध,
भइया के लिखेउ बाबा लालि चउपरिया, बेटी के लिखेउ बनबास।

एतना बिरोग जिनि मानउ बेटी, समधी सजन अइहैं द्वार,
साजि - तूलि बेटी करबइ बिदाई, लइ जइहैं बजना बजाइ,
जइसे बाग की कोइलिया रे माया, ओइसे दिहिउ उडाइ,
जइसे सरिया कइ गइया रे माया, ओइसे दिहिउ लहराइ।
माया के रोए अँगन मोर भीजइ, बाबा के रोए चौपाल,
भइया के रोए पटुकवा भीजइ, सून भये अँगना - दुवार।
हाँथ जोरि समधी अरज करतु हैं, सुनउ बचनिया हमारि,
बेटा बियहि के घर लइ आएउ, भरि जइहैं अँगना - दुवार।

माँ अपनी पुत्री से कह रही है—"बेटी, अगहन का महीना लग गया। तुम्हारा सुदिन आ गया है।"

सुदिन देखते ही बेटी अपने मन मे पश्चाताप करने लगी—"मेरे बाबुल का देश अब मुझसे छूट जायगा।"

माँ उसे आश्वासन देती है—"बेटी, इतना पश्चाताप मत करो। मै सुबह ही तुम्हे बुला लूँगी। तुम्हारा भाई तुम्हे लेने जायगा और पालकी सजा कर तुम्हें विदा करा लायेगा।"

बेटी माँ से उलाहना करती है—"माँ, हम भाई और बहन दोनो एक ही कोख से उत्पन्न हुए। एक ही छाती का हम दोनों ने दूध पिया, किन्तु भाई को तो तुमने लाल चौपाल दी और मुझे बनवास दे रही हो।"

माँ समझाती है—"बेटी, इतना दुःख मत करो! दामाद दरवाजे पर आयेगा। साज-सँवार कर मैं तुम्हे बिदा कर दूँगी। वह बाजे बजा कर तुम्हे अपने साथ ले जायगा।"

बेटी शिकायत करती है—"माँ, बाग की कोयल की तरह तुमने मुझे उडा दिया। गौशाले के गाय की भाति मुझे बाहर निकाल दिया।"

"माँ के रोने से मेरा आँगन भीग रहा है। बाबा के रोने से चौपाल भींग रही है। भाई के रोने से अगौछा भीग रहा है। आँगन और द्वार सूने हो गये।"

हाँथ जोड कर दूल्हे का पिता निवेदन कर रहा है—"समधी, मेरी बात सुनो! अपने बेटे का ब्याह कर तुम भी नई दूल्हन घर मे लाना। आँगन और द्वार फिर से भर जायेंगे।"

महरानी का गीत

(कन्या की बिदाई के बाद)

मै पाँव पियादन आइयूं रे, माता के मन्दिरवा ।
मै चँवरी डुलाऊँ दिन-रैन रे, माता के मन्दिरवा ।।

हाँथ जोड माता अरज करत हौ
पूरन कियो मोरी काज रे, माता के मन्दिरवा ।

फूल-पान देबी कछु नहि लाई हो,
अँसुवन पखारौ पाँव हो, देबी के मन्दिरवा ।

धिया के ब्याहि माई, उरगिन भई हौ,
लेई सातो बहिनी क नाम हो, देबी के मन्दिरवा ।

धान पान देबी तुमका चढौउबे,
हृदय मे सुमिरन तुम्हार हो, देबी के मन्दिरवा ।

मइया के द्वारे अति भीढ भई है,
गावत पँचरा तुम्हार हो, देबी के मन्दिरवा ।

गितिया सुनत मइया मगन भई है
बाजत घटा - घडियाल हो, देबी के मन्दिरवा ।

चनन काठ के बने है हिडोलना,
रेशम के है बदनवार हो, देबी के मन्दिरवा ।

जो जस गावे मइया सो फल पावे,
भर-मुख पायो आशिर्वाद हो, देबी के मन्दिरवा ।।

जग - जननी माता को नही जानत,
सबही के धिया जुडायँ हो, देबी के मन्दिरवा ।।

मै नगे पॉव मॉ का दर्शन करने के लिये आयी हूँ ।
माता के मन्दिर मे मै रात दिन चॅवर डोलाती हूँ ।
माता, मै हाथ जोड़कर तुमसे प्रार्थना कर रही हूँ, तुम मेरी कामना, मेरा मनोरथ अवश्य पूरा करना ।

माँ, मै गरीब हूँ। तुम्हारे लिये पान-फूल भी नहीं लाई हूँ। मेरी आँखों के आँसू ही तुम्हारे चरणो को पखार रहे है।

मै बेटी का ब्याह करके उऋण हुई हूँ। माँ, मैंने तुम सातों का नाम लेकर ही कन्यादान किया है।

माँ, मै तुमको पान-पान चढाऊँगी और हृदय मे तुम्हे स्मरण करूँगी।

माँ के द्वार पर बहुत बडी भीड लगी है। सभी तुम्हारा गीत गा रहे हैं।

गीत सुन करके माँ प्रसन्न हो गयी हैं। चारो ओर घण्टा घडियाल का स्वर गूँज रहा है।

माँ का हिडोला चन्दन के काठ का बना है और उसमे रेशम का बन्दनवार लगा है।

जो भी माँ का यश गाता है, वही फल पाता है। मुझे तो भर-मुँह आशीर्वाद मिला है।

जगत-जननी माँ को कौन नही जानता ?

माँ, आशीर्वाद दो कि सब की बेटियाँ सदा-सर्वदा सुखी रहे।

(१९३)

खोलो केवडिया, दरस देओ माई,
मै तो ठाढी दुअरिया।
सिह चढी देवी, आँगन ठाढी
पूरन कियो मोरा काज।
मै तो ठाढि दुअरिया।
लाल घँघरिया माई, लाल ओढनियाँ,
लाल फूलन का हार।
मै तो ठाढी दुअरिया।
अँबवा की टेरी माता, दही की दहेडिया,
हाथन लिये जलधार।
मै तो ठाढी दुअरिया।
पान - फूल माई, डाली सजी है,
लऊँगिया से दिह्यो मै बास।
देबी के सेजरिया।

गंगा - जमुना माई, सुरसति पूज्यों
पूज्यो अलोपिन का, द्वार ।
मैं तो ठाढी दुअरिया ।

तुम्हरे भरोसे माई, कन्या बियाह्यो
मनसा फलित भई आज ।
मै तो ठाढि दुअरिया ।

गहबर पियरी माता, गहबर चुँदरी
गर्भा - भरी तूने मॉग ।
धिया गयी ससुररिया ।

दूध - पूत धिया सब रे दिह्यो माई
बस बढे दिनरात ।
मै तो ठाढी दुअरिया ।

मॉ, आशीर्वाद दो कि सबकी बेटियॉ सदा-सर्वदा सुखी रहे ।

मॉ, द्वार खोलो, मुझे दर्शन दो । मै तुम्हारे दरवाजे पर खडी हूँ ।

सिंहवाहिनी मॉ (मेरी पुकार सुनते ही) आँगन मे आकर खडी हो गयी । उन्होंने मेरा मनोरथ पूरा कर दिया ।

मॉ लाल घाँघरा और लाल ओढनी पहिने हुए हैं । मॉ के गले मे लाल फूलों का हार पडा हुआ है ।

आम की टहनी और दही की दहेडी और हॉथ मे जलधार लिये मै खडी हूँ ।

मॉ की डाली पान-फूल आदि से सजी है और लौंग की सुगन्ध से मॉ की सेज बसी हुई है ।

मॉ, मैने गगा, जमुना, सरस्वती सब की पूजा की है । मैने अलोपी देवी के द्वार पर जाकर माथा टेका है ।

मॉ, मैने तुम्हारे ही भरोसे बेटी का ब्याह किया है । आज मेरी मनो-कामना पूरी हुई है ।

मॉ, मेरी बेटी गाढे रग की पियरी और गाढे रग की चुनरी पहिन कर, मॉग मे सिन्दूर भर कर ससुराल गयी है ।

मॉ, तुम मेरी बेटी को दूध-पूत सब देना । मॉ, तुम आशीर्वाद देना कि दिन रात उसका वश बडे ।

गीतो की प्रथम पक्ति

पक्ति	पृष्ठ
तुम मेरी मनमोहनि अबला	१७
जगतारनि माँ, कुल तारनि माँ	१८
महरानी वरदानी कि जै जै विन्ध्याचल रानी	२०
बाँका तुम्हारा नाम हो, बाँकी मोरी अबला	२१
मै कौने बहाने जाऊँ, मइया तोरे दरसन को	२३
नीमिया की डाली मइया पडा है हिडोलवा	२४
आज् मोरी आनन्दी-आनन्द करो	२६
लटकि रहे फुन्दना भवन मे	२७
माता जी को ध्यान मोरे मन	२८
लौगइ लौग बसी मोरी अबला	२९
जगदम्बे भवानी सरन भवन	३०
आयी हूँ सरन तिहारी रे	३०
जय जयन्ति देवी महारानी	३१
अवतार लिया माया ने, भोला चरण मे	३२
मै चौरी डोलावऊँ दिन रात, मैया तोर बलका भवन मे	३३
मइया मोरी कैसी बनी भोली-भाली	३४
मेरे अलबेले नाहा	३५

पंक्ति	पृष्ठ
बाँसे करिल होइके निकरी है गोरी	३७
फुलझरिया मन लागे	४०
ललना गनेश जी की, सरन मनाइये	४४
पहला मास रुकुमिन, कुँवर सच पायो	४६
काहे की पलग, काहे का लगे पावा	४९
खट्टा न भावे मिट्ठा न भावे	५२
ननद पूँछइ ठाढि आँगन मे	५३
डगरा बहारत एक मोती जो पाया	५५
अब गढले नगर का सोनार	५९
कौन मास फूली करैली, कौने मास बहुआ गरभ से	६३
लागत मास असाढ पिडुलिया मोरि काँपइ हो	६६
अँगने मे तुलसा लगायेऊँ माँगन एक माँगेऊँ	६८
जौ मै जनतिऊँ तहिया की बहुआ गरभ से	६९
चलो न सखिया सहेली जमुना जल भर लाई	७०
चन्दना काटौ मै पलँगा बिनायेऊँ	७१
जनमउ न जनमउ होरिलवा मोरे दुखिया घर	७३
नन्द महल आज बहुत अनन्द	७३
गोकुल बाजत बधइया तो नद घर सोहर हो	७४
केकरि ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो	७६
भँगिया के अमली महादेव भँगिया-भँगिया करै	७७
बन बीच बैठी मोरि सीता, चुवत ढुरहुर आँसू रे	७८
नदिया तउ गहबरि भरि गयी सीता के रोये से हो	७९
सरिया खेलन्ते कवन रामा, रानी के कवन रामा	८०
शिव चले झारिखण्ड तो आगे मधुबन	८७
पीपरि मै ना पिऊँ कड़ुवी लगे	८९
ऊँचे नगर पुरपाटन, आले बाँस छाजनि हो	९०
केकरि ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो	९२

पंक्ति	पृष्ठ
मोरी छठिया कइ राति के रे बसै	९४
बीरन के घर लाला भये मनरजना के लाल	९५
फूलवा तो फूले फुलवरिया, मन मोरे बसि गये हो	९७
बीरन के घर लाला भये हे	१०५
पालना ले लो मोल जच्चा रानी	१०७
झुला दो भाई श्याम ललन पालना	१०८
झुनझुना गढि लाई मनिहारिन	१०९
राज घरे ननद लाई रे बधइया	१०९
आजु मोरे लीपन-पोतन ललन अन्नप्रासन	१११
पनवा बिरौना एक सुन्दर, देखत सुहावन हो	११२
जियरा खोलिके माँगउ ननदी	११४
पनवँइ अस गोरी पातरि, कुसुम रग सुन्दरि	११६
चन्दा तउ लागइ मोर भइया, बदरिया मोरि बहिनी रे	११७
जउ मइँ जनतेउ ए दइया	११९
ननदिया न आवै मेरे अँगना, हमारे घर लाला हुए	११९
ननद मोरी आय गई सोनचिरइया	१२१
चाहे गुस्सा करो ननद न बोलउबै	१२२
नदिया के घाटे एक तिरिया केवटा-केवटा करइ	१२३
सुगना तउ बोलइ पिजरवा, काग अटरिया बोलइ हो	१२४
सोवत रहलेऊँ अँटरिया, सपन एक देखेऊँ हो	१२५
आरे निदरिया तू प्यारी निदरिया	१२६
झरवइया बुलाउ, अरे बैदा बुलाऊँ	१२७
आजा री निदिया निद्राबन से	१२७
मोरा मुन्ना, मोरा मुन्नी का करऽले	१२८
सभवा मे बइठे कवना रामा, धनिया अरज करइ	१२९
अँगने मे ठाढै है कवन रामा, झलरी-झलरी करै हो	१३१
छोटइ पेड कदम कर, पतवन झापस	१३२
मै पानी भरुँ हलकोरि, रेशम की डोरियाँ	१३४

पंक्ति पृष्ठ

जौ पूत रहि है बार और गभुवार १३५
सरग भवन्तुलि चिरई, सब गुन आगरि १३६
ऐपन कर अस लेड़ुवा, ननदिया के पठयऊँ १३७
सोने के खडउवाँ बिरन भइया चुटुर-चुटुर चलइँ हो १३८
झबरे-झबरे बाल होरिलवा के १३९
माया बहिनि मोरि कतहूँ देखिउ १४०
अरे अरे नउवा बढइते, आँगन मोर आवउ १४०
झालरि आम अमिलिया, झलरिया जवा कर खेत १४१
अरे अरे दादी सेतुआ करउ, चाची गठरी करउ १४२
माघइ बरुआ सेइ चले, बइसाख पहुँचे १४३
तीरेनि तीरे बरुआ फिरइ, केउ पार लगावउ हो १४४
ऊच ओसार नवल वर, जहाँ खम्भ खोदावल हो १४५
जेहि बन सिकिया न डोलइ, बघवा न गरजइ हो १४५
कुइया जगत पर मुँजिया क थनवा १४६
जेठ तपइ दुपहरिया १४६
अरे अरे आजी सेतुआ करउ १४७
सभवइ से आये है दसरथ, रनियाँ अरज करैं हो १४७
गलियइ गलिया फिरइ भवानी खोरिया-खोरिया पूछइँ बात १४९
गावउँ माता रे गावउँ भवानी १४९
चारि चउक मँइ देखेऊँ, चारिउ सोहावनि १५०
सभवइ बइठे राजा दसरथ, सीता अरज करइँ हो १५०
पहिली चउक के अवसर, पियरिया नहि भेजइँ १५१
के मोरे नेवतइ अरिगन, राज दुवरिया रे १५२
अरे अरे कारी कोइलिया, आँगन मोरे आवउ १५४
सोने क फरुहा रुपे क बेट लाग रे १५६
लीपि लेउ चौपरिया दुल्हन देयी १५७
आधे तलवना मे नाग बइठे, आधे मे नागिनि बइठी १५७

पङ्क्ति	पृष्ठ
सिल चटकत है, सिल मटकत है	१५९
कवन राम सगरा खोदावइ घाट बन्हावइ	१६०
तोरी चुटकी कटावै नउनिया रे	१६१
राम दुआरे एक हरियर पीपर	१६२
पतिया लिखि एक भेजइ जनक जी	१६२
मचियहि बैठी है रानी कौसिल्या देई	१६३
ऊँची बखरिया कइ ऊँची अटरिया	१६४
बरिया की बेरि तोहि बरजऊ दुलहे राम	१६५
धनुष उठाइ अरे लीपत मीतल दई	१६६
बरहइ बरिस के है हमरे राम जी	१६७
चारिउ भइया घोडवा कुदावइ	१६८
एक कियरिया मे वनुका-मड़ुवा	१६८
नगर अजोधिया कइ साँकरि गलिया	१६९
बहरे से आये है राम जी, मुनुन-मुनुन करइ	१७०
घोडी तो एक अलबेली रे बन्ने	१७१
ठुमुकि घोडी नाचै हो महराजा	१७३
आँगन मे नाचै घोडी हमारी	१७३
घोडी मोरी नाचै जमुनिया बाग	१७४
लाल लाल घोडी आई है	१७५
घोडी मेरी लाल भरी	१७६
अलबेली घोडी जनकपुर ठाढि	१७७
घोडिया का चढने वाला बन्ना जुग-जुग जिये	१७८
बनो के बीच घूमै घोडिया रे	१७९
बन्ने प्यारे की घोडिया उदास खडी	१८०
बन्ने पर जदुवा न कोइ डालो	१८१
बन्ना बन्ना मत करो सासु	१८२
सखी कैसे सजे है आज हरी बन्ना	१८३

पक्ति	पृष्ठ
कौने बन ऊगे हो मौरी के गोफवा	१८४
आज मेरे लालन बन्ना बनेगे	१८५
बन्ना मै तो नाम सुनकर आई	१८६
मेरा छोटा-सा बन्ना बन्नी को लेने जाय रे	१८६
घबडाना मत बन्ने, शरमाना मत बन्ने	१८७
बन्ने पर नजर न कोई डागे	१८९
मलिया बुलाओ, मलिया बुलाओ	१८९
मोरे दुधवा का लालन मोल करो	१९१
तूँ तउ चलेउ पूता सीता बियाहन	१९२
अनमोल है दुधवा रस मे भरे	१९३
अचरा ओढावत माया कवनि देइ	१९३
काहे के मोर बाबा पुतरी उरेहेउ	१९४
एक ओर गगा, दुसर ओरि जमुना	१९५
ऊँची बखरिया राजा जनक की	१९६
अँगना मे ठाढि है माया कवनि देई	१९७
जबर बरतिया दुवरवइ आयी	१९८
डगरा चलत एक राही पुकारइ	१९९
माया जे दीहेनि सोने क घइलवा	२००
मोरे पिछवरवा लवगिया क पेडवा	२०१
चुटकी भरि सेन्हुरा के कारन बाबा	२०२
ऐपन निगुरी लाइ बेटी सीतल देई	२०४
अरी मोतियन माँग सँवारिये	२०५
सखी सैया पै जोग चलाऊँ मै	२०६
जोग न जानइ, जुगुतिया न जानइ	२०७
जोग जुगतिया न जानेऊ	२०८
जोग न जानेऊँ, जुगुति नहि जानेऊ	२१०
काबुल का टोना मोरी बारी बुआ जाने	२११

पक्ति	पृष्ठ
हमारे हाँथ अनगिन टोना	२११
अरी मैया तेलिया बेटवना बोलाइये	२१२
ऊँची महलिया सोना धोबिनिया	२१३
कवन सगुन लइ आइउ धोबिन रानी	२१४
कौने बन ऊगे सोहाग क बिरवा	२१५
हँथवा जोरि के पइया मइँ लागउँ	२१५
घुमडत आवे सोहाग मोरे अँगने	२१६
बग्गो दइया सुहाग की बगिया	२१८
मँडए के बिच होइ ठाढी है माया देई	२१८
बाजत आवइ करइली क बाजा	२१९
पछिउ देस से आयी बरतिया	२२०
खोरिया बटोरउ कवन राम	२२२
गोबर गोठि के चउक पुरावउ	२२३
आज तेरी बन्ने मै बन्नी वनूंगी	२२३
आँगन सजी बन्नी हमारी	२२५
बन्नी का डोला सजाओ मेरे बन्ने	२२६
खेलेगी गुडिया बन्नी हमारी	२२७
रखूँगी नैनो के बीच तुम्हे	२२७
खोलउ पटुक गाँठि जोरि बइठउ	२२८
गेडवा उठावत भइया हँथवा न काँपइ	२२९
कवन गहन दिन दुपहर लागइ	२३०
हरियर बँसवा कइ हरियर डडिया	२३१
मचियइ बइठी बेटी कइ माया	२३२
अगिनि के साखी दइ भाँवरि घुमउँ	२३३
कइसे क भावरि फिरउँ मोरे साजन	२३४
काँस पितरिया क इहे नोन कोहवर	२३५
एक सुघरि ग्वालिन दधि बेंचन जात रही	२३६

पंक्ति	पृष्ठ
राजा जनक एक ब्याह रच्यो है	२३७
शिवशकर चले ससुरारी जी	२३९
कचन पात की पतरी सजाई	२३९
षटरस भोजन न खाँउ सखी	२४०
कइसेक डँडिया चढाऊ मोरे वीरन	२४१
आजु नगर भयो सून पिया चली पिय की नगरिया	२४१
खोलउ पटुक, गाँठि मोरि जोरउ	२४२
बारह बरिस कई बेटी हमारी रे	२४२
कँहवाँ क हम कहाँ उडि जाइ रे	२४३
लागे है मास अगहनवाँ मोरी बेटी	२४४
मै पाँव पियादन आइयूँ रे	२४६
खोलो केवडिया, दरस देओ माई	२४७